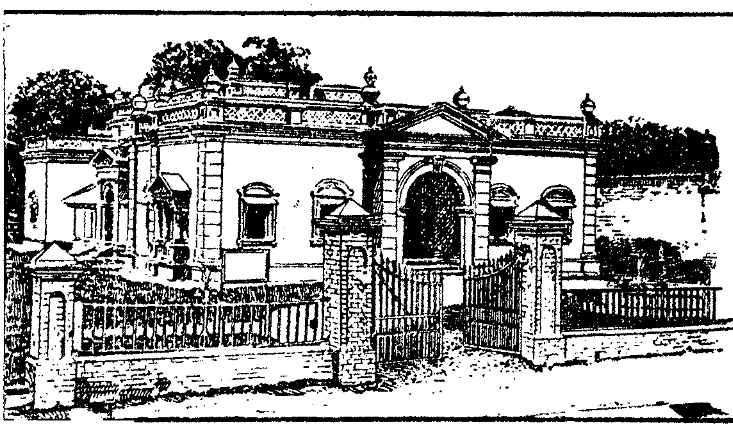
Nagari Pracharini Granthmala Series No. 13

 कवि जोधराज कृत

हम्मीररासो ।

श्यामसुन्दरदास बी० ए० द्वारा

सम्पादित ।



काशी

नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा

प्रकाशित ।

1908.

TARA PRINTING WORKS, BENARES.

भूमिका ।

यह ऐतिहासिक काव्य कवि जोधराज का बनाया हुआ है। निम्बारण के राजा चन्द्रभान की आज्ञा से जोधराज ने इस काव्य को संवत् १७८९ में रचा। इसमे रणथँभौर के बीरशिरोमणि महाराज हम्मीरदेव का चरित्र और बिशेष कर अलाउद्दीन के साथ उनके विग्रह का वर्णन है। भारतवर्ष के इतिहास में हम्मीर का नाम प्रसिद्ध है और उसके चरित्र को पढ़ और सुनकर लोग अबतक मनमुग्ध और उत्साहित होते हैं। कवियों और लेखकों ने भी उसके चरित्र के गान करने में कोई बात उठा नहीं रक्खी है। अबतक कविता में इस बिषय के तीन ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं। एक तो चन्द्रशेषर का हम्मीरहठ है जो कि छपकर प्रकाशित हो चुका है। दूसरा ग्वाल कवि का ग्रन्थ है जो अबतक छपा नहीं, परन्तु जिसकी कविता शैली भी ऐसी उत्तम नहीं है। तीसरा ग्रन्थ यह जोधराज का है। और भी अनेक ग्रन्थ इस विषय के होंगे इसमें कोई सन्देह नहीं है। गद्य में भी अनेक ग्रन्थ लिखे गए हैं परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उनमें ऐतिहासिक खोज का बहुत कुछ अभाव देख पड़ता है। राजपूताने में दो हम्मीर होगए हैं एक उदयपुर के और दूसरे रणथँभौर के। लेखकों ने प्रायः दोनों के चरित्रों को मिलाकर एक करडाला है और इसी भ्रम में पड़कर इतिहास के विरुद्ध बातें लिख डाली हैं। जिन हम्मीर की इतनी प्रसिद्धि है और जिनके गुण-गाने से अब तक लोग उत्साहित होते हैं तथा जिन्होंने अलाउद्दीन से रार ठानी थी वे रणथँभौर के चौहान हम्मीर थे, न कि उदयपुर

के सिसौदिया हम्मीर । अतएव इस काव्य के विषय में कुछ लिखने के पहिले अथवा इसके सम्बन्ध की ऐतिहासिक बातों का उल्लेख करने के पहिले मैं जोधराज कृत इस काव्य में चौहान हम्मीर का जो कुछ चरित्र वर्णन किया गया है उसका वर्णन करदेना उचित समझता हूं। इस सारांश के लिये जो आगे दिया जाता है मैं कुँअर कन्हैया जी का अनुगृहीत हूं।

भारतवर्ष के अन्तिम सम्राट भृगुकुलोत्पन्न महाराज पृथ्वीराज के वंश में चन्द्रभान नाम का एक वीर पुरुष था। यद्यपि वह निम्बराण गांव का एक साधारण जागीरदार था; किन्तु उसके वीरत्व, दातत्व, औदार्य्य, पराक्रम, बुद्धिमत्ता और सर्वप्रियता के कारण लोग उसे रैठ का महाराज कहा करते थे, और सब लोग उसी भांति उसका आदर भी करते थे। उक्त चन्द्रभान के दरवार में आदि गौड़-कुलोत्पन्न अत्रिगोत्रीय ब्राह्मण, बालकृष्ण का पुत्र जोधराज था जो कि विरद लोगों से डिडवरिया राव कहा जाता था।

एक समय चन्द्रभान ने जोधराज से हम्मीररासो के सुनने की इच्छा की और कहा कि इस काव्य में महाराज हम्मीर की वंशावली, उनका अलाउद्दीन से वैर, उनकी वीरता और उनके युद्धकौशल

---

[१] चहुआनों के भृगुवंशी होने का वर्णन आगे इसी पुस्तक में है।

[२] पुस्तक में मूल पाठ "राठ पतिशाह" है जिसका अर्थ "राठ का बादशाह" होता है। इसमें पतिशाह शब्द में तो किसी प्रकार का भ्रम नहीं है, रहा "राठ" सो यह "राष्ट्र" शब्द का अपभ्रंश है। राष्ट्र शब्द का शब्दार्थ राज्य है किन्तु गुजरात का वह प्रान्त जो सिन्ध से मिलता हुआ है पहिले समय में सौराष्ट्र देश कहलाता था—यद्यपि चहुआनों की राजधानी साम्हर थी किन्तु उनका राज्य सिंध और गुजरात तक फैल गया था। इससे ज्ञात होता है कि उक्त "चन्द्रभान" सौराष्ट्र प्रान्त के राजवंश में से कोई होगा।

इत्यादि का यथाक्रम संक्षेप वर्णन होना चाहिए । तब जोधराज ने इस काव्य "हम्मीररासो" की रचना की ।

शृष्टिरचना–प्रथम कल्प के आदि में संसार रूपी उपवन के जीव निर्जीव प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सब पदार्थ वीर्य्य स्वरूप से उस परम प्रभु परमात्मा अनादि जगदीश्वर के स्वरूप में स्थित थे और वह प्रभु योग निद्रा में निमग्न था। एक समय वह अपनी शक्ति का आप ज्ञान करके निद्रा से उठा और उसके इच्छा करते ही माया उत्पन्न हुई । जिस समय शेषशायी भगवान के नाभि कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए वह वाराह कल्प का आदि था ।

मानवशृष्टि–जलज से उत्पन्न हुआ ब्रह्मा बहुत समय पर्य्यन्त इसी विचार में मुग्ध रहा कि मैं क्या करूं। इसी प्रकार जब बहुत समय बीत गया तब उसे आपसे आप अनुभव हुआ कि तप करके शृष्टि उत्पन्न करनी चाहिए और उसने वैसाही किया । पहिले तो उसने अप, तेज, वायु, पृथ्वी आकाशादि पंच महातत्वों की रचना की, तदनन्तर बीज वृक्षादि जड़ वस्तुओं की रचना करके उसने सनक सनन्दन, सनत्कुमारादि ४ पुत्र रचकर मानव जाति की वृद्धि करना चाही; किन्तु जब सनकादि कुमारों ने अखण्ड ब्रह्मचर्य्य धारण कर सांसारिक विषय भोगादि से अरुचि प्रगट की तब ब्रह्मा ने उसी प्रकार से अन्यान्य मुनिवरों को उत्पन्न किया । ब्रह्मा के मन से मरीचि, कानों से पुलस्त्य, नाभि से पुल्ह, हाथों से क्रतब्रह्म, त्वचा से नारद, छाया से कर्दम, पीठ से अर्द्धम, कण्ठ से धर्म्म और ओष्ठ से लोमऋषि उत्पन्न हुए । इन्हीं ऋषियों से मनुष्यों की भिन्न भिन्न जातियों की वृद्धि हुई ।

चन्द्रवंश और सूर्य्यवंश–ब्रह्मा के पुत्र मरीचि के १३ स्त्रियां थी उनमें से एक का नाम कला था । कला के कस्यप और धर्म दो पुत्र हुए । अत्रि ऋषि के तीन पुत्र हुए जिनमें से बड़े का नाम

सोम था और कनिष्ठ का नाम दुर्वासा । उक्त सोम का बुद्ध और बुद्ध का पुरूरवा नाम से पुत्र हुआ, इस पुरूरवा के ६ पुत्र हुए जिनसे चन्द्रवंशियों के ६ कुल प्रख्यात् हैं ।

इसी प्रकार भृगुमुनि से चहुआन क्षत्रियों का वंश चला जिसका वर्णन इस प्रकार से है कि भृगुमुनि की पहिली स्त्री से धाता और विधाता के नाम के उनके दो पुत्र हुए । भृगु की दूसरी स्त्री से दैत्यगुरु वृहस्पति का और च्यमन ऋषि का जन्म हुआ । च्यमन के रिचीक, इनके जमदग्नि और जमदग्नि के परशुराम नामक क्षात्र-वृत्तिधारी पुत्र हुए जिन्होंने क्षात्र धर्म्म से च्युत विषयलोलुप सहस्रों क्षत्री राजाओं को मार कर उनका वंश पर्य्यन्त नाश कर डाला और उनके रुधिर से पितृ देवताओं का तर्पण किया । इस प्रकार परशुराम के पराक्रम से प्रसन्न हुए पितृ देवताओं ने परशुराम को शान्त होकर तप करने की आज्ञा दी ।

आबूराज पर्व्वत पर यज्ञ और चहुआनों की उत्पत्ति

इधर शृष्टि के शासनकर्ता क्षत्रियों के समूल उन्मूल हो जाने से जब परस्पर अन्याय आचरण के कारण प्रजा पीड़ित हो उठी और दैत्य और राक्षसों के उपद्रव से ऋषि लोगों के यज्ञादि कर्मों में भी विघ्न पड़ने लगा तब ऋषिगण संसार की रक्षा और उसके उचित शासन के निमित्त फिर क्षत्रियों के उत्पन्न करने की अभिलाषा से यज्ञ करना विचार कर अर्बुदगिरि अर्थात् आबू के पहाड़ पर गए । वहां पर सब ऋषियों ने शिव की आराधना की । तब शिव ने भी वहां आकर मुनिवरों की प्रार्थना स्वीकार की और वे उक्त पर्व्वत पर अचल रूप से विराजमान हुए; अस्तु तब मुनिवरों ने भी सुन्दर वेदिका रच कर यज्ञ कर्म्म आरम्भ किया । इस यज्ञ में द्वैपायन, वशिष्ट, लोम, दालिभ, जैमिनि, हर्षन, धौम्य, भृगु, घटयोन, कौशिक, वत्सु, मुद्-

गल, उद्दालक, मातंग, पुलह, अत्रि, गौतम, गर्ग, सांडिल्य, भरद्वाज, जावालि, मारकण्डेय, जरत काल, जाजुल्य, पराशर, च्यमन और पिप्पलाद आदि मुनियों का समारोह हुआ था। इसके अतिरिक्त शिव और ब्रह्मा भी स्वयं वहां उपस्थित थे। इस प्रकार समुचित प्रकार से जिस समय यज्ञ हो रहा था और वेदिका से उत्पन्न हुई अग्नि शिखाएँ आकाश को स्पर्श कर रही थीं, उसी समय उस वेदिका में से चालुक्य, प्रमार और परिहार क्षत्री क्रम से निकले। इन्होंने मुनिवरों की आज्ञा पा दैत्यों से युद्ध भी किया; किन्तु उन्हें परास्त करने में वे समर्थ न हो सके। तब ऋषियों ने उक्त यज्ञस्थल को त्याग कर उसी पहाड़ पर नैऋत दिशा में दूसरा अग्निकुंड निर्माण किया। इस बेर के यज्ञ में ब्रह्मा ने ब्रह्मा, भृगुमुनि ने होता, बशिष्ट ने आचार्य्य वत्स ने ऋत्वक और परशुराम ने यजमान का कार्य्य संपादन किया। निदान इस यज्ञ से जो अग्नि के समान तेज वाला पुरुष उत्पन्न हुआ उसका नाम चहुआन जी हुआ; क्योंकि इनके चार बाहु थे और प्रत्येक बाहु खड्ग, धनुष, शूल और चक्र इन चारों आयुधों को धारण किए हुए था। इस पुरुष ने ऋषिवरों के आशीर्वाद और निज कुल देवी आशापूरा के प्रसाद से सम्पूर्ण दैत्यों का वध कर ऋषि और देवताओं को प्रसन्न किया।

कथामुख—इस प्रकार यज्ञकुंड से उत्पन्न चाहुआन जी के वंश में बहुत दिनों पीछे विक्रमी १२ वीं शताब्दि के पूर्व्वार्द्ध के आरम्भ में राव जैतराव चहुआन जन्मे। एक समय जैतराव जंगल में शिकार खेलने गए। वहां उन्होंने एक बलवान बाराह को देखकर उसके पीछे घोड़ा डाल दिया, बहुत दूर निकल जाने पर एक गँभीर बन में बाराह तो अदृष्ट होगया और रावजी सङ्गी साथियों से छूट कर चकित चित्त अकेले उस बन में भटकते फिरने लगे।

ऐसे समय में वहां उन्हें एक ऋषि का आश्रम देख पड़ा तो वहां जाकर वे देखते क्या हैं कि परम रमणीय पर्णकुटी में कुशासन पर बैठे हुए पद्म ऋषि जी ध्यान में मग्न हैं। रावजी ने उनके निकट जाकर साष्टांग प्रणाम किया और उनके दर्शन से अपने को कृतार्थ जानकर वे उनकी स्तुति करने लगे। निदान तब ऋषि ने भी प्रसन्न होकर रावजी को आशीर्वाद दिया, और कुछ दिवस पर्य्यन्त उसी स्थान पर रखकर उन्हें शिवार्चन करने का भी उपदेश दिया। रावजी ने वैसाही करके शिव को प्रसन्न किया। तब ऋषि ने पुनः आज्ञा की कि रावजी तुम यहां एक गढ़ भी निर्माण करो। अस्तु रावजी ने उसी समय अपने मित्र मन्त्री और सुहृदों को बुलाकर उसी समय संवत् १११० वैशाष सुदि अक्षय त्रितिया, शनिवार को पांच घटी सूर्य्योदय में रणथंभगढ़ की नीव डाली और उसीके उपस्थ में एक रमणीक नगर भी बसाया।

ऋषि का तप भंग होना-उस पर्वतावेष्टित प्रच्छन्न एवं दृढ़ दुर्ग की रम्य भूमि को पद्म ऋषि ने रावजी से अपने रहने के लिये मांग लिया और उसीमें रहकर वे तप करने लगे। जब उनके उग्र एवं पवित्र तप की सूचना इन्द्र को मिली तब उस भीरु हृदय इन्द्र ने अपने श्रीभ्रष्ट होने के भय से भयभीत होकर पद्म ऋषि का तप भ्रष्ट करना चाहा और इसलिये उसने इस कर्म के लिये कुकर्मी मकरकेतु को उपयुक्त जानकर उसे आज्ञा दी कि हे मित्र तू अपने सच्चे सहचर वसंत के सहित जाकर रणथंभ गढ़ में तप करते हुए तेजस्वी पद्म ऋषि की श्री नष्ट करदे। इस प्रकार इन्द्र से उत्तेजित किया हुआ कामदेव अपनी सहकारी षड् ऋतुओं सहित रणथंभ गढ़ में ध्यानमग्न पद्म ऋषि के जाग्रत करने की इच्छा से ऋतुओं के उपचार का प्रयोग करने लगा, किन्तु ग्रीष्म का प्रचंड मार्तंड और

मलय समीर, पावस के पपीहा, शरद की स्वच्छ चाँदनी, शिशिर के दुशाला और हेमन्त के पाला को पराजित करनेवाले मसाले भी जब ऋषि की समाधि भंग न कर सके, तब उस कुसुमायुध ने साक्षात् शिव को रसिक बनाने वाले बसंत का प्रयोग किया अर्थात् उस जन शून्य बन में नाना प्रकार के पुष्प प्रस्फुटित हुए और उन पर मधुप गुंजार करते हुए आनन्द से मकरन्द पान करने लगे, जहां तहां नाना वर्ण के पक्षी सावक कलरव करते हुए कल्लोल करने लगे। उसी समय इन्द्र द्वारा प्रेरित अप्सराओं ने आकर नृत्य और गान करते हुए उस शिखर शैली को इन्द्र का अखाड़ा बना दिया, तब उपयुक्त समय जान कर कामदेव ने भी अपने शरों से मुनिवर के शरीर को बेध दिया। इस प्रकार समाधि भंग होने पर जब मुनि ने आंख उठाकर देखा तो देखते क्या हैं कि उस रणथंभ के अभेद्य दुर्ग में शान्ति रस को पराजित कर शृंगार रस ने पूर्णतया अपना अधिकार जमा लिया है और एक चन्द्रमुखी मृगलोचनी, गयन्दगामिनी, नवयोवना सम्मुख खड़ी हुई मुनि की ओर कटाक्ष सहित देख रही है। यह देखकर पद्म ऋषि के शरीर से शान्ति और तप इस प्रकार बिदा होगए जैसे तुषार तोषित वृक्ष सुकोमल पल्लवों को त्याग देते हैं, एवं जिस प्रकार फल के लगतेही वृक्षगण सूखे पुष्प का अनादर कर देते हैं। इस प्रकार कामातुर होकर पद्म ऋषि समाधि छोड़ सुन्दरी को आलिंगन करने को उत्सुक हो उठे। उधर उस रमणी ने भी ऋषि के मनोगत भाव को जान कर उनका हाथ पकड़ लिया और तब वे दोनों आनन्द से काम क्रीड़ा करने लगे।

पद्मऋषि का शोक और शरीर त्याग—इस प्रकार जब अधिक समय व्यतीत होगया तब सुन्दरी तो अन्तर्ध्यान होकर स्वर्ग को चली गई, और पद्म ऋषि की भी मोहनिद्रा खुली। तब वे मन ही मन

विचार और पश्चाताप करके विलाप करते हुए आप ही आप कहने लगे, हाय ! मैं कैसा दुर्बुद्धि हूं कि मैंने क्षणिक सुख के लिये अपना सर्वनाश किया और फिर भी जिसके लिये सर्वस्व का त्याग किया वह भी पास नहीं। हा ! यह मैंने अब जाना कि पाप का परिणाम केवल संताप होता है और संतप्त हृदय मनुष्य जो कुछ कर डाले सब थोड़ा है। हाय मैं तप से भी गया, भोग से भी गया, अब मैं इस शरीर को रख कर क्या करूं ? इस प्रकार शोकातुर होकर मुनि ने एक वेदिका रच कर उसमें अपने शरीर के पांच खंड करके होम कर दिए। जिस समय पद्म ऋषि ने शरीर त्याग किया उस दिन माघ शुक्ल १२ सोमवार आद्रा नक्षत्र था । पद्म ऋषि के मस्तक से अलाउद्दीन बादशाह, वक्षस्थल से राव हम्मीर, भुजाओं से महिमाशाह और मीर गभरू, चरणों से उर्वसी अर्थात् अलाउद्दीन की उस बेगम का अवतार हुआ जो कि इस आख्यान की नायिका है ।

हम्मीर का जन्म—पद्म ऋषि के उपरोक्त रीति से शरीर त्यागने के पश्चात् अर्थात् संवत् ११४१, शाका १००६ दक्षणायन शरद ऋतु कार्तिक शुक्ला १२ रविवार को उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में उक्त रणथंभ गढ़ के चाहुआन राव जैतराव जी के हम्मीर नाम का एक पुत्र जन्मा। पुत्र का प्रफुल्लित मुख देखकर जैतराव के आनन्द का पार न रहा। उन्होंने ज्योतिषियों को बुलाकर लग्न कुंडली बनवाई । सहस्त्रों ब्राह्मणों भिक्षुकों और वंदी जनों को यथायोग्य सम्मान सहित अन्नदान गोदान हेमदान गजदान देकर सबको संतुष्ट किया। जिस समय रणथंभ गढ़ में हम्मीर का जन्म हुआ उसी समय गजनी में शहाबुद्दीन के पुत्र अलाउद्दीन का तथा मीणा के घर महिमा मंगोल दोनों भाइयों का और गभरु के घर उक्त स्त्री का अवतार हुआ ।

हम्मीर और अलाउद्दीनशाह का बैर—एक समय वसन्त ऋतु के आरम्भ में अलाउद्दीन ने सहस्रों सैनिक और अमीर उमराओं तथा बेगमों को साथ लेकर शिकार के लिये यात्रा का। निदान उसने एक परम रमणीक बन प्रान्त में शिविर लगवा दिए और वह उसी बन में इतस्ततः आखेट करके जंगली जन्तुओं के प्राण संहार करने लगा। इसी प्रकार जब वसन्त का अंत होकर ग्रीष्म के आतप से भूमि उत्तापित हो रही थी, अलाउद्दीन सब सर्दारों सहित शिकार खेलने चला गया। इधर बेगमें भी अपनी सखी सहेली और अगनित खोजाओं को लेकर एक कमल बन सम्पन्न निर्मल सरोवर पर जाकर जलक्रीड़ा करने लगीं। दैव योग से उसी समय सहसा वायु का बेग बढ़ते बढ़ते इतना प्रचंड होगया कि बड़े बड़े मेघस्पर्शी वृक्ष टूट टूट कर गिरने लगे, धूलि के आकाश में आच्छादित होजाने के कारण घोर अन्धकार छा गया। इस आकस्मिक घटना से भयभीत होकर सब लोग तीन तेरह होकर अपने अपने प्राणों की रक्षा करने के लिये जहां तहां भागने लगे, जलक्रीड़ा करती हुई बेगमों में से "रूपविचित्रा" नामक एक बेगम जो कि स्वरूप और गुण में सब बेगमों से श्रेष्ठ थी, भटक कर एक ऐसे निर्जन प्रान्त में जा पहुंची जहां हिंसक जन्तुओं के भीषण नाद के सिवाय अन्य शब्द ही न सुन पड़ता था। जिस समय रूपविचित्रा भय एवं शीत के कारण थर थर कांपती हुई प्राण रक्षा के लिये ईश्वर का स्मरण कर रही थी उसी समय महिमा मीर वहां आपहुंचा। जब उसे पूछने पर ज्ञात हुआ कि उक्त स्त्री बादशाह की बेगम है, तब उसने उसे घोड़े पर बैठाल कर शिविर में लाने का आग्रह किया। इस पर रूपविचित्रा ने मीर महिमाशाह को धन्यवाद देकर कहा कि इस समय मेरा शरीर शीत से अधिक व्याकुल हो रहा है,

इसलिये तूं आलिंगन से मुझे सन्तुष्ट कर। इस पर महिमाशाह ने उत्तर दिया कि एक तो मैं किसी भी पराई स्त्री को अपनी बहिनवत मानता हूं तिस पर आप मेरे स्वामी की स्त्री हैं इसलिये आप मेरी माता समान हैं अतएव मैं इस अकर्तव्य एवं पाप कर्म करने को कदापि सहमत नहीं हूं। तब रूपविचित्रा ने पुनः उत्तर दिया कि क्या आप यह नहीं जानते कि अपने मुख से मांगती हुई स्त्री को रति दान न देना भी तो एक ऐसा पाप है कि जिसका कोई प्रायश्चित है ही नहीं और हे वीर युवक, तेरे रूप और गुणों की प्रशंसा पर मोहित हुआ मेरा मन तेरे लिये बहुत दिनों से व्याकुल है भाग्य वश आज यह संयोग प्राप्त हुआ है। बेगम की ऐसी बातें सुनकर महिमाशाह का भी मन डोल उठा और तब उसने घोड़े को एक समीपवर्त्ती वृक्ष से बाँध दिया, हथियार खोलकर पास रख लिए और वहीं उस स्त्री की मनोकामना पूर्ण करने लगा। उसी समय एक गर्जता हुआ विकराल सिंह साम्हने आता देख पड़ा। उसे देखकर रूपविचित्रा थर थर कांपने लगी, किन्तु महिमाशाह ने उसे धैर्य देकर कहा कि भय मत करो कोई हानि नहीं, और कमान को उठा कर एकही बाण से सिंह को मारडाला।

उपरोक्त प्राकृतिक उपद्रव के शान्त होतेही सहस्रों मनुष्य बेगम की खोज में इधर उधर फिरने लगे। उनमें से कोई कोई तो बेगम के पास तक भी आ पहुंचे और उसे शाही शिविर में लिवा ले गए। रूप विचित्रा को पाकर अलाउद्दीन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। जब ग्रीष्म का अन्त होगया और पावस की घनघोर घटाएँ घिर घिर कर आने लगीं तब अलाउद्दीन ने लश्कर सहित दिल्ली को कूच कर दिया।

दिल्ली के राजमहल में एक दिन आधी रात को जिस समय अलाउद्दीन रूपविचित्रा के पास बैठा था, उसी समय एक चूहा

आ निकला। उसे देखते ही बादशाह का काम ज्वर जीर्ण होगया, किन्तु उसने किसी प्रकार सम्हल कर उस चूहे को लक्ष करके एक ऐसा बाण मारा कि वह वहीं मर गया। चूहे को मारकर अलाउद्दीन की प्रसन्नता का अन्त न रहा, इसलिये उसने रूपविचित्रा से कहा कि मैं जानता हूं कि स्त्रियां स्वभाव से ही कायर होती हैं, इसीलिये मैंने यह पुरुषार्थ प्रगट किया है। यह सुनकर रूपविचित्रा ने मुस्करा कर कहा कि पुरुषार्थी मनुष्य वे होते हैं कि जो इसी अवस्था में सिंह को सहज ही मारकर शेखी की बात नहीं करते। बेगम की ऐसी बातें सुनकर अलाउद्दीन आश्चर्य्य और क्रोध के समुद्र में गोते खाने लगा, किन्तु उसने अपने को सम्हाल कर कहा कि जो तूं ऐसा पुरुष मुझे बतला दे तो मैं उससे बहुतही प्रसन्नता पूर्व्वक मिलूं अथवा उसने मेरा कैसाही अपराध क्यों न किया हो मैं सर्वथा उसे क्षमा करूंगा। तब बेगम ने अपने और मीर महिमाशाह प्रति भूत वृत्तान्त को कह सुनाया और कहा कि उस वीर पुरुष के ये चिन्ह हैं कि न तो वह उकडूं बैठकर भोजन करता है, न शरणागत को त्यागता है, और न बिना किसी विशेष कारण के झूठ बोलता है। यह सुनतेही बादशाह का क्रोध इस प्रकार बढ़ उठा जैसे सचक्कन पदार्थ की आहुति से अग्नि का तेज बढ़ उठता है। अलाउद्दीन ने उसी समय महिमाशाह को बुलाए जाने की आज्ञा दी। इधर रूपविचित्रा भी अपनी मूर्खता पर पछताने लगी। अन्त में उसने साहसपूर्व्वक बादशाह से कहा कि यदि आप उस वीर पुरुष को कुछ दण्ड देना चाहते हों तो प्रथम मुझेही मरवा डालिए, क्योंकि इसमें वास्तव में मेरा ही दोष है, न कि उसका। जहांपनाह क्या यह अन्याय न होगा कि एक निरपराधी पुरुष दण्ड पावे और अपराधी को आप गले से लगावें? बेगम की ऐसी बातें सुनकर बाद-

शाह ने महिमाशाह के आने पर उससे कहा कि " रे मूढ़ कुमार्ग-गामी अधम, अब मैं तेरा मुख नहीं देखना चाहता, बस अब तुझे यदि अपने प्राण प्यारे हैं तो इसी समय मेरे राज्य से चला जा।"

मीरमहिमा और हम्मीर राव—क्रुद्ध अलाउद्दीन से तिरस्कृत होकर महिमाशाह ने घर आकर अपने सहोदर मीर गभरू से सारा वृत्तान्त कह सुनाया और उसी क्षण परिवार सहित वह दिल्ली से चल दिया। महिमाशाह जिस किसी राजा राव के पास जाता वह उसे शाह अलाउद्दीन का द्वेषी समझ कर तुरंत ही अपने यहां से बिदा कर देता। इसी प्रकार फिरते फिरते जब वह राव हम्मीर की ड्योढ़ी पर पहुंचा और उसने अपने आने की इत्तला कराई तो राव जी ने उसे बड़े ही सम्मान पूर्वक डेरा दिलवाया और दूसरे दिन अपने दबार में बुलाया। दरबार में पहुंच कर महिमाशाह ने ५ घोड़े, १ हाथी, दो मुल्तानी कमान, एक तलवार, दो वाण, दो बहुमूल्य मोती और बहुत से ऊनी वस्त्र राव जी की नज़र किए, जिनको राव जी ने सादर स्वीकार कर लिया। उसी समय मीर महिमाशाह ने अपनी बीती भी राव जी से निवेदन करके सविनय कहा "कि मैं अलाउद्दीन के विरोधियों में से हूं यदि आपमें मेरी रक्षा करने की शक्ति हो तो शरण दीजिए अथवा मुझे भाग्य के भरोसे पर छोड़ दीजिए।" मीर के ऐसे बचन सुनकर हम्मीर ने कहा कि हे मीर मैं तुझे अभयदान देकर पण करता हूं कि इस मेरे तनपिंजर में प्राण पखेरू के रहते एक क्या सहस्रों बादशाह तेरा बाल बंका नहीं कर सकते—यह रणथंभ का अभेद्य दुर्ग, ये अपने राजपूत बीर अथवा मैं स्वयं अपने को युद्धाग्नि में आहुति देने को प्रस्तुत हूं परन्तु तुझे न जाने दूंगा। इस प्रकार कह कर राव हम्मीर ने उसी समय मीर को पांच लाख की जागीर का पट्टा करदिया और तब से मीर आनन्दपूर्वक रण-थंभौर के अभेद्य दुर्ग में रहने लगा।

इधर बादशाह के गुप्त चरों ने उसके सम्मुख यह समाचार जा सुनाया जिसके सुनते ही अलाउद्दीन पूंछ कुचले हुए काले सर्प की तरह क्रोधित हो उठा; किन्तु वजीर बहराम खां ने आगत उपद्रव के टालने अथवा मीर महिमा के पक्षपात की इच्छा से दूत को डांट कर कहा कि जिस मीर को सात समुद्र पार भी ठिकाना देने वाला कोई नहीं है उसे हम्मीर क्या रक्खेगा। इस पर दूतने पुनः कहा कि यदि मेरी बातों में से एक भी असत्य हो तो मैं उचित दण्ड पाने के लिये प्रस्तुत हूं। दूत की ऐसी दृढ़ता देखकर अलाउद्दीन ने उसी समय आज्ञा दी कि हम्मीर को एक पत्र इस आशय का लिखा जाय कि वह मेरे अपराधी को स्थान न देवे क्योंकि अब तक वह मेरा मित्र है, न कि शत्रु। यदि वह अपने हठ से न हटे तो उसे उचित है कि वह सम्हल जाय मैं क्षण मात्र में उसके समस्त दर्प और हठ को धूल में मिला दूंगा। अलाउद्दीन की आज्ञा पाते ही एक दूत को बहुत कुछ समझा बुझा कर रणथंभ की तरफ़ भेजा गया।

दूत ने रणथंभ जाकर बादशाह का पत्र राव हम्मीर जी को दिया और कहा कि आप बादशाह अलाउद्दीन के बल पुरुषार्थ और पराक्रम एवं अपने भविष्य के विषय में भी खूब सोच विचार कर उत्तर दीजिए। निदान इस पत्र का उत्तर राव जी ने इस प्रकार से लिखा कि मैं यह भली भांति जानता हूं कि आप दिल्ली के बादशाह हैं; परन्तु मैं जो पण कर चुका हूं, उसे अपने जीवन पर्यन्त छोड़ने का नहीं। इसलिये उचित यही है कि आप अब मुझ से महिमाशाह के विषय में बात भी न करें, अस्तु और जो कुछ आपसे बन पड़े उसके करने में विलंब भी न कीजिए। इस पत्र को पाकर बादशाह का क्रोध और भी बढ़ उठा परन्तु राज्य मंत्रियों के समझाने बुझाने पर उसने एक बार फिर भी राव हम्मीर के पास दूत भेज कर उसके मन की थाह

ली । परन्तु उस वीर पुरुष ने बड़े धैर्य्य और साहस के साथ फिर भी वही उत्तर दिया। राव हम्मीर जी के हठ और साहस के साम्हने बादशाह की बुद्धि भी चक्कर में पड़ गई, उसे भी अपने आगे पीछे का सोच पड़ गया । उसने विचार किया कि जब राव हम्मीर में इतना साहस है तब उसका कुछ कारण भी होगा, यदि न भी हो तो प्राण की परवाह न करने वाले के साम्हने बिरले ही माई के लाल खड़े हो सकते हैं। सिंह हाथी से बहुत ही छोटा है किन्तु वह अपने साहस और पुरुषार्थ ही से उसे मार डालता है । इसी प्रकार सोच विचार करते हुए बादशाह ने अपने सब दर्बारियों को बुलाकर हम्मीर के हठ और अपने कर्तव्य की सूचना दी। तब उसके सब सर्दारों ने तो हुजूर ही की 'हां' में 'हां' मिला दी, सिर्फ एक वृद्ध पुरुष ने कहा कि उस चहुआन के फेर में न पड़िए, रणथंभ पर चढ़ाई करना सहज नहीं है। परन्तु वृद्ध की इस बात पर ध्यान भी न दिया गया। अलाउ-द्दीन ने उसी वक्त आज्ञा दी कि यथासंभव शीघ्र ही फौज तय्यार की जाय। बादशाह की आज्ञा पाते ही जहां तहां पत्र भेज कर सोर-ठ, गिरनार और पहाड़ी देशों के अनेक राजपूत सर्दार भी बुलाए गए । तब तक इधर शाही वैतनिक फौज भी तय्यार हो गई और फौज के लिये आवश्यक रसद वरदास भी इकट्ठी हो गई

निदान इस प्रकार अरबी, काबुली, रूमी इत्यादि मुसल्मान वीरों की सत्ताईस लाख जंगी फौज और अट्ठारह लाख परिकर कुल ४९ लाख मनुष्य ५००० हाथी और पांच लाख घोड़ों की भीड़ भाड लेकर अलाउद्दीन ने रणथंभ गढ़ पर चढ़ाई करने को चैत्र मास की द्वितीया संवत् ११३८ को कूच किया। जिस समय यह शाही दल बल राव हम्मीर जी की सरहद में पहुंचा उस समय वहां की प्रजा में कोलाहल मच उठा। अलाउद्दीन के आज्ञानुसार सब सैनिक

सिपाही प्रजा को नाना प्रकार के कष्ट देने लगे । इसलिये सब लोग भाग भाग कर रणथंभ के गढ़ में शरण के लिये पुकारने लगे । इसी प्रकार निरपराधी प्रजा का खून करते हुए जब यह दल बल "नल हारणों गढ़" के किले पर पहुंचा तब वहां के किलेदार ने तीन दिन पर्य्यन्त शाही फौज का मुकाबिला किया । किन्तु अन्त में किले पर बादशाही दखल हो गया । इसलिये यहां का किलेदार भी रणथंभ को दौड़ गया और उसने बादशाह के अगनित दल बल का समाचार विधिवत राव हम्मीर जी के सम्मुख निवेदन किया । इस समाचार के पाते ही हम्मीर की वंक भृकुटी और भी टेढ़ी हो गई, कमल समान नेत्र अग्नि शिखा से लाल हो उठे बाहु और ओष्ठ फड़कने लगे । रावजी का ऐसा आकार देखकर अभयसिंह प्रमार, भूरसिंह राठौर, हरिसिंह बघेला, रणदूला चहुआन और अजमतसिंह इन पांच सर्दारों ने २०००० फौज लेकर शाही फौज को रास्ते में रोक लिया और वे ऐसे पराक्रम से लड़े कि बादशाही सेना के पैर उखड़ गए और बड़े बड़े अमीर उमरा जहां तहां भागने लगे । उस समय अलाउद्दीन के वज़ीर माहिरजखां ने कहा कि—"मैंने पाहिलेही अर्ज़ किया था कि एक तो राजपूत अपनी बात रखने के लिये जान देने की कभी परवाह नहीं करते फिर भी उस पहाड़ी किले पर फ़तह पाना बहुतही मुश-किल काम है" किन्तु बादशाह ने फिर भी उसकी बात योंही टाल दी और आगे कूच करने की आज्ञा दी । इस युद्ध में अलाउद्दीन के ३०००० सिपाही डेढ़ सौ घोड़े और कई एक अमीर उमरा काम आए किन्तु राव हम्मीर के १२५ सिपाही और १० सर्दार खेत रहे और अभयसिंह प्रमार के सीस में बहुत गहरे गहरे २१ घाव लगे ।

अलाउद्दीन ने रणथंभ गढ़ के पास पहुंच कर चारों तरफ़ से किले को घेर कर फौज का पड़ाव डाल दिया और फिर से एक दूत

के हाथ पत्र भेजकर राव हम्मीर जी से कहला भेजा कि अब भी मेरे अपराधी मीर महिमाशाह को मेरे पास हाजिर करके मुझ से मिलो तो मैं तुम्हारे अपराध को क्षमा कर दूंगा । इस वार जो रावजी ने उत्तर दिया वह इस प्रकार था—"मैं जानता हूं, तूं बादशाह है, परन्तु मैं भी उस चहुआन कुल में से हूं जिसने सदैव मुसल्मानों के दाँत खट्टे किए हैं । ख्वाजामीरां पीर का एक लाख अस्सीहजार दल बल अजमेर में चहुआनों ने ही खपाया था । पुनः वीसलदेवजी ने सौनगरा का शाका किया, उसी वंस में पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को सात बार पकड़ कर छोड़ दिया । बस मैं उसी चाहुआन कुल में हूं और तू भी उसी पीर मर्द औलिया खान्दान का मुसल्मान है । देख अब किसकी टेक रहती है । हे यवन राज, तूं निश्चय रख मेरी टेक यह है कि सूर्य्य चाहे पूर्व्व से पश्चिम में उगने लगे, समुद्र मर्य्यादा छोड़दे शेष पृथ्वी को त्याग दे, अग्नि शीतल हो जाय, परन्तु राव हम्मीर का अटल पण नहीं टल सकता । देख अलाउद्दीन संसार में जो जन्म लेता है वह एक दिन मरता अवश्य है । अथवा जिसकी उत्पत्ति है उसका नाश होता ही है । फिर इस क्षणभंगुर शरीर के लिये शरणागत को त्याग कर अपने कुल में मैं कलंक नहीं लगाना चाहता । तुझे कितना दर्प है जो अपने साम्हने दूसरे को बीर नहीं गिनता, इस पृथ्वी पर रावण मेघनाद सरीखे अभिमानी और अतुल बल शाली वीर पानी के बबूले की तरह बिला गए । यवनराज ! मनुष्य नहीं रहता, परन्तु उसके कर्तव्य की कहानियाँ अवश्य रहती हैं । अतएव अब तुझे सूझे सो कर मैं भी सब तरह से तय्यार हूं ।"

अलाउद्दीन के दूत को इस प्रकार उत्तर देकर राव हम्मीरजी शिवालय में जाकर शिवार्चन करने लगे । धूप, दीप, नैवेद्य संयुक्त विधिवत् पूजा करके जिस समय रावजी ध्यानमग्न थे उसी

समय शिवालय में आकाशवाणी हुई कि हे हम्मीर तुमसे और अलाउद्दीन से १२ वर्ष पर्य्यन्त संग्राम होगा तत्पश्चात् आषाढ़ सुदि ११ को तुम्हारा शाका पूर्ण होगा जिससे संसार में चिर काल तक तुम्हारा यश बना रहेगा । शिव जी से इस प्रकार वर्दान पाकर राव जी ने प्रसन्न होकर अपने समस्त सूर बीर सरदारों को युद्ध के लिये सन्नद्ध होने की आज्ञा दी । उसी समय हम्मीर के चाचा राव रणधीर ने, जो कि "छाड़गढ़" के किले के स्वामी थे हम्मीर से कहा कि श्रीमान् क्षमा करें इस समय मेरे हाथ देखें ।

इधर हम्मीर जी का पत्र पाते ही अलाउद्दीन लाल पीला सा हो उठा और उसी समय रणथंभ के किले पर चारों ओर से गोले और बाणों की वर्षा करने की उसने आज्ञा दी । बादशाह की आज्ञा पाते ही मुसल्मान सेना नायक महम्मद अली रणथंभ के अजेय दुर्ग को पाने के लिये प्रयत्न करने लगा । इधर से राव रणधीर ने भी किले की बुर्जों पर से अग्निवर्षा करने की आज्ञा दी और आप कुछ सैनिकों सहित मुसल्मानी सेना में वह इस प्रकार से धँस पड़ा जैसे भेड़ों के समूह में भेड़िया धँसता है । निदान पहिली वरणी राव रणधीर और मुहम्मद अली की हुई जिसे राव जी ने एकही हाथ में दो कर दिया । यह देख कर उसका पीठि नायक अजमत खां राव जी के सम्मुख आया । किन्तु राव रणधीर ने उसे भी मार गिराया । अजमत खां के गिरते ही मुसल्मानी सेना के पैर उखड़ पड़े । इस युद्ध में मुसल्मान सेना के अस्सी हजार अस्त्रधारी खेत रहे और राव रणधीर के केवल एक हजार ज्वान मारे गए । महम्मद मीर के मारे जाने पर जब मुसल्मानी फौज भागने लगी तब अलाउद्दीन ने वादित खां को सेना नायक बनाया । वादित खां ने बड़े धैर्य्य और दृढ़ता से उत्तेजना जनक वाक्य कह कर बिखरी हुई फौज को बटोर कर राजपूत वीर

राव रणधीर का साम्हना किया किन्तु अन्त में उसे भी भूत सेना नायकों के भाग्य में भाग लेना पड़ा।

वादित खां के मरते ही सारी सेना में कुहराम पड़गया। अला-उद्दीन स्वयं निस्तेज होकर पीर पैगंबरों को पुकारने लगा। तब वजीर महम्मद खां ने कहा कि इस प्रकार सम्मुख युद्ध करके जय पाना तो कठिन है इसलिये कुछ सेना यहां छोड़ कर छाड़गढ़ के क़िले पर चढ़ाई की जाय। उस क़िले में राव रणधीर के परिवार के लोग रहते हैं। निदान अपने परिवार पर भीर परी देखकर यदि राव रणधीर शरण में आजाय तो फिर अपनी जय होने में कोई संदेह नहीं है। निदान वज़ीर की बात मानकर बादशाह ने वैसा ही किया; किन्तु पांच वर्ष व्यतीत हो गया और छाड़गढ़ का किला हाथ न आया। वरन इसी में एक नवीन बात यह निकल पड़ी कि दिन भर तो हम्मीर जी युद्ध करते और रात को रणधीर का धावा पड़ता जिससे शाही सेना अत्यंत व्याकुल हो उठी। बड़े बड़े अमीर उमरा मिट्टी मोल मारे जाने लगे। अधिक क्या आरम्भ से अंत तक जितनी लड़ाइयां हुईं उन सब में राजपूत वीरों की ही जय हुई। निदान जब अलाउद्दीन की तरफ़ के अब्दुलकरीम, करम खां, यूसफ़ जंग इत्यादि बड़े बड़े बुद्धिमान योद्धा सर्दार मारे गए और राव रणधीर जी तथा हम्मीर जी का बाल भी न बांका हुआ। तब अलाउद्दीन घबड़ा उठा और फिर से अमीर उम-रावों की सभा करके अपने उद्धार का उचित उपाय विचारने लगा।

इसी समय राव रणधीर जी ने हम्मीर जी से कहा कि यदि चित्तौर से दोनों कुमार बुला लिए जांय तो अच्छा हो। इस पर रावजी ने भी "अच्छा" कह दिया। तब राव रणधीर ने रणथंभ का सब समाचार लिख कर चित्तौर भेज दिया। उक्त समाचार के पाते ही दोनों राजकुमार तीस हज़ार राठौर, आठ हज़ार चहुआन, और पांच हज़ार

प्रमार राजपूतों की सेना लेकर रणथंभ को चले आए। दोनों राजकुमारों को देख कर राव हम्मीर जी ने प्रसन्नता पूर्वक उन्हें गले लगा लिया और मीर महिमा को शरण देने के कारण अलाउद्दीन से रार बढ़ जाने का हाल भी विधिवत वर्णन कर सुनाया, जिसे सुनते ही दोनों राजकुमारों का मुख प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठा। उन्होंने वीर रस में उन्मत्त होकर मदान्ध मृगराज की भांति झूमते हुए रावजी से कहा कि अब तक आपने परिश्रम किया अब तनिक हमारा भी पराक्रम देख लीजिए। यों कह कर दोनों राजकुमार रनिवास में गए। राव हम्मीर की रानी आसुमती के चरण छू कर वे बोले कि हे माता आप कृपा कर हमारे मस्तक पर मौर बांध कर हमें युद्ध करने का आशीर्वाद दीजिए। दोनों राजकुमारों के ऐसे बचन सुन कर आसुमती ने भी सुतस्नेह से सने हुए वाक्यों से संबोधन करते हुए उन्हें कलेजे से लगा लिया और अपने हाथों उनके शीश पर मौर बांधा और केशरी बागा पहिना कर उन्हें युद्ध में जाने को विदा किया।

जिस समय आसुमती कुमारों का शृङ्गार कर रही थी उस समय "छाड़गढ़" के किले में इस प्रकार घन घोर रव हो रहा था कि जिससे दिशाओं के दिगपाल चौकन्ने हो रहे थे। यह खरभर देख कर अलाउद्दीन ने अपने मंत्री से पूछा कि आज "छाड़गढ़" में यह उत्सव किस लिये हो रहा है। तब एक अमीर ने उत्तर दिया कि राव हम्मीर जी के छोटे भाई के पुत्रों ने स्वयं युद्ध के लिये सिर पर मौर बाँधा है। उसीके उत्सव में यह गान वाद्य हो रहा है। यह सुन कर बादशाह ने जमाल खां को बुला कर कहा कि तुम ने ही पृथ्वीराज को कैद किया था आज भी अगर तुम दोनों राजकुमारों को पकड़ लोगे तो मेरी अत्यन्त प्रसन्नता के पात्र होगे। इस प्रकार समझा बुझा कर उस दिन के युद्ध के लिये अलाउद्दीन ने मीर जमाल

को सेना नायक बनाया ।

इधर से दोनों राजकुमार केसरिया बाना पहिने, सीस पर मुकट हाथों में रणकङ्कण बांधे अपने अपने तेज तुरगों पर सवार सोलह हज़ार राजपूतों की सेना के बीच में ऐसे भले मालूम देते थे मानों रण बांकुरे देवताओं के दल में इन्द्र और कुबेर सुशोभित हो रहे हों। दोनों बीर सेना सहित उज्वल नेजे और खड्ग चमकाते हुए मुसल्मान सेना में इस प्रकार धँस पड़े जैसे काले काले बादलों में बिजली विलीन हो जाती है। इधर अलाउद्दीन से उत्तेजित किए हुए यवन दल ने उन राजकुमारों को घेर लिया और जमाल खां बड़े बेग से उन दोनो राजकुमारों पर टूटा । वे बीर राजकुमार भी बड़ी धीरता से उस का साम्हना करने लगे । यह देख कर राव हम्मीर जी ने बीरशंखोदर को कुमारों की सहायता के लिये भेजा । इस पर इधर से अरबी फ़ौज का धावा हुआ । राजपूत और मुसल्मान सेना में इस प्रकार बिकट मार होने लगी कि किसी को अपना बिगाना न सूझता था । इसी समय जमाल खां ने अपना हाथी राजकुमारों के साम्हने बढ़ाया । तब कुमार ने तलवार का ऐसा हाथ मारा कि एकही हाथ में लोहे का टोप कटते हुए मीर जमाल की खोपड़ी के दो टूक हो गए । जमाल खां को गिरता देख कर बालन्न खां ने धावा किया। इधर से वीर शंखोदर ने बढ़ कर उसका मुख रोका । निदान सायंकाल तक बराबर लोहा झरता रहा। दोनों कुमार अपनी समस्त सेना के सहित स्वर्गगामी हुए। इस युद्ध में मुसल्मानी फौज के ७६००० योधा खेत रहे ।

इस प्रकार दोनों राजकुमारों के मारे जाने पर राव रणधीर ने क्रोधित होकर क़िले पर से आग बरसानी आरंभ कर दी । तब बादशाह ने कहला भेजा कि आप क्यों जान बूझ कर जान देने पर

उतारू हुए हैं, आपके लड़कर मर जाने से इस झगड़े का अन्त न होगा यदि आप राव हम्मीर जी को समझा कर मीर महिमा को मेरे पास भेजवा दें तो आप वा राव हम्मीर जी दोनों सुख से राज्य करें और हम दिल्ली चले जांय। किन्तु बादशाह के पत्र का राव रणधीर ने केवल यही उत्तर दिया कि क्षत्रियों का यह धर्म्म नहीं है कि विषय सुख भोग की लालसा अथवा मृत्यु के डर से डर कर वे अपने धारण किए हुए धर्म्म को त्याग दें। राव रणधीर की ओर से इस प्रकार कोरा उत्तर पाकर अलाउद्दीन ने अपनी फ़ौज़ को भी छाड़ के क़िले पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। अलाउद्दीन की आज्ञा पाते ही मुसल्मानी फ़ौज ने टिड्डी दल की तरह उमड़ कर क़िले को चारों ओर से घेर लिया और वे क़िले पर से चलते हुए गोले, गोली, बाण, बर्छों की विषम बौछार की कुछ भी परवाह न करके क़िले पर चढ़ दौड़े। मुसल्मानी सेना जब क़िले में घस पड़ी तब राजपूत लोग सर्वथा प्राण का मोह छोड़ कर तलवार से काम लेने लगे। दोनों में अग्न्यास्त्रों का संचालन विल्कुल बन्द होगया। केवल तवल, तलवार, बरछी, कटार, सेल्ह से काम लिया जाने लगा। इसी रेलपेल में बादशाह के निज पेश्कार (बगली) ने राव हम्मीर की तलवार के साम्हने आने की हिम्मत की किन्तु वीर रणधीर के एकही बार में उसके जीवन का वारा न्यारा होगया, इसलिये उसके सहकारी रूमी सर्दार ने अपने ५० बलवान योद्धाओं सहित रणधीर जी को घेर लिया। राव रणधीर ने इन पचासों सिपाहियों को मार कर रूमी सर्दार को भी दो टूक कर दिया। इसी प्रकार मार काट होते हुए राव रणधीर सहित जितने राजपूत वीर उस क़िले में थे सबके सब मारे गए और छाड़गढ़ का क़िला बादशाह के हाथ आया। इस युद्ध में शाही फ़ौज के दो बडे बड़े सर्दार और एक लाख रूमी सैनिक खेत रहे और राव

रणधीर के साथी २०००० राजपूत काम आए । यह छाड़गढ़ का अन्तिम युद्ध चैत्र सुदि ९ शनिवार को हुआ। बीस हज़ार केवल राजपूत मारे गए और एक हज़ार राजपुतानी स्त्रियां स्वयं जल कर भस्म होगईं ।

छाड़गढ़ का क़िला फ़तह करके अलाउद्दीन ने अपने लश्कर की बाग रणथंभ गढ़ की ओर मोड़ी और कुंवार सुदि ९ शनिवार को क़िले के चारों तरफ़ घेरा डाल कर दूत के हाथ राव हम्मीर जी के पास कहला भेजा कि अब भी यदि महिमाशाह को मेरे पास भेज दो तो मैं बिना किसी रोक टोक किए दिल्ली चला जाऊं । दूत की ऐसी बातें सुनकर राव हम्मीर जी ने कहा-रे मूर्ख दूत, मैं तुझ से क्या कहूं तेरे स्वामी अलाउद्दीन का मुझ से बार बार ऐसा कहला भेजना उचित नहीं है । विग्रह का निरधारण किया जाता है तो केवल इसलिये कि जिसमें बन्धु बन्धवों का रक्त पात न हो किन्तु अब मुझे इस बात का सोच बाक़ी न रहा । राव रणधीर सा चाचा और कुल दीपक दोनों कुमार भी जब इस युद्धाग्नि में अपने प्राण होम कर चुके तब मुझे अब सोच ही किस बात का है । जा तूं अपने स्वामी से कह दे कि अब कभी मेरे पास संदेसा न भेजे । दूत ने वहां से आकर राव जी के बचन ज्यों के त्यों बादशाह से कह सुनाए । यह सुनकर अलाउद्दीन ने उसी समय गोलंदाजों को बुलाकर हुक्म दिया कि यहां से ऐसा गोला मारो कि किले के बुर्जों पर रक्खी हुई तोपें ठस होकर शान्त हो जांय। गोलंदाजों ने बादशाह की आज्ञा पालन करने के लिये यथासाध्य चेष्टा की किन्तु वह निष्फल हुई । परन्तु क़िले पर से उतरे हुए गोलों की मार से लश्कर की बहुत सी तोपें ठस होकर चरख पर से गिर पड़ीं। यह देख कर बादशाह की बुद्धि "किं कर्तव्य विमूढ़" हो गई । वह नाना प्रकार के तर्क वितर्क करता हुआ अपने कर्तव्य

पर पछताने लगा। यह देख कर उसके वज़ीर ने उसे समझाया और रात्रि को किले की खाई पर पुल बांध कर किले पर चढ़ जाने का मत पक्का किया, किन्तु पानी की बाढ़ अधिक होने के कारण मुसलमान सेना को उससे भी हारना पड़ा, तब तो बादशाह अखंड रूप से डट कर रह गया और किले पर आक्रमण करने के लिये उपयुक्त समय आने की प्रतीक्षा करने लगा।

एक दिन राव हम्मीर जी ने किले के सबसे ऊंचे हिस्से पर सभा मंडप सजाया। उस सभा मंडप में सगे संबन्धियों सहित बैठा हुआ राव हम्मीर ऐसा ज्ञात होता था जैसे देवताओं के बीच में इन्द्र शोभित होता है। स्वर्ण सिंहासन पर बैठे हुए राव हम्मीर जी के सम्मुख चन्द्रकला नामक वेश्या नृत्य कर रही थी। चन्द्रकला के प्रत्येक गीत से अलाउद्दीन की अपमान सूचक ध्वनि निकलती थी। साथ ही इसके बादशाह की ओर पदाघात करके उसने ऐसा विलक्षण कटाक्ष किया कि जिसे देख कर रावजी की सब सभा में आनन्द सूचक एक बड़ी भारी ध्वनि हुई। यह देख कर अलाउद्दीन से न रहा गया। तब उसने कहा कि यदि कोई इस वेश्या को वाण से मार कर राव हम्मीर के रंग मे भंग कर दे तो मैं उसे बहुत कुछ पारितोषिक दूं। यह सुन कर मीर महिमा के भाई मीर गभरू ने कहा कि मैं श्रीमान् की आज्ञा का प्रतिपादन कर सकता हूं, किन्तु स्त्री पर शस्त्र चलाना वीरों का काम नहीं है। इस लिये उस वेश्या को जीव से न मार कर केवल उसका अहित किए देता हूं। यों कह कर मीर गभरु ने एक ऐसा वाण मारा कि जिससे उस वेश्या के पांव में ऐसी चोट लगी कि वह तुरत लोट पोट हो गई। वेश्या को गिरते देखकर राव जी आश्चर्य और क्रोध में आकर चारों ओर देखने लगे। तब मीर ने हांथ बांध कर अर्ज़ किया कि यह बाण मेरे भाई मीर गभरु का

चलाया हुआ है । श्रीमान् इस पर किसी प्रकार का खेद न करें और तनिक मेरा पराक्रम देखें । यह कर मीर महिमाशाह ने एक ऐसा बाण मारा कि अलाउद्दीन के सिर पर से उसका मुकट उड़ गया ।

यह देखकर वजीर महरमखां ने अलाउद्दीन से कहा कि अब यहां ठहरना उचित नहीं है । इस महिमा के संचालन किए हुए बाण से यदि आप बच गए तो यह उसने पाहिले निमक का निर्वाह किया है । यदि वह हम्मीर का हुक्म पाकर अब की जो लक्ष करके बाण मारे तो आपके प्राण बचने काठिन हैं, अतएव मेरा तो यही विचार है कि अब यहां से दिल्ली को कूच कर जाना ही भला है । वजीर महिरम खां की बात मानकर बादशाह ने उसी समय कूच की तय्यारी की जाने की आज्ञा दी । इधर जिस समय सारे लश्कर में चला चल का समान हो रहा था उसी समय राव हम्मीर जी के सामान के कोषाध्यक्ष सुरजनसिंह ने आकर बादशाह के पैरों पर शिर धर दिया और कहा कि यदि श्रीमान् मुझे छाड़गढ़ का राज्य दे देना स्वीकार करें तो मैं सहजही में रणथंभ के अजेय दुर्ग पर आपकी फतह करवा दूं । इस पर अलाउद्दीन ने उसे बहुत कुछ ऊंची नीची दिखाकर कहा "सुरजनसिंह यदि मैं रणथंभ पर विजय पाजाऊं तो छाड़ का राज्य तो दूंगाही इसके अतिरिक्त तुम्हें इस प्रकार संतुष्ट करूंगा कि जिसमें तुम्हारा मन हर तरह से राजी होजायगा ।

बादशाह की बातों में आकर कृतघ्न सुरजन मे रणथंभ को फतह करवाने का बीड़ा उठा लिया। उसने उसी समय राव हम्मीर जी के पास जाकर कहा "कि श्रीमान् जी रसद बरदास्त और गोली बारुद के खजाने चुक गए हैं, इस लिये किले में रहकर अपने हठ एव मान मर्य्यादा की रक्षा होनी कठिन है, इसलिये वचन मानकर माहिमाशाह को अलाउद्दीन के पास भेजकर उससे सुलह कर लीजिए। सुरजन की बात पर राव

हम्मीर जी ने विश्वास न किया और आप स्वयं "जौरा भौंरा" * (खज़ाने) के पास जाकर जांच की तो सुरजन का कहना वास्तव में सत्य पाया गया । तब तो रावजी को अत्यन्त शोक और आश्चर्य ने दबा लिया। यह देखकर महिमाशाह ने कहा कि यदि श्रीमान् आज्ञा दें तो अब मैं स्वयं अलाउद्दीन से जा मिलूं जिससे वह दिल्ली चला जाय । यह सुनतेही रावजी के नेत्रों से आग की चिनगारियां निकलने लगीं । उन्होंने कहा, महिमाशाह क्या फिर फिर यह समय आवेगा ? यदि मैं तुझे शाह के पास भेजकर रणथंभ का राज भोग करूं तो संसार मुझे क्या कहेगा ? क्या इस कायर कर्तव्य से मेरा क्षत्रिय कुल सदैव के लिये कलंकित न होगा ? अब तो जो कुछ होना था हो चुका ।'

इधर सुरजन ने बादशाह के पास आकर कहा कि मैं एक ऐसा अद्भुत कुचक्र चला चुका हूं कि इस समय आप जो कुछ कहेंगे राव जी तुरन्त स्वीकार करलेंगे । यह सुनकर अलाउद्दीन ने हम्मीर जी के यहां कहला भेजा कि वह अपनी देवल रानी की बेटी चन्द्रकला को मुझे देकर मुझ से क्षमा प्रार्थी हो तो मैं उस पर दया कर सकता हूं। यह सुनतेही राव हम्मीर जी के क्रोध और शोक का ठिकाना न रहा । उन्होंने इसके उत्तर में अलाउद्दीन के पास कहला भेजा कि यादि उसे अपनी जान प्यारी है तो चार पीरों सहित अपनी प्यारी चिमना बेगम को मेरे पास भेजकर आप दिल्ली चला जावे अन्यथा मेरे हठ को हटाने की आशा न करें। हम्मीरजी के यहां से इस प्रकार कड़ाचूर उत्तर पाकर बादशाह ने कुपित होकर सुरजन से

---

* किन्तु " जौरा, भौंरा" (खज़ाने) वास्तव में खाली नहीं हुए थे उनमें का सब माल सामान नीची तह में ज्यों का त्यों भरा पड़ा था । राव हम्मीर जी को धोखा देने के लिये सुरजन ने ऊपर से सूखा चमड़ा डलवा दिया था जो कि पत्थर डालने पर खड़क उठा ॥

कहा क्यों रे झूठे ! तू यही कहता था कि राव हम्मीर अब आजिज़ आ जायगा । इस अपमान से उस दुष्ट ने कुपित होकर कहा कि अच्छा अब देखिए क्या होता है ।

इधर राव जी बादशाह के दूत को उपरोक्त उत्तर देकर तन क्षीण मन मलीन शोकातुर एवं व्यग्रचित्त अवस्था में रणवास में गए और रानीजी से उक्त बीतक की बार्ता कर कहने लगे । वे बोले "हे प्रिये ! अब क्या करूं ? क्या माहिमाशाह को अलाउद्दीन के पास भेजकर ही अपनी प्रजा की रक्षा करूं ?" रावजी के ऐसे बचन सुनकर रानी ने क्रोध, शोक, लज्जा एवं आश्चर्य्य से भरे कण्ठ कहा "हे राजन्, बीरकुलशिरोमणि ! आज आपको बादशाह से लड़ते लड़ते १२ वर्ष हो गए । आज आपको यह कुल धर्म के विरुद्ध सलाह देने वाला कौन है ? हे प्राण प्यारे यह संसार सब झूठा है अतएव इस संसार चक्र से संचालित दुःख और सुख भी अनित्य है, परन्तु एक मात्र कीर्तिही ऐसी वस्तु है कि जो इस संसार के अप्रतिहत चक्र से कुचली नहीं जा सकती । हे राजन् ! अपने हाथ से शीस काट कर देनेवाले राजा जगदेव, विद्या बिशारद राजा भोज, परदुखभंजन राजा बिक्रमादित्य, दानवीर कर्ण इत्यादि कोई भी इस संसार में अब नहीं हैं परन्तु उनके यश की पताका अब तक अक्षय स्वरूप से उड़ रही है और सदा उड़ेगी । महाराज धन यौवन सदैव नहीं रहता, मनुष्य ही क्या, आकाश में स्थित सूर्य्य और चन्द्रमा भी एक रस स्थिर नहीं रहते ! जीवन, मरण, सुख, दुःख यह सब होनहार के अधीन है । और जब होनहार होनीही है तब अपने कर्तव्य से क्यों चूकिए । श्रीमान् आप इस समय अपने पूर्व्व पुरुष सोमेश्वर, पृथ्वीराज, जैतराव इत्यादि की वीरता और उनकी अक्षय कीर्ति का स्मरण कीजिए और तन धन सब

कुछ जाय तो जाय परन्तु शरणागत महिमाशाह और अपनी धर्म हठ को न जाने दीजिए।"

रानी की इस प्रकार उच्च उत्तम शिक्षा सुनकर राव जी के मुखार्विन्द पर प्रसन्नता की झलक पड़ गई। उन्होंने कहा "धन्य प्रिये! बस मैं इतना ही चाहता था, अब मैं निश्चिन्तिता पूर्व्वक रण में प्राण दे सकता हूं।" इस बात के सुनते ही रानी मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी, फिर कुछ सम्हल कर मधुर स्वर से बोली "स्वामी, आप युद्ध कीजिए मैं आपसे पहिले ही शाका करूंगी।"

रानी जी से इस प्रकार बातें करके राव जी ने दर्बार में आकर राज्य कोष को खोलवा कर याचकों को अयाची करने की आज्ञा दी और सब राजपूत सूर सामंतों के साम्हने " चतुरंग " से कहा कि अब मैं अपना कर्तव्य पालन करने पर उद्यत हूं, रणथंभ की प्रजा और राजकुमार 'रतन' की रक्षा आप कीजिए। उत्तम होगा कि आप रतन को लेकर चित्तौर को चले जांय। इस पर यद्यपि चतुरंग ने आनाकानी करके अपने को भी राव जी के साथ युद्ध में सामिल रखना चाहा किन्तु राव जी के आग्रह करने पर उसे वही मानना पड़ा अर्थात् वह ५००० सैनिकों सहित 'रतन' को लेकर चित्तौर की तरफ गया।

जब चतुरंग अल्हणपुर तक पहुंच गए तब राव हम्मीर जी ने अपने सब सर्दारों से कहा कि अब "धर्म्म के लिये प्राण न्यौछावर करने का समय निकट आ गया है अतएव जिनको मृत्यु प्यारी हो वे मेरे साथ रहें और जिन्हें जीवन प्यारा हो वे खुशी से घर चले जांय। राव हम्मीर जी के इस प्रकार कह चुकने पर मीर महिमाशाह ने सब सूर वीर सर्दारों की तरफ से प्रतिनिधि स्वरूप में अर्ज किया। उसने कहा, हे राव जी! ऐसा कौन पुरुष कुलांगार

होगा जो आपको इस समय रणथंभ में छोड़कर अपने जीवन का सुख चाहेगा। देवता, मनुष्य, शूरवीर पुरुष किसी का भी जीवन स्थिर नहीं है एक दिन मरेंगे सब, तब फिर ऐसे सुअवसर की मृत्यु को कौन छोड़े? मरने से सब डरते हैं, संसार में केवल सती स्त्री और शूर वीर पुरुष ही ऐसे हैं जो मृत्यु को सदैव आलिङ्गन करने के लिये प्रस्तुत रहते हैं एवं उन्हें मृत्यु में ही आनन्द आता है।

दूसरे दिन अरुणोदय के होते ही राव जी ने शौचादि से निश्चिन्त हो गंगा जल से स्नान कर शरीर में सुगंधित गंधादि लेपण कर केसर सने पीले वस्त्र धारण किए, मत्थे पर रत्न जटित मुकुट बांधा और शूर वीरों के छत्तीसों बाने (हरबे) लगा कर प्रसन्नता पूर्व्वक वे ब्राह्मणों को सम्मान सहित दान देने लगे। इधर बात की बात में राठौड़, कूरम, गौड़, तोंवर, पड़िहार, परिच, पुंडीर, चहुआन, यादव, गहिलोत, सेंगर, पंवार इत्यादि जाति के कुलीन शूर वीर राजपूत लोग अपने अपने आने बाने से सजे हुए रणरंग में रत मदमाते गयंद की भांति आकर राव जी के पास इकट्ठे होने लगे। उन आगत शूर वीर राजपूतों के मत्थे पर टेढ़ी पगड़ी, ललाट में केशर सौंधे गंध की त्रिपुंड, गले में तुलसी और रुद्राक्ष की माला, सिर पर लोह के टोप, शरीर पर झिलम वक्तर, हाथों में दस्ताने, और यथाअंग छत्तीसों, बाने सजे हुए थे। वे वीर योद्धा लोग साक्षात् शिव के गण से सुशोभित होते थे। इधर तो इन सब सूर वीरों सहित राव जी गणेश, शिव, भगवती इत्यादि देवताओं का पूजन परिक्रमा कर रहे थे उधर राज महल के द्वार पर मेघ के समान बड़े दुरद दंतारे मतवारे हाथियों और वायु के वेग को उल्लंघन करने वाले घोड़ों का घमासान जम रहा था। सूर्य्य निकलते निकलते राव हम्मीर जी अपने वीर योद्धाओं सहित इष्टदेव का स्मरण करते हुए राजमहल से बाहर हुए, राव जी

के आते ही सब सेना व्यूहबद्ध हो गई, सबसे आगे फड़वाली साक्षात् काल की सी विकराल कालिका का अवतार तोपें, उनके पीछे हथनार उंठनार जम्बूर, तिनके पीछे हाथी, तिनके पीछे ऊंठ घुड़-सवार और फिर तुबकदार पैदल इत्यादि थे। उस समय बाल सूर्य्य की सुनहरी किरणों के पड़ने से सब साज बाज से सुसज्जित चंचल घोड़े और गंधमय गंडस्थल वाले मतवाले हाथी बड़े ही भले मालूम होते थे। जिस समय राव जी की सवारी सम्पूर्ण रूप से सुसज्जित हो गई तो नौवत, नगाड़े, शंख, सहनाई, रणतूर, श्रृंगी, डफ़ इत्यादि रण वाद्य बजने लगे, कड़खेत उच्चश्वर से कड़रव गाय गाय कर सहज कठोर हृदय सूरवीरों के चित्त को उत्कर्ष देनें लगे। इधर ये सूर वीर लोग उमंग में भरे हुये आगे बढ़ते जाते थे उधर आकाश मे अप्सराओं के वृन्द के वृन्द इस समर में शत्रु के सम्मुख प्राण को परित्याग करने वाले वीरों को अपने हृदय का हार बनाने के लिये आका-श मार्ग से आ रही थीं। जिस प्रकार ये वीर लोग इधर झिलम, टोप, बख्तर, दस्ताने, कलगी, तुर्रा, सरपेच, और तीर, तुबक तेगा, तलवार, तपल, तोमर, तोरा, नेत, बरछी, बिछुआ, बांक, छुरी, पिस्तौल, पेशकब्ज, कटार, परिघ, फरसा, दाव इत्यादि अस्त्र शस्त्र से सजे हुए थे उसी प्रकार उस तरफ सर्वाङ्ग सुन्दरी नवयौवना अप्सराएँ भी सीसफूल, दावनी, आड़, ताटंक, हार, बाजूबन्द, जोसन, पहुंची, पाजेब इत्यादि गहने और नाना प्रकार की रंग बिरंगी कंचुकी, चोली, चौबन्द इत्यादि वस्त्रों को धारण किए हुए आकाश मार्ग में स्थित थीं।

इस प्रकार जंगरंग राते मदमाते राजपूत इधर से बढ़े और उधर से इसी तरह वाणों की बौछार करती हुई मुसल्मान सेना भी पहाड़ों की कंदराओं में से टिड्डी सी निकल पड़ी। दोनों सेनाओं में प्रथम

तो धुँवाधार तोप तुबक झौका पिस्तौल इत्यादि अग्न्यास्त्रों से वर्षा हुई, परन्तु जब बीरत्व के उत्साह से प्रोत्साहित हुई दोनों सेनाएं समुद्र की तरह उमड़ कर एक दूसरे से खिल्तमिल्त हो गई उस समय एक दम तेगा, तलवार, तवल, छुरी, बिछुआ, कटार, गुर्ज, फर्सा इत्यादि की मार होने लगी। क्षण मात्र में वह आमोदमय रणभूमि साक्षात् करुणा और बीभत्स रस का समुद्र हो गई। जहां तहां घायल और मृतक सूर बीर सिपाहियों के शवों के ढेर के ढेर नजर आते थे। मृतक हाथी घोड़ों के शव जहां तहां चट्टानों से दीखते थे और बहुतेरे नर-देह-रक्त की नदी में जहां तहां बहे जाते थे। उन पर बैठ कर मांस भक्षण करते हुए कौव्वे, चील्ह, गृद्ध, कुही, बाज, कुर्री और शृगाल इत्यादि जन्तु अत्यन्त भयानक रव मचाते थे। इस प्रकार कठिन मार मचने पर मुसल्मान सेना के पैर उखड़ पड़े। यह देख कर बादशाह ने अपनी सेना को ललकारते हुए वजीर से कहा कि अब क्या किया जाय। तब वजीर ने कहा कि इस समय अपनी सेना की चार अनी करके प्रत्येक का भार "दीवान, बांके बगसी, मैं और आप स्वयं लेकर चार तरफ से आक्रमण करें, तब ठीक होगा। बादशाह ने उसकी सम्मति मानकर वैसाही किया। इस बार उपर्युक्त व्यूहवध्य होने के कारण मुसल्मान सेना ने बड़ी वीरता दिखाई। बादशाह ने पुकार कर कहा कि मेरा जो उमराव हम्मीर को पकड़ कर लावेगा उसको बारह हजार की जागीर और दरबार में सब से बड़ा मंसब मिलेगा। यह सुन कर अब्दुल नामक एक उमराव अपनी सेना सहित बड़े बेग से आगे बढ़ा। इधर राजपूत सेना ने उस के रोकने का यथासाध्य प्रयत्न किया, इस होड हौस में बड़ी कड़ी मार हुई, दोनों ओर के कई कमंध खड़े हुए। जब रावजी की तरफ के २०० सवार तीस हाथी और ६०० बीर जोधा काम आचुके तब

शेख महिमाशाह ने राव हम्मीर को सिर नवा कर कहा कि श्रीमान् अब बहुत हुआ। अब जरा मेरा भी पराक्रम देखिए। यह कहता हुआ वह बीच समर भूमि में आ खड़ा हुआ और बादशाह को सम्बोधन करके बोला, मैं महिमाशाह जो आपका अपराधी हूं यह खड़ा हूं अब पकड़ते क्यों नहीं ! अथवा जो कुछ करना हो करते क्यों नहीं ? अब अपनी इच्छा को पूर्ण कीजिए।

महिमाशाह के ऐसे सगर्व वचन सुनकर अलाउद्दीन ने खुरासान खां की ओर देखकर कहा कि जो कोई इस शेख को जीवित पकड़ लावेगा उसे तीस हजार की जागीर बारह हजारी मंसब नौबत नीसान और एक तलवार दूंगा। इस पर सद्द की फौज के साथ इधर से खुरासान खा और राव हम्मीर की जय जयकार बोलते हुए उधर से महिमाशाह ने एक दूसरे पर आक्रमण किया। बादशाह ने अपनी सेना को उत्तेजित करने के लिये कहा कि इसको शीघ्र पकड़ो। सेख और खुरासान की सेना अनी तो एक दूसरे पर वाणों की वर्षा करने लगी और इधर ये दोनों वीर स्वयं आमने साम्हने जुट कर एक मात्र खड्ग के सहारे पर खेलने लगे। अन्त में महिमाशाह ने खुरासान खां को मार गिराया और उसके निशान इत्यादि ले जाकर राव जी को नजर किए। महिमाशाह ने राव हम्मीर जी के सम्मुख खड़े होकर कहा 'हे शरणागत पणरक्षक बीर चहुआन आपको धन्य है आप राज्य, परिवार, स्त्री और सब राजसी बैभवों को तिलांजुली देकर जो एक मात्र मेरी रक्षा करने के लिये अपने हठ से न हटे यह अचल कीर्ति आपकी इस संसार में सनातन स्थिर रहेगी। उसने आंसू भर कहा हाय ! "अब वह समय कब आवेगा कि मैं पुनः अपनी माता के गर्भ से जन्म धारण कर आपसे फिर मिलूं।" यह सुनकर रावजी ने कहा

हे वीर मीर, अधीर मत हो। जीवन मरण यह संसार का कामही है इस विषय का पश्चातापही क्या? फिर हम तुम तो एकही अंश के अवतार हैं तो अवश्य है कि हम आप एकही में लीन होंगे अतएव इन निःसार बातों का विचार करना तो वृथाही है परन्तु यह अवश्य है कि मनुष्य देह धारण कर इस प्रकार कीर्ति सम्पादन करने का समय कठिनता से प्राप्त होता है।

राव हम्मीर जी के उपरोक्त वक्तव्य का अन्त होतेही वीरोचित उत्कर्ष से भरा हुआ मीर महिमाशाह रणक्षेत्र के मध्य में आ उपस्थित हुआ। उसकी बरनी पर इधर से उसका छोटा भाई मीर गभरू उसके साम्हने जा जुटा। जिस समय ये दोनों वीर बांधव एक दूसरे पर प्रहार करने को थे कि अलाउद्दीन ने हँस कर कहा "मीर महिमाशाह मैं सच्चे दिल से तेरी तारीफ़ करता हूं। जिस वक़्त से तूने दिल्ली छोड़ी उस वक़्त से आज तक मुझको सिर न झुकाया, बस अब तुम खुशी से मेरे पास चले आओ मैं तुम्हारा कुसूर मांफ करता हूं और यह बेगम भी तुमको दे देना कबूल करता हूं। साथही इसके गोरखपुर का परगना जागीर में दूंगा।" इस पर महिमाशाह ने मुस्कराते हुए सहज स्वभाव से उत्तर दिया कि अब आपका यह कहना वृथा है, आप ज़रा उन बातों का ख्याल भी तो कीजिए जो आपने उस समय कही थी। यदि अब फिर से भी उसी माता की कुक्ष से जन्म लूं तब भी रावजी को नहीं छोड़ने वाला हूं।

मीर महिमाशाह को बादशाह से बातें करते देखकर रावजी ने कुमक भेजी। इधर मीर गभरू ने भी कहा कि हे भाइ, अब वृथा की दन्त कथाओं के क्रंदन करने से क्या लाभ है, आओ इस सुअवसर पर हम और आप दोनों अपने अपने धर्म को पालन करते हुए स्वर्ग की

सीढ़ी पर पैर देवें। यह कहते हुए दोनों भाई अपने अपने स्वामियों की जैजैकार मनाते हुए एक दूसरे से जुट पड़े। मीर गभरू ने अपने बड़े भाई महिमाशाह के पैर छू कर कहा "अब मुझे आज्ञा हो।" इसके उत्तर मे महिमाशाह ने कहा कि "स्वामिधर्म्म पालन में दोषही क्या है ?" पहिले तो दोनों भाई परस्पर खड्ग से लड़ते रहे किन्तु जब बहुत देर होगई तब दोनों अपने अपने घोड़ों पर से उतर कर परस्पर द्वंद युद्ध में प्रवृत्त हुए, और दोनों सेनाओं के देखतेही दोनों वीर भाई स्वर्ग को सिधारे।

जब महिमाशाह मारा जा चुका तब अलाउद्दीन ने राव हम्मीर जी से कहा कि अब आप युद्ध न कीजिए मैं आपकी अक्षय वीरता से अत्यन्त प्रसन्न होकर आपको अपनी तरफ़ से पांच परगने और देना स्वीकार करता हूं और यह भी प्रतिज्ञा करता हूं कि अब मेरे रहते आप स्वच्छन्दता पूर्वक रणथंभ का राज्य कीजिए। इसके उत्तर में हम्मीर जी ने कहा कि अब आपका यह विचार केवल बिंडबना है अब जो कुछ भविष्य होगा वही होगा, मैं इस क्षणभंगुर जीवन की अभिलाषा वा राज्य सुख के लोभ से अक्षय कीर्ति को त्यागने वाला नहीं हूं। रावण, दुर्योधन आदि वीरों ने कीर्ति के लिये ही तन को तिनका सा त्याग दिया, हम तुम दोनों एकही पद्मऋषि के अंश से उत्पन्न हैं, अतएव अब यही उचित है कि इस सुअवसर पर समर भूमि मे अनित्य शरीर को विसर्जन करके हम आप स्वर्ग में सदैव के लिये सहवास करें।

राव जी के ऐसे बचन सुनकर अलाउद्दीन ने अपनी सेना को आक्रमण करने की आज्ञा दी। उधर से राजपूत सेना भी प्राण का मोह छोड़ कर मदोन्मत्त मातंग की तरह मुसलमानों से जंग करने को वीरत्व के उमंग में भरी हुई उमड़ पड़ी। जिस समय दसों दिग्गजों के

हृदय को कंपायमान करने वाले रण वाद्यों को बजाती हुई दोनों सेना-एं परस्पर मिल रही थीं उसी समय भोज नामक भीलों के सर्दार ने राव जी से अपने हरावल में होने की आज्ञा मांगी। राव जी ने कहा कि तुम चित्तौर की रक्षा करो इस पर उसने उत्तर दिया कि मुझे श्रीमान् की आज्ञा मानने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है, परन्तु मैंने जो आजन्म श्रीमान् की चरण सेवा की है वह इसी अवसर के लिये, अत-एव अब मुझे आज्ञा हो क्योंकि मैं अपने कर्तव्य के ऋण से उऋण होऊं। यों कह कर भोज राज अपनी भील सेना सहित आगे बढ़ा। उधर से मीर सिकन्दर हरावल में हुआ। मुसल्मान सेना से तोप की गुरावें छुटती थीं और भील तीरों की वर्षा करते थे। इसी समय भोज राज और सिकन्दर का मुक़ाबला हुआ। इधर से भोजराज ने सिकन्दर पर कटार का वार किया और उसने तलवार चलाई, निदान दोनों वीर एक ही समय धराशायी हुए। इस युद्ध में भोजराज के साथ वाले दो हजार भील और सिकन्दर की तरफ़ के तीस हज़ार कंधारी योद्धा काम आए और शाही सेना भाग उठी।

उसी समय राव हम्मीर जी ने भोजराज की लाश के पास हाथी जा डँटाया और उस वीर के मृतक शव को देखकर राव जी ने आँसु-ओं से नेत्र डबडबाई हुई अवस्था में कहा, धन्य हो वीर वर! तुम ने स्वामिसेवा में प्राण देकर अतुलित कीर्ति को सम्पादन किया। राव जी को रणक्षेत्र के बीच अचल भाव से स्थित देखकर अलाउद्दीन ने अपने भागते हुए वीरों से कहा "रे मूर्ख मनुष्यो, तुमने जिस मेरे कारण आजन्म आनन्द से जीविका निर्वाह की, अहर्निशि आनन्द आमोद में व्यतीत किए, आज तुम्हें लड़ाई का मैदान छोड़ कर भागते हुए शरम नहीं आती।" इतना सुनते ही मुसल्मान सेना भूखे बाघ या फुफ-कारते हुए सर्प की तरह लौट पड़ी। यहां राजपूत तो सदैव प्राण

हथेली पर रक्खे हुए थे, बस दोनों में इस तरह कड़ाचूर मार पड़ी कि रणभूमि में रक्त की नदी बह निकली, उस बेग से बहती हुई श्रोणित सरिता में जहां तहां पड़े हुए हाथियों के शव वास्तविक चट्टानों से भासित होते थे, वीरों के हाथ पांव जंघा इत्यादि कटे हुए अवयव जल-चर जीव से तैरते ज्ञात होते थे, वीरों के सचक्कन केश सिवार, और ढाल कच्छप सी प्रतीत होती थी, नव युवा वीरों के कटे हुए मस्तक कमल से और उनके आरक्त बड़े बड़े नेत्र खंजन से खिलते हुए नजर आते थे। इस पसर में ७५ हाथी, सवा लाख घोड़े, ७०० निशान वाले और अगनित योद्धा काम आए। सिकन्दर शाह, शेर खां, महरमखां मोहब्बत खां, मुदफ्फर या मुजफ्फर खां, नूर खां, निजाम खां इत्यादि मुस-ल्मान वीर मारे गए और राव जी की तरफ के भी नामी नामी चार सौ योद्धा खेत रहे।

इसी मारामार में राव हम्मीर जी ने अपने हाथी को अलाउद्दीन के सम्मुख डटाए जाने की आज्ञा दी और कहला भेजा कि अब तक वृथा ही रक्त प्रवाह हुआ है अब आइए हमारा आपका द्वन्द युद्ध हो और सब द्वंद समाप्त हो। रावजी का यह सँदेसा सुनकर अलाउद्दीन ने मंत्री से पूछा कि अब क्या करें। तब मंत्री ने उत्तर दिया कि उस चहुआन के बल प्रताप एवं पराक्रम से आप अपरिचित नहीं हैं अतएव मेरे विचार में तो यही आता है कि अब आप संधि करलें तो सर्वथा भला है। निदान अलाउद्दीन ने वजीर की बात मानकर हम्मीरजी के पास संधि का प्रस्ताव भेजा। परन्तु उस वीर हम्मीर ने उत्तर दिया कि युद्धस्थल में उपस्थित होकर मित्रता का प्रस्ताव करना भला कौनसी नीति और बुद्धिमत्ता का मत है। शत्रु के सम्मुख बिनती करना नितान्त कातरता अथवा दम्भमय चतुरता का पता देता है।

बादशाह के दूत को इस प्रकार नीतियुक्त उत्तर देकर राव

जी ने अपने राजपूत वीरों को आज्ञा दी कि "हे वीर वर योद्धाओ, अब मेरी यही इच्छा है कि आप तोप, वाण, हथनार, चादर, जंबूर, बन्दूक, तमंचा, वरछा, सेल, साँग इत्यादि हथियारों को त्याग कर केवल तलवार, छुरी, कटारी और विषाण से काम लो अथवा मल्लयुद्ध द्वारा ही अपने पराक्रम का परिचय देते हुए स्वर्ग की सीढ़ी पर पैर दो। साथ ही मेरी यह भी आज्ञा है कि बादशाह को न मारना।"

राव जी के इतना कहते ही राजपूत रावत, महावत से हकारे हुए हाथी की तरह अपने अपने उज्ज्वल शस्त्रों को चमकाते हुए चल पड़े। क्षुधित मृगराज की भांति रण बांकुरे राजपूतों का वेग मुसल्मानी सेना क्षण भर न सह सकी और बड़े बड़े सैनिक अमीर उमरा भेड़ की भांति भाग उठे। राजपूत सेना ने अलाउद्दीन के हाथी को घेर लिया और उसे राव हम्मीर जी के सम्मुख ले आए। राव जी ने विवश हुए बादशाह को देखकर अपने सर्दारों से कहा कि यह पृथ्वीपति बादशाह है। अदण्डच है। इसलिये आप लोग इसे योंही छोड़ दीजिए। निदान राजपूत सर्दारों ने राव जी की आज्ञा मान कर अलाउद्दीन को उसकी सेना में पहुंचा दिया और वह भी उसी समय वहां से कूच कर दिल्ली को चला आया।

उधर राव हम्मीर जी ने अपने घायलों को उठवा कर और बादशाही सेना से छीने हुए निशान लिवा कर निज दुर्ग की तरफ़ फेरा किया।

राव जी ने भूल वश, अथवा विजय के उत्साहवश, शाही निशानों को आगे चलने की आज्ञा दी, यह देखकर रानी जी ने समझा कि राव जी खेत हार गए और यह किले पर शाही सेना आ रही है। ऐसा विचार कर रानी जी ने अन्यान्य सब परिवार की वीर महिलाओं सहित प्रज्वलित अग्नि में शरीर होम कर—शाका किया। जब राव

जी ने किले में आकर यह दृश्य देखा तो सब सर्दारों और सैनिकों को आज्ञा दी कि वे चित्तौर में जाकर कुंअर रतनेस की रक्षा करें और आप शिव के मन्दिर में जाकर नाना प्रकार के पूजन अर्चन करके यह वरदान मांगा कि अब जो मैं पुनः जन्म धारण करूं तो इसी प्रकार बीर क्षत्री कुल में। और खड्ग खींच कर अपने ही हाथों से कमल के पुष्प के समान अपना माथा उतार के शिव जी को चढ़ा दिया।

जब यह समाचार अलाउद्दीन के कर्णगोचर हुआ तो रावजी के कर्तव्य पर पश्चाताप करता हुआ वह फौरन फिर आया और रावजी के सम्मुख खड़ा होकर अदब से प्रणाम करता हुआ बोला कि अब मुझे क्या आज्ञा है। यह सुनकर रावजी के मस्तक ने उत्तर दिया कि तुम जाकर समुद्र में शरीर छोड़ो तब हम तुम मिलेंगे। रावजी के सीस के बचन मानकर अलाउद्दीन ने वज़ीर महरम ख़ां को आज्ञा दी कि वह सब लश्कर सहित दिल्ली जाकर "शाहज़ादा" अलावृत्त को तख्त पर बिठावे और वह आप उसी क्षण रामेश्वर को चला गया। वहां पर उसने रामेश्वर जी की पूजा की और उन्हीं का ध्यान और स्मरण करते हुए समुद्र में वह कूद पड़ा।

इस प्रकार बादशाह के तन त्यागने पर राव हम्मीरजी और अलाउद्दीन और मीर महिमाशाह परस्पर स्वर्ग में गले मिले और अप्सराओं और देवताओं ने पुष्पवृष्टि की।

इस प्रकार राव हम्मीर जी का यश कीर्तन सुनकर राव चन्द्रभान जी नें कवि जोधराज को बहुत सा दान दिया, और सब भांति से प्रसन्न किया।

चैत्र शुदि तृतिया वृहस्पतिवार संवत् १८८९ को ग्रन्थ पूर्ण हुआ।

यह जोधराज कृत हम्मीररासे का सारांश हुआ। इसमें दी हुई ऐतिहासिक बातों पर विचार करने के पहिले मैं एक दूसरे कवि की

लिखी हुई हम्मीरराव की कथा का सारांश देना चाहता हूं। नयनचन्द्र सूरि नामक एक जैन कवि ने हम्मीर महाकाव्य नाम का एक ग्रन्थ संस्कृत में लिखा है। नयनचन्द्र जयसिंह सूरि का पौत्र था। यह ग्रन्थ पन्द्रहवीं शताब्दी का लिखा हुआ जान पड़ता है। सन् १८७८ में पण्डित नीलकंठ जनार्दन ने इस काव्य का एक संस्करण छपाया जिसकी भूमिका में उन्होंने काव्य का सारांश दिया है। उससे नीचे लिखा वृतान्त मैं हिन्दी में उद्धृत करता हूं। यहां पर इस ग्रन्थ में दिया हुआ हम्मीरदेव के वंश का कुछ वृतान्त दे देना उचित जान पड़ता है।

चौहान वंश में दीक्षित वसुदेव नाम का एक पराक्रमी राजा हुआ। इसका पुत्र नरदेव था। इसके अनन्तर हम्मीर तक वंशक्रम इस प्रकार है—

चन्द्रराज

जयपाल

जयराज

सामन्तसिंह

गुयक

नन्दन

वप्रराज

हरिराज

सिंहराज—इसने हेनिम नाम के मुसल्मान सर्दार को मारा

भीम—सिंह का भतीजा और उसका दत्तक पुत्र।

विग्रहराज—गुजरात के मूलराज को मारा।

गंगदेव

वल्लभराज

राम

चामुंडराज—हेजम्मुदीन को मारा ।

दुर्लभराज—शहाबुद्दीन को जीता ।

दुशल—कर्णदेव को मारा ।

वीसलदेव—शहाबुद्दीन को मारा ।

पृथ्वीराज—प्रथम

अल्हण

अनल—अजमेर में तालाव खुदवाया ।

जगदेव

वीशल

जयपाल

गंगपाल

सोमेश्वर—कर्पूरादेवी से विवाह किया ।

पृथ्वीराज—द्वितीय

हरिराज

गोविंद

वाल्हण—प्रल्हाद और वाग्भट्ट दो पुत्र हुए ।

प्रल्हाद

वीरनारायण—प्रल्हाद का पुत्र ।

वाग्भट्ट—वाल्हण का पुत्र

"वागभट्ट के उत्तराधिकारी उनके पुत्र जैत्रसिंह हुए । उनकी रानी का नाम हीरादेवी था जो बहुत रूपवती और सर्वथा अपने उच्च पद के योग्य थी । कुछ काल में हीरादेवी गर्भवती हुई । उनकी इस अवस्था की वासनाओं से गर्भस्थित जीव की प्रवृत्ति और उसके महत्व का आभास मिलता था । कभी कभी उन्हें मुसल्मानों के रक्त से

स्नान करने की इच्छा होती । उनके पति उसकी अभिलाषाओं को पूरा करते; अन्त में, शुभ घड़ी में, उनको एक पुत्र उत्पन्न हुआ । पृथ्वी की चारों दिशाओं ने सुन्दर शोभा धारण की; सुखद समीर बहने लगा; आकाश निर्मल हो गया; सूर्य्य मृदुलता से चमकने लगा; राजा ने अपना आनन्द ब्राह्मणों पर सुवर्ण बरसा कर और देवताओं की वन्दना करके प्रगट किया । ज्योतिषियों ने बालक के मुहूर्त्तस्थान में पड़े हुए नक्षत्रों के शुभ योग का विचार करके भविष्यद्वाणी की कि कुमार समस्त पृथ्वी को अपने देश के शत्रु मुसल्मानों के रक्त से आर्द्र करेगा । बालक का नाम हम्मीर रक्खा गया । हम्मीर बढ़कर एक सुन्दर और वलिष्ट बालक हुआ । उसने चट सब कलाओं को सीख लिया और शीघ्र ही वह युद्ध विद्या में निपुण हो गया !

जैत्रसिंह के सुरत्राण और विराम दो और पुत्र थे, जो बड़े योद्धा थे । यह देखकर कि उनके पुत्र अब उनको राज्य के भार से मुक्त करने योग्य हो गए, जैत्रसिंह ने एक दिन हम्मीर से उस विषय में बात चीत की, और उन्हें किस रीति से चलना चाहिए इस विषय में उत्तम उपदेश देने के उपरान्त, उन्होंने राज्य उनके (हम्मीर के) हवाले कर दिया, और आप बनवास करने चले गए । यह बात संवत् १३३० (१२८३ ई०) में हुई ।*

छ गुणों और तीन शक्तियों से सम्पन्न होकर हम्मीर ने युद्ध के हेतु प्रस्थान करने का सङ्कल्प किया । पहिले वह राजा अर्जुन की राजधानी सरसपुर में गया । यहां एक युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन पराजित होकर अधीन हुआ । इसके अनन्तर राजा ने गढ़मंडले पर चढ़ाई की जिसने कर देकर अपनी रक्षा की । गढमंडले से हम्मीर धार की ओरें बढ़ा । यहां एक राजा भोज राज्य करता था जो स्वनाम-

---

* ततश्च संवत्नववन्हिबान्हि—भूहायने माघवलक्ष पक्षे ।
पौष्णां तिथौ हेलिदिने सपुण्ये दैवज्ञनिर्दिष्ट बले ऽलिलग्ने ॥ सर्ग ८ श्लोक ५६ ॥

धारी विख्यात राजा भोज के समान ही कवियों का मित्र था। भोज को पराजित करके सेना उज्जैन में आई जहां हाथी, घोड़े, और मनुष्य क्षिप्रा के निर्मल जल में नहाए। । राजा ने भी नदी में स्नान किया और महाकाल के मन्दिर में जाकर पूजा की। बड़े समारोह के साथ वे उस प्राचीन नगरी के प्रधान मार्गों से होकर निकले। उज्जैन से हम्मीर चित्रकोट (चित्तौर) की ओर बढ़ा और मेड़वार (मेवाड़) को उजाड़ करता हुआ आबू पर्वत पर गया।

वेद के अनुयायी हो कर भी यहां हम्मीर ने मन्दिर में ऋषभ देव की पूजा की, क्योंकि बड़े लोग विरोधसूचक भेद भाव नहीं रखते। वस्तुपाल के स्तुति-पाठ के समय भी राजा प्रस्तुत थे। वे कई दिन तक वसिष्ठ की कुटी में रहे, और मन्दाकिनी में स्नान करके उन्होंने अचलेश्वर की आराधना की। यहां अर्जुन की कृतिओं को देखकर वे बहुत ही आश्चर्य्यित हुए।

आबू का राजा एक प्रसिद्ध योद्धा था, किन्तु उसके बल ने इस अवसर पर कुछ काम न किया और उसे हम्मीर के अधीन होना पड़ा।

आबू छोड़कर राजा वर्द्धनपुर आए और उस नगर को उन्होंने लूटा और नष्ट किया। चंगा की भी यही दशा हुई। यहां से अजमेर की राह से हम्मीर पुष्कर को गए जहां उन्होंने आदिवराह की आराधना की। पुष्कर से राजा शाकम्भरी को गए। मार्ग में मरहटा,* खंड़िल्ला, चमदा और कांकरौली लूटे गए। कांकरौली में त्रिभुवनेन्द्र उनसे मिलने आए और बहुत सी अमूल्य भेट लाए।

इन विशद कार्य्यों को पूरा करके हम्मीर अपनी राजधानी को लौट आए। राजा के आगमन से वहां बड़ी धूम हुई। राज्य के सब बड़े कर्म्मचारी धर्म्म सिंह के साथ दल बांध कर अपने विजयी राजा

---

* इस नाम का कोई नगर नहीं है जिसे हम्मीर ने शाकम्भरी जाते हुए लूटा हो। मेड़ात नाम का एक नगर मेवाड़ की सीमा पर है।

की अगवानी के लिये बाहर आए। मार्ग के दोनों ओर प्रेमी प्रजा अपने राजा के दर्शन के हेतु उत्सुक खड़ी थी।

इसके कुछ दिन पीछे हम्मीर ने अपने गुरू विश्वरूप से कोटि-यज्ञ का फल पूछा और उनसे यह उत्तर पाकर कि इस यज्ञ के पूरा करने से स्वर्गलोक प्राप्त होता है राजा ने आज्ञा दी की कोटि-यज्ञ की तय्यारी की जाय। चट देश के सब भागों से विद्वान ब्राह्मण बुलाए गए, और यज्ञ पवित्र शास्त्रों में लिखे विधानों के अनुसार समाप्त किया गया। ब्राह्मणों को खूब भोजन करा कर उन्हें भरपूर दक्षिणा दी गई। इसके उपरान्त राजा ने एक महीने तक के लिये मुनिव्रत ठाना।

जब कि रणथंभोर में ये सब बातें हो रही थीं, दिल्ली में, जहां अलाउद्दीन राज्य करता था, कई परिवर्त्तन हुए। रणथंभोर में जो कुछ हो रहा था उसका समाचार पाकर उसने अपने छोटे भाई * उलगखां को सेना लेकर चौहान प्रदेश पर चढ़ाई करने और उसको उजाड़ करने की आज्ञा दी। उसने कहा "जैत्रसिंह हम लोगों को कर देता था; पर यह उसका बेटा न कि केवल कर ही नहीं देता वरन् हम लोगों के प्रति अपनी घृणा दिखाने के लिये प्रत्येक अवसर ताकता रहता है। यह उसकी शक्ति को नष्ट करने का अच्छा अवसर है।" ऐसी आज्ञा पाकर उलगखां ने ८०००० सवार लेकर रणथंभोर प्रदेश पर चढ़ाई की। जब यह सेना वर्णनाशा नदी पर पहुंची तब उसने देखा कि सड़कें जो शत्रु के प्रदेश को गई हैं, सवारों के चलने योग्य नहीं हैं। इससे वह कई दिन वहां टिका रहा; इस बीच में उसने आस पास के गावों को जलाया और नष्ट किया।

---

* मालिक मुईज्जुद्दीन उलगखां। बिग्स ने अपने फिरिश्ता के अनुवाद में इसको "अलुफखां" लिखा है।

यहां रणथंभौर में मुनिव्रत पूरा न होने के कारण राजा स्वयं युद्धक्षेत्र में न जा सकते थे। अतएव उन्होंने भीमसिंह और धर्म्मसिंह अपने सेनापतियों को आक्रमणकारियों को भगाने के लिये भेजा। राजा की सेना वर्णनाशा नदी के किनारे एक स्थान पर आक्रमणकारियों पर टूट पड़ी और उसने शत्रुओं को, जिनके बहुत से लोग मारे गए, परास्त किया। इस जयलाभ से संतुष्ट हो कर भीमसिंह रणथंभौर की ओर लौटने लगा, और उलगख़ां अपनी सेना का प्रधान अंग साथ लिए छिप कर उसके पीछे पीछे बढ़ने लगा। अब यह हुआ कि भीमसिंह के सिपाही, जिन्होंने लूट में बहुत सा धन पाया था, उसको रक्षापूर्वक अपने अपने घर ले जाने को व्यग्र थे, और इसी व्यग्रता में उन्होंने अपने नायक को पीछे छोड़ दिया जिसके साथ केवल अनुचरों की एक छोटी सी मंडली रह गई। जब इस प्रकार भीमसिंह हिन्दावत घाटी के बीचो बीच पहुंचा तब उसने विजय के अभिमान में उन नगाड़ों और बाजों को ज़ोर से बजाने की आज्ञा दी जिनको उसने शत्रु से छीना था। इस कार्य्य का फल आचिन्त्यपूर्व और आपत्तिजनक हुआ। उलगख़ां ने अपनी सेना को छोटे छोटे दलों में भीमसिंह का पीछा करने की आज्ञा दे रक्खी थी और बाजा बजातेही उसे शत्रु के ऊपर जयलाभ की सूचना समझ, उस पर टूट पड़ने का आदेश दे रक्खा था। अतः जब मुसल्मानों के प्रथक प्रथक दलों ने नगाड़ों का शब्द सुना तब वे चारों ओर से घाटी में आ पहुँचे, और उलगख़ाँ भी एक ओर से आकर भीमसिंह से युद्ध करने लगा। हिन्दू सेनापति कुछ काल तक यह बेजोड़ की लड़ाई लड़ता रहा, पर अन्त में घायल हुआ और मारा गया। शत्रु के ऊपर यह जयलाभ पाकर उलगख़ाँ दिल्ली लौट गया।

यज्ञ पूर्ण होने के उपरान्त हम्मीर ने युद्ध का वृत्तान्त और

अपने सेनापति भीमसिंह की मृत्यु का समाचार सुना। उन्होंने धर्म्मसिंह को भीमसिंह का साथ छोड़ने के लिये धिक्कारा, उसको अन्धा कहा क्योंकि वह यह न देख सका कि उलगखां सेना के पीछे पीछे था। उन्होंने उसको क्लीव भी कहा क्योंकि वह भीमसिंह की रक्षा के लिये नहीं दौड़ा। इस प्रकार धर्म्मसिंह को धिक्कार कर ही सन्तुष्ट न होकर राजा ने उस दोषी सेनापति को अन्धा करने और उसको क्लीव करने की आज्ञा दी। सेनानायक के पद पर भी धर्म्मसिंह के स्थान पर भोजदेव हुए, जो राजा के एक प्रकार से भाई होते थे, और धर्म्मसिंह को देश निकालने का दण्ड भी सुनाया जा चुका था पर भोजदेव के बीच में पड़ने से उसका बर्त्ताव नहीं हुआ।

धर्म्मसिंह इस प्रकार अवयवभग्न और अपमानित होकर राजा के इस व्यवहार से अत्यन्त दुखित हुआ, और उसने बदला लेने का सङ्कल्प किया। अपने सङ्कल्प साधन के हेतु उसने राधादेवी नाम की एक वेश्या से, जिसका दरबार में बहुत मान था, गहरी मित्रता की। राधादेवी नित्य प्रति जो कुछ दरबार में होता उसकी रत्ती रत्ती सूचना अपने अन्धे मित्र को देती। एक दिन ऐसा हुआ कि राधादेवी बिलकुल उदास और मलीन घर को लौटी, और जब उसके अन्धे मित्र ने उसकी उदासी का कारण पूछा तब उसने उत्तर दिया कि आज राज के बहुत से घोड़े बेधरोग से मर गए इससे उन्होंने मेरे नाचने और गाने की ओर बहुत थोड़ा ध्यान दिया, और जान पड़ता है कि बहुत दिन तक यही दशा रहेगी। अन्धे पुरुष ने उसे प्रसन्न होने को कहा क्योंकि थोड़ेही दिनों मे सब फिर ठीक हो जायगा। उसे केवल राजा से यह जताने का अवसर देखते रहना चाहिए कि यदि धर्म्मसिंह अपने पहिले पद पर फिर हो जाय तो वह राजा को जितने घोड़े

हाल में मरे हैं उनसे दूने भेंट करें। राधादेवी ने अपना काम सफ़ाई से किया, और राजा ने लोभ के वश में होकर धर्म्मसिंह को उसके पहिले पद पर फिर आरूढ़ कर दिया।

धर्म्मसिंह इस प्रकार फिर से नियुक्त होकर बदले ही का विचार करने लगा। राजा का लोभ बढ़ाता गया और उसने अपने अत्याचार और लूट से प्र जा की ऐसी हीन दशा कर दी कि वह राजा से घृणा करने लगी। वह किसी को जिससे कुछ—घोड़ा, रुपया, कोई भी रखने योग्य पदार्थ—मिल सकता था न छोड़ता। राजा, जिसका कोष वह भरता था, अपने अंधे मंत्री से बहुत प्रसन्न रहता जिसने, सफलता से फूल कर भोजदेव से उसके विभाग का लेखा मांगा। भोज जानता था कि वह उसके पद से कुढ़ता है, अतः उसने राजा के पास जाकर धर्म्मसिंह के समस्त षड्यंत्र की बात कही और मंत्री के अत्याचार से रक्षा पाने के लिये उनसे प्रार्थना की। किन्तु हम्मीर ने भोज की बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और कहा कि धर्म्मसिंह को पूरा अधिकार सौंपा गया है, वह जो उचित समझे कर सकता है, इसलियें यह आवश्यक है कि और लोग उसकी आज्ञा मानें। भोज ने जब देखा कि राजा का चित्त उसकी ओर से फिर गया है तब उसने अपनी सम्पत्ति ज़ब्त होने दी और धर्म्मसिंह के आज्ञानुसार उसे लाकर राजा के भंडार में रक्खा। पर कर्त्तव्य के अनुरोध से वह अपने नायक के साथ अब भी जहां कहीं वे जाते रहता था। एक दिन राजा बैजनाथ के मन्दिर में पूजन के हेतु गए, और भोज को अपने दल में देखकर उन्होंने एक सभासद से जो पास खड़ा था, व्यंगपूर्वक कहा कि 'पृथ्वी अधम जनों से भरी है; किन्तु पृथ्वी पर सबसे अधम जीव कौआ है, जो क्रुद्ध उल्लू से अपने पर नोचवा कर भी अपने पुराने पेड़ पर के घोंसले में पड़ा रहता है।' भोज

ने इस व्यंग का अर्थ समझा और यह भी जाना कि यह उसी पर छोड़ा गया है। अत्यंत दुखी होकर वह घर लौट गया और उसने अपने अपमान की बात अपने छोटे भाई पीतम से कही । दोनों भाइयों ने अब देश छोड़ने का सङ्कल्प किया, और दूसरे दिन भोज हम्मीर के पास गया और उसने बड़ी नम्रता से तीर्थाटन के हेतु काशी जाने की अनुमति मांगी । राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और कहा कि 'काशी क्या जी चाहे तो तुम और आगे जा सकते हो—तुम्हारे कारण नगर उजड़ जाने का भय नहीं है ।' इस अविनीत बचन का उत्तर भोज ने कुछ न दिया । वह प्रणाम करके चला गया और उसने तुरंत काशी के हेतु प्रस्थान कर दिया । राजा भोजदेव के चले जाने से प्रसन्न हुआ और कोतवाल का पद, जो (उसके जाने से) खाली हुआ, रतिपाल को प्रदान किया ।

जब भोज शिरसा पहुँचा तब उसने अपने दिन के फेर पर विचार किया और सङ्कल्प किया कि इन अपमानों का बिना बदला लिए न रहना चाहिए । चित्त की इसी अवस्था में वह अपने भाई पीतम के साथ योगिनीपुर गया और वहां अलाउद्दीन से मिला । मुसल्मान सरदार अपने दरबार में भोज के आ जाने से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बड़े आदर से उसके साथ व्यवहार किया और जगरा का नगर और इलाक़ा उसे जागीर में दिया। अब से पीतम, तथा भोज के परिवार के और लोग, यहां रहने लगे और वह आप (भोज) दरबार में रहने लगा । अलाउद्दीन का अभिप्राय हम्मीर का वृत्त जानने का था इसलिये वह भेंट और पुरस्कार से दिन दिन भोज की प्रतिष्ठा बढ़ाने लगा और वह भी धीरे धीरे अपने नए स्वामी के हितसाधन में तत्पर हुआ ।

भोज को अपने पक्ष में समझ अलाउद्दीन ने एक दिन उससे

अकेले में पूछा कि हम्मीर को दबाने का कोई सुगम उपाय है। भोज ने उत्तर दिया कि हम्मीर ऐसे राजा पर विजय पाना कोई सहज काम नहीं है जिससे कुन्तल, मध्यदेश, अंग और कांची तक के राजा भयभीत रहते हैं, जो छः गुणों और तीन शक्तियों से सम्पन्न और एक विशाल और प्रवल सेना का नायक है, जिसकी ओर समस्त राजा शंका करते और आज्ञा मानते, कई राजाओं को दमन करने वाला पराक्रमी विराम जिसका भाई है, जिसकी सेवा में महिमा-साहि तथा और दूसरे निःशंक मोगल सर्दार रहते हैं, जिसने उसके भाई को हराकर स्वयं अलाउद्दीन को छकाया। भोज ने कहा कि न केवल हम्मीर के पास योग्य सेनापति ही हैं वरन् वे सब के सब उससे स्नेह रखते हैं। एक ओर के सिवाय और कहीं लोभ दिखाना असम्भव है। हम्मीर की सभा में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा है जो अपने को बेच सकता है। जैसे दीपक के लिये वायु का झोंका, कमल के लिये मेघ, सूर्य्य के लिये रात्रि, यती के लिये स्त्रियों का संग, दूसरे गुणों के लिये लोभ, वैसे ही हम्मीर के लिये अप्रतिष्ठा और नाश का कारण यह एक व्यक्ति है। भोज ने कहा कि वह समय भी हम्मीर के विरुद्ध चढ़ाई करने के लिये अनुपयुक्त नहीं है। इस वर्ष चौहान प्रदेश में खूब अन्न हुआ है। यदि किसी प्रकार अलाउद्दीन उसे रखने के पहिले ही किसानों से छीन सके तो वे जो कि अन्धे व्यक्ति के अत्याचार से पहिले ही से पीड़ित हैं, हम्मीर का पक्ष छोड़ने पर सम्मत हो सकते हैं।

अलाउद्दीन को भोज का विचार पसन्द आया और उसने तुरन्त उल्गखां को एक लाख सवारों की सेना लेकर हम्मीर के देश पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। उलगखां की सेना एक प्रबल धारा के समान जिन प्रदेशों से होकर निकलती उनके अधिपतियों को नरकट

के समान नवाती चली जाती। सेना इसी ढंग से हिन्दावत पहुंच गई तब उसके आने का समाचार हम्मीर तक पहुँचाया गया। इस पर उस हिन्दूराणा ने एक सभा की और विचार किया कि किन उपायों का अवलम्बन करना अच्छा होगा। यह निश्चय हुआ कि वीरम और राज्य के शेष आठ बड़े पदाधिकारी शत्रु से युद्ध करने जांय। तुरन्त राजा के सेनानायकों ने सेना को आठ भागों में विभक्त किया और आठों दिशाओं से आकर वे मुसल्मानों पर टूट पड़े। वीरम पूर्व से आया और महिमासाहि पश्चिम से। जाजदेव दक्षिण से और गर्भरूक उत्तर की ओर से बढ़ा। रतिपाल अग्निकोण से आया और तिचर मोगल ने वायुकोण से आक्रमण किया। रणमल ईशानकोण से आया और वैचर ने नैॠत्य की ओर से आकर आक्रमण किया। राजपूत लोग बड़े पराक्रम के साथ अपने कार्य्य में तत्पर हुए। उनमें से कई एक ने शत्रु की खाइयों को मिट्टी और कूड़े करकट से भर दिया, कई एक ने मुसल्मानों के लकड़ी के घेरों में आग लगा दी। कुछ लोगों ने उन के डेरों (खेमों) की रस्सियों को काट डाला। मुसल्मान लोग शस्त्र लेकर खड़े थे और डींग हांक कर कहते थे कि हम राजपूतों को घास के समान काट डालेंगे। दोनों दल साहस पूर्वक जी खोल कर लड़े; किन्तु राजपूतों के लगातार आक्रमण के आगे मुसल्मानों को हटना पड़ा। अतएव उनमें से बहुतों ने रणक्षेत्र त्याग दिया और वे अपना प्राण लेकर भागे। कुछ काल पीछे समस्त मुसल्मानी सेना ने इसी रीति का अनुसरण किया और वह कायरता से युद्धक्षेत्र से भागी; राजपूतों की पूरी विजय हुई।

जब युद्ध समाप्त हो गया तब सीधे सादे राजपूत लोग युद्ध स्थल में अपने मरे और घायल लोगों को उठाने आए। इस खोज में उन्हों ने बहुत सा धन, शस्त्र, हाथी और घोड़े पाए। शत्रु की बहुत सी

स्त्रियाँ उनके हाथ आईं। रतिपाल ने आते हुए प्रत्येक नगर में उनसे मट्ठा बेचवाया।

हम्मीर शत्रु के ऊपर अपने सेनापतियों की इस विजय प्राप्ति से अत्यंत प्रसन्न हुए। इस घटना के उपलक्ष में उन्होंने एक बड़ा दरबार किया। दरबार में राजा ने रतिपाल को सोने की सिकरी पहनाई, और उसकी तुलना युद्ध के हाथी से की जो सुवर्ण के पट्टे का अधिकारी होता है। दूसरे सरदार और सिपाही लोग भी अपनी अपनी योग्यता के अनुसार पुरस्कृत किए गए और अनुग्रहपूर्वक उन्हें अपने अपने घर जाने की आज्ञा मिली।

मोगल सरदारों के सिवाय और सब लोग चले गए। हम्मीर ने यह बात देखी और कृपापूर्वक उनसे रह जाने का कारण पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि कृतघ्न भोज को, जो जगरा में जागीर भोग रहा है, दण्ड देने के पहिले हम तलवार म्यान में करना और अपने घर जाना बुरा समझते हैं। उन्होंने कहा कि राजा के सम्बन्ध के कारण ही हम लोगों ने उसे अब तक जीता छोड़ा है; किन्तु अब वह इस सहनशीलता के योग्य नहीं रहा क्योंकि उसी की प्रेरणा से शत्रु ने रणथम्भौर प्रदेश पर चढ़ाई की थी। अतएव उन्होंने जगरा पर चढ़ाई करके भोज पर आक्रमण करने की अनुमति मांगी। राजा ने प्रार्थना स्वीकार की और दोनों मोगलों ने तुरन्त जगरा की ओर प्रस्थान किया। उन्होंने नगर को घेर कर ले लिया और पीतम को कई और मनुष्यों के साथ बन्दी बनाकर वे उसे फिर रणथम्भौर ले आए।

उलगखां पराजय के पीछे तुरंत दिल्ली लौट गया और जो कुछ हुआ था अपने भाई से उसने सब कह सुनाया। उसके भाई ने उसपर कायरता का दोष लगाया; अपने भागने का दोष उसने यह कहकर

मिटाथा कि उस अवस्था में मेरे लिये केवल एक यही. उपाय था जिससे इस संसार में एक बेर फिर मैं आपका दर्शन करता और चौहान से लड़ने के लिये दूसरा अवसर पाता । उलगखां ने बात गढ़ कर छुट्टी भी न पाई थी कि क्रोध से लाल भोज भीतर आया । उसने अपने उपवस्त्र को पृथ्वी पर बिछा दिया और उसपर इस प्रकार लोटने और अंडबंड बकने लगा जैसे उसपर प्रेत चढ़ा हो । अलाउद्दीन को उसका यह विलक्षण आचरण कुछ कम बुरा नहीं लगा; उसने उसका कारण पूछा । भोज ने उत्तर दिया कि मेरे लिये इस विपत्ति को कभी भूलना कठिन है जो आज मुझपर पड़ी है; क्योंकि महिमासाहि ने जगरा में जाकर मुझपर आक्रमण किया और मेरे भाई पीतम को बन्दी करके हम्मीर के पास वह ले गया । भोज ने कहा लोग घृणा से मेरी ओर उँगली दिखाकर अब यही कहेंगे कि यह एक ऐसा मनुष्य है जिसने अधिक पाने के लालच से अपना सर्वस्व खो दिया । असहाय और अनाथ होकर मैं पृथ्वी पर अब भी बेखटके नहीं लेट सकता क्योंकि वह समस्त हम्मीर की है; इसीलिये मैंने अपना वस्त्र बिछा दिया है जिसमें उसी पर मैं उस शोक में छटपटाऊँ जिसने मुझ में खड़े रहने की शक्ति भी नहीं रहने दी है ।

अपने भाई की सहायता की कथा से अलाउद्दीन के हृदय में क्रोध की अग्नि पहिले ही से जल उठी थी अब भोज की ये बातें उस अग्नि में आहुति के समान हुईं । हृदय के आवेग में अपनी पगड़ी को पृथ्वी पर पटक कर उसने कहा कि हम्मीर की मूर्खता उस मनुष्य की सी है जो समझता है कि मैं सिंह के कपाल पर पैर रख सकता हूं, और प्रतिज्ञा की कि मैं चौहानों की समस्त जाति ही को नष्ट कर डालूंगा । उसने तुरंत अनेक देशों के राजाओं के पास पत्र भेजे और हम्मीर के विरुद्ध लड़ाई में योग देने के लिये उन्हें

बुलाया। अंग, तैलंग, मगध, मैसूर, कलिङ्ग, बङ्ग, भोट, मेड़पाट, पञ्चाल, बङ्गाल, थमिम, भिल्ल, नेपाल तथा दाहल के राजा और कुछ हिमालय के सरदार अपना अपना दल आक्रमणकारी सेना में भरने को लाए। इस बहुरंगिनी सेना में कुछ लोग ऐसे थे जो युद्ध की देवी के प्रेम से आए थे, और कुछ ऐसे थे जो लूट की चाह से आक्रमण-कारियों के दल में भरती हुए थे। कुछ लोग केवल उस घमासान युद्ध के दर्शक ही होने के हेतु आए थे जो होने वाला था। हाथी घोड़ों, रथों और मनुष्यों की इतनी कसामस थी कि भीड़ में कहीं तिल रखने की जगह नहीं थी। इस भारी समारोह के साथ दोनों भाई नसरतखां और उलग़खां रणथम्भौर प्रदेश की ओर चले।

अलाउद्दीन छोटे से दल के साथ इस अभिप्राय से पीछे रह गया जिसमें राजपूतों को यह भय बना रहे कि अभी बादशाह के पास सेना बची है।

सेना की संख्या इतनी अधिक थी कि मार्ग में नदियों का जल चुक जाता था इससे यह आवश्यक हुआ कि सेना किसी एक स्थान पर कुछ घंटों से अधिक न ठहरे। कूच पर कूच बोलते दोनों सेनापति रणथंभौर प्रदेश की सीमा पर पहुंच गए इससे आक्रमणकारियों के हृदयों में भिन्न भिन्न भाव उत्पन्न हुए। वे लोग जो पहिली लड़ाई में सम्मिलित नहीं हुए थे कहते थे कि विजय पाना निश्चित है क्योंकि राजपूतों के लिये ऐसी सेना का सामना करना असम्भव है। किन्तु पहिली चढ़ाई के योद्धा लोग ऐसा नहीं समझते थे और अपने साथियों से कहते थे कि याद रखना हम्मीर की सेना से सामना करना है अतएव युद्ध के अन्त तक डींग हांकना बंद रखना चाहिए।

जब सेना उस घाटी में पहुंची जहां उलग़खां की पराजय और

दुर्गति हुई थी तब उसने अपने भाई को शिक्षा दी कि अपनी शक्ति ही पर बहुत भरोसा न करना चाहिए वरन, चूंकि स्थान विकट और हम्मीर की सेना बली और निपुण है, इससे यह चाल चलनी चाहिए कि किसी को हम्मीर की सभा में भेज दें जो दो चार दिन तक सन्धि की बात चीत में उन्हें बहलाए रहे; और इस बीच में सेना कुशलपूर्वक पर्वतों को पार करे और अपनी स्थिति दृढ़ कर ले। नसरत खां ने अपने भाई की इस अनुभवपूर्ण बात को माना, और गोल्हणदेव उन बातों का प्रस्ताव करने के लिये भेजा गया जिनसे मुसल्मान लोग हम्मीर के साथ सन्धि कर सकते थे। बातचीत होने तक हम्मीर के लोगों ने आक्रमणकारी सेना को उस भयानक घाटी को बे रोक टोक पार करने दिया। अब खां ने अपने भाई को तो उस मार्ग के एक पार्श्व में स्थित किया जो मंडी पथ कहलाता था और उसने स्वयं श्रीमंडप के दुर्ग को छेंका। साथी राजाओं के दल जैत्रसागर के चारों ओर टिकाए गए।

दोनों पक्ष अपनी अपनी घात में थे। मुसल्मानों ने समझा कि हम आक्रमण आरम्भ करने के लिये धूर्त्तता से उत्तम स्थिति पा गए हैं; उधर राजपूतों ने विचारा कि शत्रु अन्तर्भाग में इतनी दूर बढ़ आए हैं कि वे अब हमसे किसी प्रकार भाग नहीं सकते।

रणथंभौर में खां के दूत ने राजा की आज्ञा से दुर्ग में प्रवेश पाया; जो कुछ उसने वहां देखा उससे उसपर राजा के प्रताप का आतङ्क छा गया। उसके हेतु जो दरबार हुआ उसमें वह गया, और आवश्यक शिष्टाचार के उपरान्त उसने साहसपूर्वक उस सँदेसे को कहा जो लेकर वह आया था। उसने कहा 'मैं विख्यात अलाउद्दीन के भाई उलगखां और नसतरखां का दूत होकर राजा के दरबार में आया हूं; मैं राजा के हृदय में, यदि सम्भव हो, तो यह बात जमाने

के लिये आया हूं कि अलाउद्दीन ऐसे महाविजयी का सामना करना कैसा निष्फल है और उन्हें अपने सरदार से सन्धि कर लेने की सम्मति देने आया हूं।' उसने हम्मीर से सन्धि के लिये यह चन्द शर्तें बतलाईं—"चाहे आप मेरे सरदार को एक लाख मोहर, चार हाथी और तीन सौ घोड़े भेंट करें और अपनी बेटी अलाउद्दीन को ब्याह दें, अथवा उन चार विद्रोही मोगल सरदारों को मेरे हवाले कर दें जो अपने स्वामी के कोपभाजन होकर अब आपकी शरण में रहते हैं।" दूत ने फिर कहा "यदि आप अपने राज्य और प्रताप को शान्ति पूर्वक भोगना चाहते हों तो इन दो में से किसी शर्त को मान कर अपना अभिप्राय सिद्ध करने के लिये आपको अच्छा अवसर मिला है; इससे आपको शत्रुओं का नाश करने वाले बादशाह अलाउद्दीन की कृपा और सहायता प्राप्त होगी जिसके पास असंख्य दृढ़ दुर्ग, सुसज्जित शस्त्रागार और मेगज़ीन हैं, जिसने देवगढ़ ऐसे ऐसे अगणित अजेय दुर्गों पर अधिकार करके महादेव को भी लज्जित किया क्योंकि उनकी (महादेव की) ख्याति तो अकेले त्रिपुर के गढ़ को सफलतापूर्वक अधिकृत करने से हुई है।

हम्मीर जो दूत के बचन अधीर होकर सुनता रहा इस अपमानकारी सँदेसे से बहुतही क्रुद्ध हुआ और उसने श्री मोल्हणदेव से कहा कि यदि तुम भेजे हुए दूत न होते तो जिस जीभ से तुमने ये अपमानसूचक बातें कही हैं वह काट ली गई होती। हम्मीर ने न कि केवल इन शर्तों में से किसी को मानना अस्वीकार ही किया वरन् अपनी ओर से उतने खड्ग के आघात स्वीकार करने के लिये अलाउद्दीन से प्रस्ताव किया जितनी मुहर हाथी और घोड़े माँगने का उसने साहस किया; और दूत से यह भी कहा कि मुसल्मान सरदार का इस रणभिक्षा को अस्वीकार करना सूअर खाने के बराबर होगा। बिना और किसी शिष्टाचार के दूत सामने से हटा दिया गया।

रणथंभौर की सेना युद्ध के लिये सुसज्जित होने लगी । बड़ी योग्यता और पराक्रम के सेनापति भिन्न भिन्न स्थानों की रक्षा के हेतु नियुक्त हुए । दुर्ग की दीवारों पर रक्षकों को धूप से बचाने के लिये इधर उधर डेरे गाड़े गए । कई स्थानों पर उबलता हुआ तेल और राल रक्खी गई कि यदि आक्रमणकारियों मे से कोई निकट आने का साहस करे तो उसके शरीर पर वह छोड़ दी जाय, उपयुक्त स्थानों पर तोपें चढ़ा दी गईं । अन्त में मुसल्मानी सेना भी रणथंभौर दुर्ग के सामने आई । कई दिन तक घमासान युद्ध होता रहा । नसरत खां अचानक एक गोली के लगने से मर गया और बरसात के आ जाने पर उलगखां को लड़ाई बन्द करनी पड़ी । वह दुर्ग से कुछ दूर हट गया और उसने अलाउद्दीन के पास अपनी भयानक स्थिति का समाचार भेजा । उसने नसरत खां का शव भी समाधिस्थ करने के निमित्त उसके पास भेज दिया । अलाउद्दीन ने यह समाचार पाकर तुरंत रणथंभौर की ओर प्रस्थान किया । यहां पहुंच कर उसने तुरंत अपनी सेना को दुर्ग के द्वार की ओर बढ़ाया और उसे छेंक लिया ।

हम्मीर ने इन कार्य्यों की तुच्छता सूचित करने के लिये दुर्ग की दीवारों पर कई जगह सूप के झंडे गड़वा दिए । इससे यह अभिप्राय झलकता था कि दुर्ग के सम्मुख अलाउद्दीन के आगमन से राजपूतों को कुछ भी बोझ वा कष्ट नहीं मालूम होता था । मुसल्मान सरदार ने देखा कि उससे साधारण धैर्य्य और साहस के मनुष्यों से पाला नहीं पड़ा है, और उसने हम्मीर के पास सँदेसा भेजकर यह कहलाया कि मैं तुम्हारी वीरता से बहुत प्रसन्न हूं, और ऐसा पराक्रमी शत्रु चाहे जिस बात की प्रार्थना करे उसे मानने में मैं प्रसन्न हूं । हम्मीर ने उत्तर दिया कि यदि अलाउद्दीन जो मैं चाहूं उसे देने में

प्रसन्न है तो मेरे लिये इससे बढ़कर सन्तोष की बात और कोई नहीं होगी कि वह दो दिन मेरे साथ युद्ध करे, और मुझे आशा है कि मेरी यह प्रार्थना स्वीकृत होगी। मुसल्मान सरदार ने इस उत्तर की यह कह कर बड़ी प्रशंसा कि वह सर्वथा उसके प्रतिद्वन्दी के साहस के योग्य है, और उससे दूसरे दिन युद्ध रोपने का बचन दिया। इसके अनन्तर अत्यंत भीषण और कराल युद्ध हुआ। इन दो दिनों में मुसल्मानों के कम से कम ८९००० आदमी मारे गए। दोनों योद्धाओं के बीच कुछ दिन विश्राम करना निश्चित होने पर लड़ाई कुछ काल के लिये बन्द हुई।

इस बीच में एक दिन राजा ने दुर्ग के प्राचीर पर राधादेवी का नाच कराया; उनके चारों ओर बड़ा जमात्र था। यह स्त्री कम से क्षण क्षण पर घूमती हुई, जिसे संगीत जानने वाले ही अच्छी तरह समझ सकते थे, जान बूझ कर अपनी पीठ अलाउद्दीन की ओर फेर लेती थी जो किले से थोड़ी दूर नीचे अपने डेरे में बैठा यह सब देख रहा था। कोई आश्चर्य्य नहीं कि वह इस आचरण से रुष्ट हुआ, और कोप करके अपने पास के लोगों से उसने कहा कि क्या मेरे असंख्य साथियों में कोई ऐसा है जो इस स्त्री को इतनी दूर से एक तीर से मारकर गिरा सकता है। एक सरदार ने उत्तर दिया कि मैं केवल एक आदमी को जानता हूं जो यह काम कर सकता है, वह उड्डानसिंह है जिसे बादशाह ने कैद कर रक्खा है। कैदी तुरंत छोड़ दिया गया और अलाउद्दीन के पास लाया गया जिसने उसे उस सुन्दर लक्ष्य पर अपना कौशल दिखाने की आज्ञा दी। उड्डानसिंह ने आज्ञानुसार वैसा ही किया, और एक क्षण में उस वाराङ्गणा की सुन्दर देह बाण से बिध कर दुर्ग की दीवार पर से सिर के बल नीचे गिरी।

इस घटना से महिमासाहि को बहुत क्रोध हुआ और उसने राजा

से अलाउद्दीन के साथ भी वही व्यवहार करने की अनुमति मांगी जो उसने बेचारी राधादेवी के साथ किया था। राजा ने उत्तर दिया कि मुझे तुम्हारी धनुर्विद्या का असाधारण कौशल विदित है, किन्तु मैं नहीं चाहता कि अलाउद्दीन इस रीति से मारा जाय क्योंकि उसकी मृत्यु से मेरे साथ शस्त्र ग्रहण करने वाला कोई पराक्रमी शत्रु न रह जायगा। महिमासाहि ने तब प्रत्यञ्चा पर चढ़े हुए बाण को उड्डानसिंह पर छोड़ा और उसे मार गिराया। महिमासाहि के इस कौशल ने अलाउद्दीन को इतना सशंकित कर दिया कि वह तुरंत अपने डेरे को झील के पूर्वीय पार्श्व से हटाकर पश्चिम की ओर लेगया जहां ऐसे आक्रमणों से अधिक रक्षा हो सकती थी। जब डेरा हटाया गया तब राजपूतों ने देखा कि शत्रु ने नीचे नीचे सुरंग तय्यार कर ली है, और खाई के एक भाग पर मिट्टी से ढका हुआ लकड़ी और घास का पुल बांधने का यत्न किया है। राजपूतों ने इस पुल को तोपों से नष्ट कर दिया, और सुरंग में खौलता हुआ तेल डाल कर उन लोगों को मारडाला जो भीतर काम कर रहे थे। इस प्रकार अलाउद्दीन का गढ़ लेने का सब यत्न निष्फल हुआ। उसी समय वर्षा से भी उसे बहुत कष्ट होने लगा जो मूसलाधार होती थी। अतएव उसने हम्मीर के पास सँदेसा भेजा कि कृपा करके रतिपाल को मेरे डेरे में भेज दीजिए क्योंकि मुझे उनसे इस अभिप्राय से बात चीत करने की इच्छा है कि जिसमें हमारे और आपके बीच का झगड़ा शान्तिपूर्वक तै हो जाय।

राजा ने रतिपाल को जाकर अलाउद्दीन की बात सुनने की आज्ञा दी। रणमल रतिपाल के प्रभाव से कुढता था और नहीं चाहता था कि वह इस काम के लिये चुना जाय।

अलाउद्दीन रतिपाल से बड़े ही आदर के साथ मिला। उसके दरबार के डेरे में प्रवेश करने पर मुसल्मान सरदार अपने स्थान पर

से उठा और उसे आलिङ्गन करके उसने अपनी गद्दी पर बैठाया और वह आप उसके बगल में बैठ गया। उसने अमूल्य भेंट उसके सामने रखवाई तथा और भी पुरस्कार देने का बचन दिया। रतिपाल इस सुन्दर व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुआ। उस धूर्त्त मुसलमान ने यह देखकर और लोगों को वहां से हट जाने की आज्ञा दी। जब वे सब चले गए तब उसेन रतिपाल से बात चीत आरम्भ की। उसने कहा—"मैं अलाउद्दीन मुसल्मानों का बादशाह हूँ, और मैंने अब तक सैकड़ों दुर्ग ढहाए और लिए हैं। किन्तु शस्त्र के बल से रणथंभौर को लेना मेरे लिये असम्भव है। इस दुर्ग को घेरने से मेरा अभिप्राय केवल उसके अधिकार की ख्याति पाना है। मै आशा करता हूँ (जब कि आपने मुझसे मिलना स्वीकार किया है) कि मैं अपना मनोरथ सिद्ध करूंगा, और अपनी इच्छा पूरी करने में मुझे आपसे कुछ सहायता पाने का भरोसा है। मैं अपने लिये और अधिक राज्य और क़िले नहीं चहता। जब मैं इस गढ़ को लूंगा तब इसके सिवाय और क्या कर सकता हूं कि उसे आप ऐसे मित्र को देदूं? मुझे तो उसके प्राप्त करने की ख्याति ही से प्रसन्नता होगी।" ऐसी ऐसी फुसलाहटों से रतिपाल का मन फिर गया और उसने इस बात का अलाउद्दीन को निश्चय भी करा दिया। इस पर, अलाउद्दीन अपने लक्ष्य को और भी दृढ़ करने के लिये रतिपाल को अपने हरम में ले गया और वहां उसने उसे अपनी सब से छोटी बाहिन के साथ खान पान करने के लिये एकान्त में छोड़ दिया। यह हो चुकने पर रतिपाल मुसल्मानों के डेरे से निकल कर दुर्ग को लौट आया।

रतिपाल इस प्रकार अलाउद्दीन के पक्ष में होगया। अतएव जब वह राजा के पास आया तब उसने जो कुछ मुसल्मानों के डेरे में देखा था और जो कुछ अलाउद्दीन ने उससे कहा था, उसका सच्चा

वृत्तान्त नहीं कहा। यह न कहकर कि अलाउद्दीन का बल राजपूतों के लगातार आक्रमण से बिलकुल टूट गया है और वह गढ़ लेने का नाम मात्र करके लौटना चाहता है उसने कहा कि वह न कि केवल राजा से दीनता पूर्वक अधीनता स्वीकार कराने ही पर उतारू है वरञ्च उसमें अपने धमकियों को सच्चा कर दिखाने की सामर्थ्य है। रतिपाल ने कहा कि अलाउद्दीन इस बात को मानता है कि राजपूतों ने उसके कुछ सिपाहियों को मारा है किन्तु इसकी उसे कुछ परवा नहीं, 'गोजर की एक टांग टूटने से वह लँगड़ा नहीं कहा जा सकता'। उसने हम्मीर को सम्मति दी कि ऐसी दशा में आपको स्वयं इसी रात को रणमल से मिलना चाहिए और उसे आक्रमणकारियों को हटाने पर उद्यत करना चाहिए, देशद्रोही रतिपाल ने कहा कि रणमल एक असाधारण योद्धा है किन्तु वह शत्रुओं को हटाने का पूरा पूरा उद्योग नहीं करता है क्योंकि वह राजा से किसी न किसी बात के लिये दुखी है। रतिपाल बोला कि राजा के मिलने से सब बातें ठीक हो जांयगी।

राजा से मिलने के उपरान्त रतिपाल रणमल से मिलने गया और वहां जाकर मानों अपने पुराने मित्र को सर्वनाश से बचाने के निमित्त उसने कहा कि न जाने क्यों राजा का चित्त तुम्हारी ओर से फिर गया है इससे युद्ध के पाहिले ही हल्ले में तुम शत्रु की ओर हो जाना। उसने कहा कि हम्मीर इसी रात को तुम्हें बन्दी बनाना चाहता है। उसने उससे वह घड़ी भी बतलाई जब राजा उसके पास इस अभिप्राय से आवेंगे। यह सब करके रतिपाल चुपचाप अपनी इस शठता का परिणाम देखने की प्रतीक्षा करने लगा।

जब रतिपाल हम्मीर से मिलने गया था तब उनके पास उनका भाई बीरम भी था। उसने अपने भाई से यह विश्वास प्रगट किया

कि रतिपाल ने जो कुछ कहा है वह सत्य नहीं है। शत्रुओं ने उसे अपनी ओर मिला लिया है। उसने कहा कि बोलते समय रतिपाल के मुहँ से मद्य की गंध आती थी, और मद्यप का विश्वास करना उचित नहीं। कुल का अभिमान, शील, विवेक, लज्जा, स्वामिभक्ति, सत्य और शौच ये ऐसे गुण हैं जो मद्यपों में नहीं पाए जा सकते। अपनी प्रजा में राजद्रोह का प्रचार रोकने के लिये वीरम ने अपने भाई को रतिपाल के बध की सम्मति दी। किन्तु राजा ने इस प्रस्ताव को यह कह कर अस्वीकार किया कि मेरा दुर्ग इतना दृढ़ है कि वह शत्रु को किसी दशा में भी रोक सकता है; किन्तु यदि कहीं संयोग वश रतिपाल के बध के अनन्तर यह गढ़ शत्रुओं के हाथ में पड़ जायगा तो लोगों को यह कहने को हो जायगा कि एक निर्दोष मनुष्य के बध के दुष्कर्म्म के कारण उसका पतन हुआ।

इस बीच में रतिपाल ने राजा के रनिवास में यह खबर फैलाई कि अलाउद्दीन केवल राजा की कन्या से विवाह करना चाहता है और यदि उसकी यह इच्छा पूरी होजाय तो वह सन्धि करने के लिये प्रस्तुत है, क्योंकि वह और कुछ नहीं चाहता। इसपर रानियों ने राजकन्या से राजा के पास जाकर यह कहने को कहा कि मैं अला-उद्दीन से विवाह करने में सहमत हूं। वह कन्या वहां गई जहां उसके पिता बैठे थे और उसने उनसे अपने राज्य और शरीर की रक्षा के हेतु अपने को मुसलमान को दे डालने की प्रार्थना की। उस (कन्या) ने कहा "हे पिता मैं एक व्यर्थ कांच के टुकड़े के समान हूं और आपका राज्य और प्राण चिन्तामणि वा पारस पत्थर के समान है; मैं बिनती करती हूं कि आप उनको रखने के लिये मुझको फेंक दीजिए।"

जब वह भोली भाली लड़की इस प्रकार हाथ जोड़ कर बोली तब राजा का जी भर आया। उन्होंने उससे कहा, "तुम अभी

बालिका हो इससे जो कुछ तुम्हें सिखाया गया है उसके कहने में तुम्हारा दोष नहीं। किन्तु मैं नहीं कह सकता कि उनको क्या दण्ड मिलना चाहिए जिन्होंने तुम्हारे हृदय में ऐसे ख्याल भर दिए हैं। स्त्रियों का अङ्ग भङ्ग करना राजपूतों का काम नहीं, नहीं तो उनकी जीभ काट ली जाती जिन्होंने ऐसी कुत्सित बात मेरी कन्या के कान में कही" हम्मीर ने फिर कहा "पुत्री ! तुम अभी इन बातों को समझने के लिये बहुत छोटी हो इससे तुम्हें बतलाना व्यर्थ है। किन्तु तुम्हें म्लेच्छ मुसल्मान को दे कर सुख भोगना मेरे लिये ऐसाही है जैसा अपनाही मांस खा कर जीवन काटना। ऐसे सम्बन्ध से मेरे कुल में कलङ्क लगेगा, मुक्ति की आशा नष्ट होगी, इस संसार में हमारे अन्तिम दिन कडुए होजांयगे। मैं ऐसे कलंकित जीवन की अपेक्षा दश हज़ार बार मरना अच्छा समझता हूं"। अब वे चुप हुए और दृढ़ता तथा स्नेहपूर्वक अपनी कन्या को चले जाने को उन्होंने कहा।

राजा, रतिपाल की सम्मति के अनुसार सन्ध्या के समय अपनी शंकाओं को मिटाने के लिये रणमल के डेरे पर जाने को तैय्यार हुए, साथ में उन्होने बहुत थोड़े आदमी लिए। जब वे रणमल के डेरे के निकट पहुंचे तब उसको (रणमल को) रतिपाल की बात याद आई, वह यह समझ कर कि यदि मैं यहां ठहरुं गा तो मेरा बन्दी होना निश्चय है, अपने दल के सहित गढ़ से भाग निकला और अलाउद्दीन की ओर जा मिला ; यह देख कर रतिपाल ने भी वैसाही किया।

राजा इस प्रकार ठगे और घबड़ाए हुए कोट में लौट आए और उन्होंने भंडारी को बुलाकर भंडार की दशा पूछी कि कितने दिन तक सामान चल सकता है। भंडारी ने सच्ची बात कहने में अपने प्रभाव की हानि समझ, कहा कि सामान बहुत दिन तक के लिये काफ़ी है। किन्तु ज्योंहीं यह कह कर वह फिरा त्योंही विदित

हुआ कि राजभण्डार में कुछ भी अन्न नहीं है। राजा ने यह समाचार पाकर वीरम को उसके मारने और उसकी समस्त सम्पत्ति पद्मसागरें मे फेंक देने की आज्ञा दी।

उस दिन की अनेक आपत्तियों को झेलकर, राजा शिथिलता से अपनी शय्या पर जा पड़े। किन्तु उनकी आखों में उस भयावनी रात को नींद नहीं आई। जिन लोगों के साथ वे भाई से बढ़कर स्नेह का व्यवहार करते थे उनका उन्हें ऐसी दशा में अकेले छोड़कर एक एक करके चल खड़े होना उनको असह्य जान पड़ता था। जब सबेरा हुआ तब उन्होंने नित्यक्रिया की और दरबार में बैठकर वे उस समय की दशा पर बिचार करने लगे। उन्होंने सोचा कि जब हमारे राजपूतों ही ने हमें छोड़ दिया तब महिमासाहि का क्या विश्वास, जो मुसल्मान और विजातीय है। इसी दशा में उन्होंने महिमासाहि को बुला भेजा और उससे कहा "सच्चा राजपूत होकर मेरा यह धर्म्म है कि देश की रक्षा में मैं अपना प्राण त्याग दूं, किन्तु मेरे विचार में यह अनुचित है कि वे लोग जो मेरी जाति के नहीं मेरे हेतु युद्ध में अपने प्राण खोवें, इससे मेरी इच्छा है कि तुम कोई रक्षा का ऐसा स्थान बतलाओ जहां तुम सपरिवार जा सकते हो जिससे मैं तुम्हें कुशलपूर्वक वहां पहुंचवा दूं"।

राजा के इस शील से संकुचित होकर, महिमासाहि बिना कुछ उत्तर दिए, अपने घर लौट गया, और वहां तलवार लेकर उसने अपने जनाने के सब लोगों को काट डाला और हम्मीर के पास आकर कहा कि मेरी स्त्री और मेरे लड़के जाने को तैय्यार हैं किन्तु मेरी स्त्री एक बेर अपने राजा का मुंह देखना चाहती है जिसकी कृपा से उसने इतने दिनों तक सुख किया। राजा ने यह प्रार्थना अंगीकार की और अपने भाई वीरम के साथ वे महिमासाहि के घर गए। किन्तु वहां जाने पर

यह हत्याकाण्ड देख उनके आश्चर्य्य और शोक का ठिकाना न रहा। राणा, माहिमासाहि को हृदय से लगाकर बच्चे के समान रोने लगे। उन्होंने उससे चले जाने को कहने के कारण अपने को दोषी ठहराया और कहा कि ऐसी अलौकिक स्वामिभक्ति का बदला नहीं हो सकता। अतः धीरे धीरे, वे कोट में लौट आए और प्रत्येक वस्तु को गई हुई समझ, उन्होंने अपने लोगों से कहा कि तुम लोग जो उचित समझो वह करो मैं तो शत्रु के बीच लड़कर प्राण देने को उद्यत हूं। इसकी तैय्यारी में, उनके परिवार की स्त्रियां रंगदेवी के साथ चिता पर जलकर भस्म हो गई। जब राजा की कन्या चिता पर चढ़ने लगी तब राजा शोक के वशीभूत हुए। वे उसे हृदय से लगाकर छोड़ते ही न थे। किन्तु उसने अपने को पिता की गोद से छुड़ाकर अग्नि में विसर्जन कर दिया। जब चौहानों की सती साध्वी ललनाओं की राख के ढेर के अतिरिक्त और कुछ न रह गया तब हम्मीर ने मृतक संस्कार किया और तिलाञ्जलि देकर उनकी आत्माओं को शांत किया। इसके अनन्तर वे अपनी बची हुई स्वामिभक्त सेना को लेकर गढ़ के बाहर निकले और शत्रुओं पर टूट पड़े। भीषण सम्मुख. युद्ध उपस्थित हुआ। पहिले वीरम युद्ध की कसामस के बीच लड़ते हुए गिरे, फिर माहिमासाहि के हृदय में गोली लगी। इसके पीछे जाज, गंगाधर, ताक, और क्षेत्रसिंह परमार ने उनका साथ दिया। सबके अन्त में महापराक्रमी हम्मीर सैंकड़ों भालों से विधे हुए गिरे। प्राण का लेश रहते भी शत्रु के हाथ में पड़ना बुरा समझ उन्होंने एकही बेर में अपने हाथों से सिर को धड़ से जुदा कर दिया और इस प्रकार अपने जीवन को शेष किया। इस प्रकार चौहानों के अन्तिम राजा हम्मीर का पतन हुआ! यह शोचनीय घटना उनके राज्य के अठारहवें वर्ष में श्रावण के महीने में हुई।

यहां पर यह कथा समाप्त होती है। दोनों के मिलान करने पर मुख्य मुख्य बातों में आकाश पाताल का अन्तर जान पड़ता है। किस में कहां तक सत्यता है इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है। दोनों कथाओं मे हम्मीर के पिता का नाम जैत्रसिंह लिखा है अतएव इस सम्बन्ध में कोई सन्देह की बात नहीं जान पड़ती। हम्मीररासो में लिखा है कि हम्मीर का जन्म विक्रम संवत् ११४१ शाके १००८ में हुआ * साथही यह भी लिखा है कि अलाउद्दीन का जन्म भी इसी दिन हुआ। इस हिसाब से हम्मीर और अलाउद्दीन का जन्म १०८४ ई० में हुआ। पर अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थों से यह बात ठीक नहीं जान पड़ती। हम्मीर महाकाव्य में हम्मीर के गद्दी पर बैठने का संवत् १३३० (सन् १२८३ ई०) दिया है। यह ठीक जान पड़ता है। फिर हम्मीर महाकाव्य में लिखा है कि चौहान राज की मृत्यु उनके राज्य के अठारहवें वर्ष में अर्थात् संवत् १३४८ सन् १३०१ ई० में हुई। अमीर खुशरू की तारीख आलाई में यह तिथि तीसरी जीलकाद ७०० हिजरी (जुलाई १३०१ ई०) दी है। मुसल्मानी इतिहासों से विदित है कि सन् १२९६ में सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मदशाह अपने चाचा जलालुद्दीन फीरोजशाह को मार कर गद्दी पर बैठा, और सन् १३१६ ई० तक राज्य करता रहा। इस अवस्था में हम्मीररासो में दिए हुए संवत् ठीक नहीं हो सकते। कदाचित यहां यह कह देना भी अनुचित न होगा कि हम्मीररासो में हम्मीर की जो जन्म कुंडली दी है वह भी ठीक नहीं है।

दूसरी बात जो इस काव्य के सम्बन्ध में विचार करने की है वह यह है कि हम्मीर की अलाउद्दीन से लड़ाई क्यों हुई। हम्मीर

---

* यहां का पाठ मूल प्रति में अशुद्ध छप गया है। उसका शुद्ध रूप यह होगा।
ससि वेद रुद्र संवत गिनो। अंग खाभ्र चित साक।
शशि वेद रुद्र संवत सुजान (पृष्ठ १२)

रासो तथा ऐसेही अन्य हीन्दी काव्यों मे मीर महिमाशाह की रक्षा के लिये युद्ध का होना लिखा गया है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस अद्‌भुत कथा से हम्मीर का गौरव बहुत कुछ बढ़ जाता है और कथा में भी एक अद्‌भुत रस का संचार हो आता है। पर हम्मीर महाकाव्य मे इसका कहीं नाम भी नहीं है और न कहीं किसी पुराने इतिहास में इसका वर्णन मिलता है पर महिमाशाह का हम्मीर के यहां रहना निश्चित है तथा अपने बाल बच्चों को मार कर लड़ाई में हम्मीर के साथ देने का वर्णन भी है। यह अवस्था तभी हो सकती है जब महिमाशाह अपने को हम्मीर का किसी बड़े उपकार के लिये ऋणी मानता हो। अलाउद्दीन का साथ न देकर हम्मीर का साथ देना एक मुसल्मान सर्दार के लिये निस्सन्देह बड़े आश्चर्य की बात है। हिन्दी काव्यों में जिन घटनाओं का उल्लेख है उनका होना तो कोई असम्भव बात है ही नहीं। भारतवर्ष में जितने बड़े बड़े युद्ध हुए हैं सब स्त्रियों के ही कारण हुए हैं। पृथ्वीराज के समय में तो मानों इसकी पराकाष्ठा होगई थी। पर मुसल्मानों के लिये यह निन्दा की बात थी। इसलिये मुसल्मान इतिहासकारों का इस घटना को छोड़कर युद्ध का कुछ दूसरा ही कारण बताना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। पर नयनचन्द सूरि का कुछ न कहना अवश्य सन्देह उत्पन्न करता है। अलाउद्दीन ने जिस नीचता से रति-पाल को मिला लिया इसका तो यह कवि पूरा पूरा वर्णन करता है। यहां के कुछ श्लोक उद्धृत करदेना उचित जान पड़ता है॥

अन्तरंतःपुरं नीत्वा शकेशस्तमभोजयत्।
अपीप्यत्तद्भगिन्या च प्रतीत्यै मदिरामपि ॥ ८१ ॥
प्रतिश्रुत्य शकेशोक्तं ततः सर्वं स दुर्मतिः।
विरोधोद्बोधिनीर्वाचो गत्वा राज्ञे न्यरूपयत् ॥ ८२ ॥
[सर्ग १३]

इनसे यह स्पष्ट विदित होता है कि नयनचन्द्र कुछ मुसल्मानों का पक्षपाती नहीं था। कुछ लोग कह सकते हैं कि जैनी होने से उसका विरोधी होना असम्भव नहीं है। मेरा अनुमान तो यह है कि उसने मुसल्मानी इतिहासों के आधार पर अपना काव्य लिखा है क्योंकि उसमें कथित घटनाएं और सन संवत् सब मुसल्मानी इतिहासों से मिलते हैं। जो कुछ हो इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐतिहासिक दृष्टि से नयनचन्द्र सूरि का काव्य जोधराज के रासो से अधिक प्रामाणिक है।

तीसरी घटना जिसपर विचार करना आवश्यक है वह हम्मीर की मृत्यु है। दोनों काव्यों से यह सिद्ध होता है कि हम्मीर ने आत्महत्या की। हम्मीररासो में इसका कारण कुछ और ही लिखा है और हम्मीर महाकाव्य में कुछ और है। जोधराज के अनुसार हम्मीर को विजय प्राप्त हुई और विजय के उत्साह में उसने मुसल्मानी झंडे निशानों को आगे करके अपने गढ़ की ओर पयान किया जिसपर रानियों और रनिवास की अन्य महिलाओं ने यह समझा कि हम्मीर की हार हुई और मुसल्मानी सेना गढ़ को लेने के लिये आरही है। इसपर अपने सतीत्व की रक्षा के निमित्त उन्होंने अग्नि में अपने प्राण दे दिए। इसपर हम्मीर को ऐसी ग्लानि हुई कि उसने भी अपने प्राण देकर अपने सन्ताप को शान्त किया। नयनचन्द्र के अनुसार रणमल और रतिपाल के विश्वासघात पर विजय की सब आशा जाती रही और हम्मीर ने पहिले राजमहिलाओं को अग्निदेव के अर्पण कर रण में वीरोचित मृत्यु से मरना विचारा। अन्त में जब उसका शरीर रणक्षेत्र में बिध कर गिर पड़ा तो उसे आशंका हुई कि कहीं मुसल्मानों के हाथ से मेरे प्राण न जांय। इस लिये वहीं उसने अपने मस्तक को अपने हाथ से काट कर इस आशंकित अपमान से अपनी रक्षा की। दोनों बातों में राजमहिलाओं का अग्नि में आत्म समर्पण

करना और हम्मीर का आत्महत्या करना मिलता है और इन घटनाओं के संघटित होने में भी कोई सन्देह या आश्चर्य की बात नहीं है। जो कथा इस सम्बन्ध में दोनों काव्यों में दी है वह युक्तिसंगत जान पड़ती है। कौन कहां तक सत्य है इसका निर्णय करना तो बड़ा कठिन है, विशेष करके ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में तो इस सम्बन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है। जोधराज का यह लिखना कि अलाउद्दीन ने समुद्र में कूद कर अपने प्राण दे दिए निस्सन्देह असत्य जान पड़ता है। इस युद्ध के १८ वर्ष पीछे तक वह जीता रहा इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं।

जो कुछ हो, ऐतिहासिक अंश में गड़बड़ रहने पर भी हम्मीर की कथा बड़ी अद्भुत है और भारतवर्ष के गौरव को बढ़ाने वाली है। कौन ऐसा स्वदेशाभिमानी होगा जो राजमहिलाओं के जौहर और हम्मीर की वीरता तथा उसके साहस का वृत्तान्त पढ़कर अपने को धन्य न मानता हो और जिसका हृदय देशगौरव से न भर जाता हो। धन्य है वह देश जहां ऐसे ऐसे वीर होगए हैं, धन्य हैं वे स्त्रियां जो अपने सतीत्व की रक्षा के लिये बिना कुछ सोचे विचारे इस क्षणभंगुर शरीर को नष्ट कर डालती थीं और धन्य हैं वे लोग जो उनके वृत्तान्तों को पढ़ कर आनन्दित और प्रफुल्लित होते हों और जिन्हें अपने देश के गौरव की रक्षा का उत्साह होता हो।

मैं पूर्व में लिख चुका हूं कि दो हम्मीर हो गए हैं। एक के विषय में तो मैंने इतना कुछ मसाला इकट्ठा कर दिया है। मेवाड़ के हम्मीर के विषय में भी कुछ कह देना आवश्यक जान कर ठाकुर हनुवन्त सिंह लिखित मेवाड़ के इतिहास से इनका वृत्तान्त उद्धृत कर देता हूं। वह इस प्रकार है—

"लखमसी जी के पीछे मुसल्मानों से बैर लेने वाला अब केवल "उनका लड़का अजयसिंह था जो कि केलवाड़े में रहता था। वह

केलवाड़ा अर्बली पर्वत के उच्च प्रदेश में है। वहां उसकी रक्षा करने वाले भील लोग थे। अजयसिंह जी के बड़े भाई अरसी जी के कुंअर हम्मीरसिंह को अपने पीछे गद्दी पर बिठलाने का वचन लखमसी जी ने अजयसिंह से ले लिया था इससे तथा अजयसिंह के पुत्र के हम्मीर सिंह के समान पराक्रमी न होने से उनके उत्तराधिकारी हम्मीरसिंह ही थे। इनकी माता के विषय में यह कथा प्रसिद्ध है कि एक दिन अरसी जी युवराजत्व अवस्था में ऊदवा गांव के जंगल में आखेट को गए थे। वहां जब एक सूअर के पीछे इन्होंने घोड़ा दिया तो वह भागकर ज्वार के खेत में घुस गया। ज्योंही अरसी जी सूअर के पीछे खेत में जाने लगे त्योंही एक कन्या ने जो उस खेत की चौकसी कर रही थी इनको भीतर जाने से रोका, और कहा कि ठहरो सूअर को मैं बाहर निकाले देती हूं। फिर उस लड़की ने ज्वार के पेड़ को उखाड़ सूअर को दो चार सपाटा लगाकर उसे उनकी ओर खदेड़ दिया। उस लड़की की निर्भयता को देख आखेटकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। पीछे जब कि वे एक नाले पर विश्राम करने के लिये ठहरे हुए थे तो सनसनाता हुआ दूर से एक पत्थर का टुकड़ा आया और घोड़े की टांग में ऐसे जोर से लगा कि उसका पैर टूट गया। बहुतही छोटे से पत्थर के टुकड़े से घोड़े का पैर टूटा हुआ देख खोजा गया तो उसके मारने वाली भी वही खेत की रखवालिन कन्या निकली। पक्षियों के उड़ाने को उसने गोफन में रख कर गिल्ला फेंका था परन्तु दैव योग से वह घोड़े को आ लगा। जब उसने यह सुना कि घोड़े को चोट लग गई है तो अरसी जी के पास जाकर अपने बिना जाने अपराध की क्षमा बड़ी नम्रता से मांगी। सन्ध्या को लौटते समय अरसी जी को फिर वही कन्या अपने घर को जाती हुई राह में मिली। यह लड़की माथे पर दूध का मटका रक्खे और दोनों हाथों में दो पड़रे (भैंस के बच्चे) लिए हुए जा रही थी, उस समय

अरसी जी के साथियों में से एक ने हँसी में उसके दूध को गिरा देने का विचार किया और वह मनुष्य घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास होकर निकला। इससे यह लड़की कुछ भी न घबड़ाई और अपने हाथ में का एक पड़रा घोड़े के पीछले पैरों में ऐसा मारा कि घोड़ा और सवार दोनों धरती पर गिर पड़े और हँसी के बदले उलटी अपनी हानि कर ली। अरसी जी ने घर जाकर निश्चय कराया तो वह कन्या चन्दाना वंश (चहुवानों की एक शाखा है) के एक राजपूत की पुत्री निकली। अरसी जी ने उसके बाप को बुलवा कर उससे अपने विवाह करने के लिये वह लड़की मांगी, परन्तु उस राजपूत ने निषेध कर दिया। घर पहुंच कर जब अपनी स्त्री से उसने सब वृत्तान्त कहा तो वह पति के इस कार्य्य से बहुत अप्रसन्न हुई और लग्न स्वीकार करने के लिये अपने पति को फिर अरसी जी के पास उसने लौटाया। अन्त में अरसी जी का उस कन्या के साथ विवाह हुआ, जिसके पेट से अति पराक्रमी हम्मीरसिंह ने जन्म लिया। सिंहनी के पेट में तो सिंह ही जन्म लेता है। हम्मीरसिंह जी बचपन में अपनी ननसाल में रहकर बड़े हुए थे।

"हम्मीरसिंह के काका अजयसिंह जब केलवाड़े में रहते थे तेउनकी मुसल्मानों के सिवाय पहाड़ियों में रहने वाले राजपूत सर्दारों के साथ भी बड़ी लड़ाई रही। इन पहाड़ियों का मुखिया बालेछा जाति का मूंजा नामी एक राजपूत था जिसके साथ लड़ाई करने मे एक बार अजयसिंह बहुत घायल हुए। इस समय अजयसिंह के दो पुत्र सज्जनसी और अजीतसी भी थे जिनकी आयु अनुमान १५ वर्ष के थी परन्तु वे कुछ भी वीरता लड़ाई में न दिखा सके, इससे उन्होंने अपने भतीजे हम्मीरसिंह को बुला लिया और उनको सब वृत्तान्त कह सुनाया। हम्मीरसिंह अपने दोनों चचेरे भाइयों से बड़े न थे परन्तु तो भी उन्होंने मूंजा बालेछा का सिर काट लेने का उत्साह किया। मरना

या मूंजा का सिर काट लाना ऐसा विचार निश्चय करके वे निकले। थोड़े दिनों में उन्होंने मूंजा का शिर काट लाकर अपने काका को भेट किया। अजयसिंह इस बात से बहुत प्रसन्न हुए, और मूंजा के ही रुधिर से तिलक करके अपने पीछे हम्मीरसिंह को राज्य का अधिकारी ठहराया। जब अजयसिंह मरे तो उनसे पहिलेही अजमाल मर चुके थे, सजनसी गद्दी के लिये अधिकारी हम्मीरसिंह को नियत हुआ देख दक्षिण मे चले गए, जिनके वंश में एक ऐसा वीर पुरुष जन्मा कि जिसने मुसल्मानों से पूरा बदलाही न लिया किन्तु अपने असामान्य पराक्रम और साहस से मुसल्मानी राज्य का मूलोच्छेदन ही कर दिया। यह पुरुष मरहठों के राज्य की नींव जमानेवाला सितारे का राजा शिवजी था जो समस्त भारतवर्ष में विख्यात है। सजनसी से बारहवीं पीढ़ी में यह हिन्दू धर्म्म रक्षक और अतुलित पराक्रमी वीर पुरुष शिवजी हुआ है। सजनसी जी से पीछे दुलीपजी, सीओजी, भोराजी, देवराज, उग्रसेन, माहुलजी, खेलुजी, जनकोजी, सन्तोजी, शाहजी, और शिवजी हुए। अजयसिंहजी के पीछे हम्मीरसिंह स० १३०१ ई० में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। उस समय मेवाड़ की गिरती दशा होने से आसपास के राजा लोगों ने मेवाड़ के राणाओं को अपना शिरोमणि मानना छोड़ दिया था। हम्मीरसिंह ने अपने पहाड़ी साथियों को इकट्ठा करके जिन जिन राजाओं ने इनको अधिष्ठाता मानना छोड़ दिया था उन सभों को परास्त करके अपने अधीन किया। इस प्रकार थोड़े दिनों में ही हम्मीरसिंह ने अपना गौरव आस पास के राजाओं पर जमा लिया। अब चित्तौर को किस विधि लूं इस विचार में हम्मीर सिंह पड़े।

"हम्मीरसिंह ने चित्तौर के आसपास का सारा देश लूट कर उजाड़ डाला, अकेला चित्तौर ही मुसल्मानों के अधीन रह गया था।

किसी प्रकार उसे लूं यही हम्मीरसिंह का दृढ़ विचार था। एक दिन उन्होंने अपने सब मनुष्यों को बुला कर कहा कि "भाइयो! जिसे जीने की इच्छा हो, संसार के इन क्षणिक सुखों के बदले स्वर्ग का सुख छोड़ देना हो, जिसे अपनी प्रतिष्ठा की अपेक्षा प्राण प्यारे हों, जिसे अपने उग्र वैरी मुसल्मानों का डर हो, जिसे अपनी गई हुई भूमाता को तुर्कों के हाथ में से निकाल लेने की हौंस न हो, और जिस को इस अर्बली पर्वत की झाड़ी जंगलों में सदा पड़े रहने की इच्छा हो, वह भले ही सुख से इस अर्बली की विकट गुह्य गुफाओं में रहे यह मेरी आज्ञा है, जो मेरी भुजा में वल होगा तो तुम्हारे चले जाने पर भी अपने कुलदेवता की सहायता से अकेला भी चित्तौर को लूंगा। तुम लोग सुख से जाओ और जो ईश्वर इच्छा से मैं चित्तौर को जल्दी ले सका तो तुमको पीछे बुला लूंगा, उस समय आ जाना।" हम्मीर सिंह के मनुष्यों में राजपूत भी थे परन्तु अधिक तो आसपास के भील लोग थे। उन लोगों ने बालकपन से ही हम्मीरसिंह का पराक्रम देख रक्खा था और निरन्तर उनके साथ रहने से वे भी राजपूतों के समान ही साहसी और पराक्रमी हो गए थे और हम्मीरसिंह के चाल चलन तथा व्यवहार से भी वे लोग ऐसे प्रसन्न थे कि यदि वे कहते तो प्राण देने को वे लोग उद्यत हो जाते। हम्मीरसिंह के उपरोक्त बचनों का उत्तर उन लोगों ने इस प्रकार दिया "हम मरेंगे अथवा शत्रुओं को मारेंगे परन्तु अपने राजा को छोड़कर कभी पीछे न हटेंगे, हम अपने कुल को कलंकित न करेंगे, हम अपने शत्रुओं के हाथ में से अपनी भूमाता को छुड़ाने के लिये अपने प्राण देंगे और इस जगत के क्षणस्थायी सुखों को छोड़ स्वर्ग का सदैव सुख भोगेंगे।" इस प्रकार वे एक स्वर होकर बोले कि मानो एक साथ मेघ की गर्जना हुई। हम्मीरसिंह ने इन वीर राजपूतों के ऊपर पुष्पों की वृष्टि करके कहा।

"धन्य हो मेरे प्यारे ! धन्य हो ! धन्य हो क्षत्रिय पुत्रो ! धन्य हो ! ऐसे ही उत्तर की मैं आशा रखता था और सोही अन्त को मिला । तुम लोगों की शुभचिन्तकता से मैं अपनी भूमाता को छुड़ा सकूंगा । तुम्हारी राजभक्ति और तुम्हारी एकता देख, तुम्हारा साहस और पराक्रम देख हमारे कुल देवता हमारे सहायक होंगे । और मुझे निश्चय है कि हमारा मनोरथ सिद्ध होगा इसलिये प्यारे वीरपुरुषो तय्यार होजाओ । अपने बालबच्चों को इस पहाड़ की सुरक्षित गुफा में छोड़ आओ और उनकी सब प्रकार रक्षा होती रहे इसके लिये पांच सहस्र वीर भीलों को नियत कर चलो ।" हम्मीरसिंह के इन वाक्यों को सुनकर सर्वत्र जय जयकार होने लगी । उक्त प्रकार के प्रबन्ध करके वे सब चित्तौर के लिये पहाड़ों से उतर पड़े ।

"इस समय हम्मीरसिंह के पास पांच हजार से कुछ अधिक मनुष्य थे तथापि, "एक मराऊ सौ को मारे" इस कहावत के अनुसार वे पांच लाख के समान थे । उन्होंने चित्तौर के चारों ओर का देश लूट लिया, ग्राम जला दिए, मुसलमानों को पकड़ लिया । चारों ओर अशान्ति रहने से व्यापारी व्यापार से और किसान खेती करने से रुक गए । मुसलमान लोग अपनी प्रजा का रक्षण न कर सके । इससे प्रजा का समूह हम्मीरसिंह के अधीन हो बसने लगा । इस समय हम्मीरसिंह की रहन सहन अर्वली पर्वत की चोटियों पर केलवाड़े में थी । वहां जाने का मार्ग बड़ा बेड़ा था । शत्रुओं के अधिकार कर लेने योग्य कदापि न था । अर्वली पर्वत के भीतरी गुप्त स्थलों को वहां से भाग जाने का मार्ग पृथक था । ये गुप्तस्थल पहाड़ों की घनी झाड़ियों में होने से बड़े बिकट थे । वहां इतने फलादि खाने योग्य पदार्थ उत्पन्न होते थे कि वर्षों तक सहस्रों मनुष्यों का निर्वाह हो सकता था । केलवाड़े से पश्चिम ओर का मार्ग खुला था

जहां होकर गुजरात और मारवाड़ का माल व्यापारी लाते थे तथा मित्रता रखनेवाले भीलों से भोजन की बड़ी सहायता मिलती थी। बालबच्चों की रक्षा के लिये जो पांच सहस्र भील नियत थे वे आवश्यकतानुसार रसद पहुंचा जाते थे । अच्छी तरह सोच समझ के और चतुराई से हम्मीरसिंह ने अपने लिये निर्भय स्थान ढूंढा था। परन्तु हम्मीरसिंह की बुद्धि को भला उनका दुर्दान्त शत्रु अलाउद्दीन कैसे सह सकता था। वह सैन्य लेकर स्वयं आया और उसने अर्वली का पूर्व भाग जीत लिया। परन्तु इससे हम्मीर की कुछ भी हानि न हुई। बादशाह ने अर्वली का पूर्वी भाग जीत लिया तो वे दक्षिण भाग में धूम मचाने लगे। अन्त में अलाउद्दीन थक गया और हम्मीरसिंह को अधीन करने का काम चित्तौर के सूबेदार मालदेव को सौंप आप दिल्ली को लौट गया।

मालदेव अपने बल से तो हम्मीरसिंह को वश में कर न सका छल से उनको वश में लाने तथा उनके अपमान करने का विचार कर अपनी पुत्री के विवाह कर देने के बहाने से उसने हम्मीरसिंह के पास नारियल भेजा। हम्मीरसिंह ने अपने सम्पूर्ण राजपूत लोगों तथा साथियों से इस विषय में सम्मति ली तो उन सभों ने इस सम्बन्ध के स्वीकार करने का निषेध किया, परन्तु हम्मीरसिंह ने कहा कि "भाइयो मेरी समझ में तो यही आता है कि तुम सब भूल रहे हो। तुम लोग जो भय बतलाते हो उससे मैं अजान नहीं हूं परन्तु राजपूत होकर किसी के डर से अपना निश्चय किया हुआ कार्य्य छोड़ देना यह बड़ी कायरता है। यह राजपूत का नहीं किन्तु दासी पुत्र का काम है। राजपूतों को तो सदा दुःख के समय के लिये कटिबद्ध रहना चाहिए। राजपूतों को तो एक बार घायल होकर घर भी छोड़ना पड़ता है, और एक बार बाजे गाजे के साथ गद्दी पर भी बैठना पड़ता

है। जो भेजा हुआ यह टीका न स्वीकार करूं तो मेरी मां की कोख कलंकित होवे । मेरे सूरवीर भाइयो ! मैं यह जानता हूं कि तुम लोग अपने प्राणों की अपेक्षा मेरे प्राणों की अधिक चिन्ता रखते हो परन्तु इसमें तुम्हारी भूल है । घर में बैठे बैठे सवामन रुई के गद्दे पर सोते सोते और बातें करते करते सैंकड़ो मनुष्य मर जाते हैं, यह हम सभों से छिपा नहीं है । क्या यह तुम समझते हो कि जो इस संसार का मारने वा जिलाने वाला है वह हमको जो डर कर घर में छिप जावेंगे तो न मारेगा । और जो उसे जीवित रखना होगा तो हमारा नाम मिटानेवाला कौन है? इस लिये घर में निकम्मे पड़े पड़े मर जाने से तो शत्रु को मराते मराते मारना ही श्रेष्ठ है, नहीं तो जीना भी किस काम का है । भला इस बहाने से जिन स्थानों में मेरे बाप दादे रहते थे, जिन किलों के ऊपर मेरे बाप दादों के झंडे फहराते थे, जिन जंगलों में मेरे बाप दादों के शरीर का रुधिर बह चुका है, वे स्थल, वे गढ़ और राजमहल तो देखने को मिलेंगे । मेरे बाप दादे जिन स्थानों में मरे हैं वहीं मैं भी मरुंगा उनके साथ मैं भी स्वर्गधाम पाऊंगा । कहीं हमारे कुल देवताओं ने ही अथवा हमारी भूमाता ने ही इस बहाने से मुझे वहां बुलवाया हो । कदाचित उनकी इच्छा यही हो कि मैं वहां जाऊं, इसलिये वहां जाने से वे भी हमारी सहायता अवश्य करेंगीं । भाइयो ! मेरी इच्छा है कि नारियल को स्वीकार करना चाहिए । उनके बचन सुनते ही सब लोगों में वीर रस उमड़ आया और यह बात सबने स्वीकार करली और हम्मीरसिंह ने पांच सौ सवार लेकर चित्तौर जाने का विचार कर लिया । हम्मीरसिंह अपने छँटे छँटाए पांच सौ सवार लेकर चित्तौर के निकट पहुंचे, उस समय मालदेव के पांच लड़के उनकी अगवानी को आए । द्वार पर तोरण बँधा हुआ न देख, तथा नगर में कोई धूमाधम और विवाह की तय्यारी न

देखी, इससे उन्होंने मालदेव के पुत्रों से पूछा कि क्यों क्या बात है, विवाह की कुछ धूमधाम नहीं दीखती। वे कुछ उत्तर न दे सके। इससे हम्मीरसिंह क्रोध में भरे हुए चित्तौर में जाकर दर्बार में बैठ गए। हम्मीरसिंह का कोप और उनके मनुष्यों के लाल मुख देख मालदेव के देवता कूंच कर गए। उनके पकड़ लेने की तो सामर्थ्य कहां थी। पांच सौ वीर नंगी तलवारें लिए अडिग जमे हुए थे, वहां किस की सामर्थ्य थी जो हम्मीरसिंह की ओर देख सके। हम्मीरसिंह अकेले भी मालदेव और उसके पांच पुत्र के लिये काफी थे। मालदेव ने डर कर अपनी पुत्री के साथ हम्मीरसिंह का पाणिग्रहण कर दिया। उस लड़की ने हम्मीरसिंह को चित्तौर लेने की यह युक्ति बतलाई कि आपको जिस समय दहेज दिया जाय, उस समय आप उस वृद्ध महता को जो मेरे पिता का बड़ा चतुर सेवक है अपने लिये मांग लेना। निदान यही हुआ। इस भांति विवाह करके हम्मीरसिंह अपने घर को लौटे। केलवाड़े में लोग बड़े अधीर हो रहे थे परन्तु हम्मीर सिंह को कुशल पूर्व्वक लौट आया देख लोग आनन्द में मग्न होगए।

" इस रानी से हम्मीरसिंह के खेतसी नामक पुत्र जन्मा। जब खेतसी एक वर्ष का हुआ तो उसकी माता ने अपने बाप को लिखा कि मुझे अपने क्षेत्रपाल देवता के पगों लगना है, इसलिये मुझे वहां बुलालो। मालदेव उस समय मेर लोगों के साथ लड़ने को गया हुआ था, इससे उसके भाइयों ने अपनी बहिन को बुला लिया। इस प्रकार हम्मीरसिंह की स्त्री, उनका पुत्र और कुछ मनुष्य चित्तौर में प्रवृष्ट हुए। उसी बूढ़े महता के यत्न से जो कि मालदेव के यहां से सेना का अध्यक्ष रह चुका था, और अब हम्मीरसिंह के यहां रहता था यह परिणाम निकला कि चित्तौर की सम्पूर्ण राजपूत सेना हम्मीर सिंह के पक्ष में होगई। हम्मीरसिंह को गद्दी पर बिठाने के समाचार

भेजे गए। हम्मीरसिंह आगे से ही सावधान होकर आसपास फिरते रहते थे यह समाचार पाते ही आ निकले, परन्तु इतने ही में शत्रु की सेना भी लड़ने को आगई। इस समय हम्मीरसिंह के पास थोड़े और शत्रु के पास बहुत से मनुष्य थे परन्तु बड़े पराक्रम के साथ अपनी तलवार का स्वाद चखाते हुए सबको परास्त करके वे विजय प्राप्त कर चित्तौर में आ गद्दी पर बैठ गए।

" अलाउद्दीन उस समय मर गया था और मुहम्मद तुग़लक उस समय बादशाह था। मालदेव यह देखकर कि चित्तौर छिन गई और बिना बादशाही मदद के फिर मिलनी कठिन है दिल्ली को भाग गया।

" चित्तौर के गढ़ पर राणाजी का झंडा फहराता हुआ देख पहाड़ों में से आसपास के ग्रामों में से तथा गुप्त स्थानों में से निकल निकल कर टीडी दल की भांति लोग चित्तौर में घुसने लगे। चित्तौर में से मुसल्मानों का राज्य उठ गया और राजपूतों का आगया यह सुनकर लोग आनन्द मग्न हो गए और दूर दूर से वहां आने लगे। छोटे और बड़े सब ही लोग मुसल्मानों से बदला लेने की उमंग के साथ आ एकत्रित हुए। जो इस समय मुसल्मानों की सेना चित्तौर लेने को आवे तो उसे कुचल डालो ऐसा बचन सबके मुख से निकलने लगा। हम्मीरसिंह को सेना की कमी न रही। मुसल्मानों से युद्ध करने की उमंग में चित्तौर में झुंड के झुंड सहस्रों मनुष्य फिरने लगे। सब कहने लगे कि जो मुसल्मानी सेना ऐसे समय में लड़ने को आजावे तो उसकी अच्छी दुर्गति हो और वे जो कह रहे थे सो ही हुआ। मुहम्मद अपने छिने हुए राज्य को लौटाने को आया। हम्मीर सिंह के पास बिना बुलाए सहस्रों मनुष्य मुसल्मानों के प्राण लेने को आ उपस्थित हुए और उनके उत्साह को देख राणा जी तत्काल

चित्तौर से बाहर लड़ने के लिये निकले । सींगोली स्थान के निकट बड़ा संग्राम हुआ। सारांश यह है कि राजपूतों ने इस उत्कटता से युद्ध किया कि मुसल्मानों का एक भी मनुष्य दिल्ली को लौट कर न जाने दिया।

" इस लड़ाई में स्वयं मुहम्मद पकड़ा गया। मालदेव का पुत्र हरीसिंह हम्मीरसिंह के साथ द्वन्द युद्ध करता हुआ मारा गया। मुहम्मद को तीन महीने तक हम्मीरसिंह ने बंधुआ बना कर रक्खा। पीछे मुहम्मद ने अजमेर, रणथम्भौर, नागौर आदि पर्गने सौ हाथी और पचास लाख रुपया देकर छुटकारा पाया।

" हम्मीरसिंह का बड़ा साला बनबीरसिंह उनके पास नौकरी के लिये आया। राणाजी ने उसे सत्कारपूर्व्वक अपने पास रक्खा और उसके निर्वाह के लिये नीमच, जीरण, रतनपुर और कीरार ये पर्गने जागीर में दिए। जागीर देते समय राणाजी ने उससे कहा कि " यह जागीर भोगो और प्रामाणिक रीति से चाकरी देते रहो। तुम एक समय तुरकों के पादसेवी थे परन्तु अब तो अपनी ही जाति के, स्वधर्म वाले के तथा अपने सगे सम्बन्धी के नौकर हो। जिस भूमि के लिये मेरे बाप दादों तथा सहस्रों शुभचिन्तक पुरुषों ने अपना रुधिर बहाया था उस भूमि को फिर लौटा लेने का मेरे ऊपर ऋण था सो मैंने कुल देवताओं की कृपा से लौटा लिया। तुम अब से तुर्क के नौकर न रहकर राजपूत के हुए सो ईमान्दारी से काम करना। " बनवीर भी वैसा ही ईमान्दार निकला। उसने मरते समय तक शुद्ध चित्त से सेवा की और चंबल नदी के ऊपर का भैंसरोर ग्राम जीत कर मेवाड़ में मिलाया।

" जब से चित्तौर को मुसल्मानों ने ले लिया था तभी से मेवाड़ के राणाओं की प्रतिष्ठा घट गई थी। भरतखंड के समस्त देशी राज्यों

में मेवाड़ के राणा शिरोमणि गिने जाते थे परन्तु चित्तौर के निकल जाते ही इसमें बाधा पड़ गई थी। जो राजा कर देने वाले थे उन्हों ने कर तथा गद्दी पर बैठते समय भेट, और आवश्यकता के समय पर सेना द्वारा सहायता करना आदि सब बंद कर दिया था। उस समय सम्पूर्ण क्षत्रिय राज्य निर्बल थे। उनको किसी के आश्रय की आवश्यकता थी। जब तक चित्तौर में राणा रहे वे लोग उनके आश्रय में रहे परन्तु चित्तौर निकल जाने से वे दिल्ली के बादशाहों के अधीन हो गए, परन्तु राणा हम्मीरसिंह जी ने फिर से इस प्रवाह को फेरा, उन्होंने चित्तौर को मुसल्मानों से छीन कर मुसल्मानों ने अपने राज्य समय में जो जो फेर फार कर डाले थे उन्हें फिर ज्यों का त्यों कर दिया। देश के सम्पूर्ण क्षत्रिय राजा मुसल्मानों की अपेक्षा चित्तौर के राणाओं के अधीन रहने से प्रसन्न हुए। ज्यों ही हम्मीरसिंह जी ने चित्तौर पीछे लिया और मुहम्मद को हराया कि सम्पूर्ण आर्य वंश के राजा एक के पीछे एक भेट ले ले कर आए, कर देने लगे और यथासमय सेना द्वारा युद्ध में सहायता करने लगे। इस भांति मारवाड़, जयपुर, बूंदी, ग्वालियर, चंदेरी, राजौड़, रायसेन, सीकरी, कालपी और आबू आदि ठिकानों के राजा हम्मीरसिंह जी के आज्ञाकारी हुए। हम्मीरसिंह जी भरतखंड के समस्त राजपूत राज्यों में महाराजाधिराज बनगए। मुसल्मानों के आने से पहिले इस देश में मेवाड़ के राणाओं की शक्ति अधिक थी, मुसल्मानों के आते ही वह दिन दिन घटने लगी। हम्मीरसिंह जी ने इस अवनति को केवल रोका ही नहीं किन्तु मुसल्मानों के आने से पहिले मेवाड़ की जो उत्तम दशा थी फिर उसी पर उसे पहुंचा दिया। मुहम्मद के पीछे किसी भी बादशाह ने चित्तौर के लेने का साहस न किया इसका एक मात्र हेतु हम्मीरसिंह जी के पराक्रम का भय था। इसीसे हम्मीरसिंह के

राज्यशासन के पिछले पचास वर्षों में मेवाड़ में अटल शान्ति रही और इस दीर्घ काल की शान्ति ने मेवाड़ देश को व्यापार, धन, विद्या, सभ्यता, तथा शूर पुरुषों से परिपूर्ण कर दिया । हम्मीरसिंह जी जैसे बलवान थे वैसे ही राज्य चलाने में, न्याय करने में, कला कौशल को उन्नति देने में प्रवीण थे । उनके राज्य में यह कहावत पूर्णतया चरितार्थ होगई थी कि " बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं " शान्ति बढ़ने से संपूर्ण व्यापारी, किसान और कारीगर अपने अपने धन्धों में लग गए इससे देश में संपत्ति बढ़ी जिससे राज्य की आय में अधिकता हुई । इन्होंने उत्तम उत्तम स्थान बनाकर कारीगरी की और प्रजा का न्याय यथोचित करके तथा पुत्रवत् पालन करके सब से आशीर्वाद प्राप्त किया, इस भांति चौंसठ वर्ष राज्य भोग कर अति वृद्धावस्था में सन् १३६५ ई० में हम्मीरसिंह जी ने वैकुण्ठधाम का मार्ग लिया । परम बुद्धिमान और पराक्रमी महाराणा हम्मीरसिंह जी अपने पुत्र खेतसी जी के लिये शान्तिसम्पन्न और विस्तीर्ण राज्य छोड़ गए । मेवाड़पति महाराणा हम्मीरसिंह जी अपनी अक्षय कीर्ति छोड़ कर मरे । वहां के लोग उन्हें अब तक सराहते हैं ।"

इन हम्मीर के विषय में विशेष कुछ लिखना अथवा इनके सम्बन्ध की घटनाओं पर विचार करना मैं आवश्यक नहीं समझता । एक तो इनका इस रासो काव्य से कोई सम्बन्ध नहीं है, दूसरे यह भूमिका योंही इतनी बड़ी होगई है कि अब इसे और बढ़ाना अनुचित जान पड़ता है । केवल कथाभाग मैंने इसलिये दे दिया है कि जिसमें पाठकों को इसके जानने का यहीं अवसर प्राप्त होजाय और वे स्वयं इसके विषय में और जानने का उद्योग करें । जिन महाशयों को हम्मीर के विषय में कुछ लिखने का अवसर प्राप्त हो उन्हें उचित है कि वे दोनों हम्मीरों को अलग अलग मान कर उनके सम्बन्ध की घटनाओं का उल्लेख करें ।

बस अब मुझे हिन्दी के प्रेमियों से क्षमा मांगनी है कि एक तो इस भूमिका के लिखने में इतना विलम्ब होगया दूसरे यह भूमिका इतनी बड़ी हो गई । आशा है कि पहिले अपराध का मार्जन दूसरे से हो जाय ।

इस भूमिका को समाप्त करने के पहिले मैं कुंअर कन्हैया जू और पण्डित रामचन्द्र शुक्ल को अनेक धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने इसके कई अंशों के लिखने में मुझे बड़ी सहायता दी । साथही मैं कुंअर कृष्णसिंह वर्म्मा को भी धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता । उन्हींके द्वारा मुझे यह काव्य प्राप्त हुआ । ठाकुर विजय सिंह जी ने इस काव्य को प्राप्त करने और कुंवर कृष्णसिंह जी की सहायता करने में जो कष्ट उठाया उसके लिये मैं उनका भी उपकार मानता हूं । आशा है कि ये सब महाशय इसी प्रकार मुझ पर कृपा बनाए रहेंगे जिससे मैं अन्य अन्य ऐसे काव्यों के सम्पादन करने में समर्थ होऊं ।

काशी,
९ फर्वरी १९०८

श्यामसुन्दरदास ।

हम्मीररासो की भूमिका का परिशिष्ट।

कवि जोधराज कृत हम्मीररासो की भूमिका के सम्बन्ध में खवा (जयपुर) के महाराजकुमार कृष्णसिंह देव वर्म्मा निम्नलिखित तीन सूचनाएं देते हैं जिन्हें मैं धन्यवाद पूर्वक प्रकाशित करता हूं।

भूमिका पृष्ठ ४१—मेड़ता नाम का एक स्थान जोधपुर राज्य में है। यह इस राज्य के बीच में स्थित है। जोधपुर रियासत में नाडोल नाम का एक गांव है जहां आसापुरा देवी का स्थान है। रणथंभ से यदि नाडोल जाया जाय तो मेड़ता बीच में पड़ेगा।

भूमिका पृष्ठ २—नीमराणा के महाराज, महाराज पृथ्वीराज के वंशधर हैं। महाराज चन्द्रभान जी एक रियासत के आधिपति थे। जैसे अन्य बड़ी बड़ी रियासतें हैं वैसेही नीमराणा भी थी यद्यपि अब वह इतनी बड़ी नहा है। तौभी उसमें इस समय ६०, ७० गांव हैं और खास नीमराणा में दो हजार घरों की बस्ती है तथा वार्षिक आय दो लाख रुपए की है। इस समय यहां के अधिपति महाराज श्री १०८ जनकसिंह जी हैं। ये महाराज चन्द्रभान से १० वीं या ११ वीं पीढ़ी में हैं। सब चौहान इनको अपना मुकुटमणि मानते हैं।

यह भूमिका लिखने के पहिले मैंने एक पत्र महाराज नीमराणा को लिखा था और उनसे उनके वंश का हाल पूछा था। मुझे दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि उन्होंने मेरी प्रार्थना पर ध्यान देने की कृपा न की, इस कारण मैं उस वंश का विशेष वृतान्त न दे सका।

भूमिका पृष्ठ २—राठ—यह नाम उस भूभाग का है जो अलवर और जयपुर राज्यों के बीच में है और जहां नीमराणा रियासत स्थित है।

काशी
१३—४—०८

श्यामसुन्दर दास।

हम्मीररासो ।

दोहा ।

सिन्धुर्बदन अमन्द दुति, बुद्धि सिद्धि बरदाय ॥
सुमिरत पद पङ्कज तुरत, विघ्न अनेक बिलाय ॥ १ ॥

छप्पय ।

दुरद बदन बुधि सदन चन्द्र लल्लाट बिराजै ॥
भुजा च्यारि आयुद्ध तेज फरसी कर राजै[1] ॥
इक्क दन्त छबि धाँम अरुण सिन्दुरमय सोहै ॥
मनो प्रात रवि उदित कहन उपमा कवि को है ॥
कर कमल माल मोदक लिये उर उदार उपवीत बर ॥
शिव शिवा सुवन गणराज तुम देहु सदा बरदान बरं[2]॥२॥
पुंडरीक सुत सुता तासु पद कमल मनाऊं ॥
बिसद बसन[3] बर बसन बिसद भूषन हिय ध्याऊं ॥
बिसद जंत्र सुर शुद्ध तंत्र तुंबर जुत सोहै ॥
बिसद ताल इक्क भुजा द्वितिय पुस्तक मन मोहै ॥
गतिराज हंस[4] हंसह चढ़ी रटी सुरन कीरति बिमल ॥
जय मात सदा[5] बरदायिनी देहु सदा बरदान बल ॥३॥

छंद पँद्धरी[6] ।

जय विघ्नराज गणईशदेव ।
जय जगदंब जननी सहेवं[7] ॥

---

१ बर साजै । २ बरदायक बरदानबर । ३ बरण । ४ साहि ।
५ बिमल । ६ छन्द पद्धरिका । ७ स एव ।

गुरु पाद पद्म बन्दन सुकीन।
सब सजन हुलसन लीन कीन ॥ ४ ॥
पृथिराज राज जग भौ प्रसिद्ध।
भृगुवंश मध्य प्रगटे सुसिद्ध ॥
नृप चन्द्र भाँनु तिहि वंश मध्य।
किरवान दान दोऊ प्रसिद्ध ॥ ५ ॥
पिच निम्बराण जग ग्राम नाम।
जुत वर्णाश्रम निज धर्म्म धाम ॥
जय कीरति भुवमण्डल उदार।
अरु तेज प्रतापी बल अपार ॥ ६ ॥
सब कहैं राठ को पातिशाह।
जस श्रवन सुनन की सदा चाह ॥
द्विजराज गौड़कुल जग प्रसिद्धि।
विद्या विनीत हरि धर्म्म वृद्धि ॥ ७ ॥
सब दया दान उद्दार बीर।
गुण सागर नागर परम धीर ॥
कुल पंच वृच्छ के मूल जान।
द्विज आदि गौड़[2] जानत जहाँन[3] ॥ ८ ॥
सौ चौदह सै चालीस च्यार।
जन सासन सागर अति उदार ॥
अब सब को किंकर मोहि जानि।
ऋषि अत्रि गोत्र मैं जन्म मानि ॥ ९ ॥
डिडवरिया राव कहि बिरद ताहि।
शुभ राठ देस मैं उदित आहि ॥

---

१ पद मन। २ सोइ आदि गोर। ३ जानि।

तिहिं नाम ग्राम भल बीज बार।
सब प्रजा सुखी जुत बरण चार ॥१०॥
जहँ बालकृष्ण सुत जोधराज।
गुन जोतिष पंडित कवि समाज ॥
नृप करी कृपा तिहिं पर अपार।
धन धरा बाजि गृह बसन सार ॥ ११ ॥
बाहन अनेक सतकार[2] भूरि।
सब भांति अजाची[3] कियो मूरि ॥
नृप एक[4] समय दरबार माहिं।
रासोहमीर कहि[5] सुन्यो नाहिं ॥१२॥
नृप प्रश्न करिय यह उभै बात।
सब कहौ वंश उत्पति सुतात ॥
अरु कहौ साहि हम्मीर बैर।
किहि भाँति[6] कंक बढ्यौ सु फेर ॥ १३ ॥
तब कही प्रथम यह कल्प आदि।
जल सेस सैन जब है अनादि ॥
नहिं धरणि चन्द्र सूरज अकाश।
नहिं देव दनुज नर बर प्रकाश ॥ १४ ॥
सब बीज वृच्छ हरि संग मेलि[7]।
करि आप जोग निद्रा सकेलि ॥
करि सैन अंत निज शक्ति जानि।
ऊरण सुतंत्र करि सूत्र मानि ॥ १५ ॥
है माया ईश्वर उभै नाम।

---

१ उदार। २ बात। ३ अजाची। ४ इक। ५ कह्यौ। ६ बात। ७ सब बीज भुक्त हरि अंग मेलि।

करि महत तत्व गुण प्रगट जाम ॥
यह "धरित्वरित्र"[1] लीला अपार ।
हरि नाभि कोस पंकज प्रचार[2] ॥१६॥
तिहिं प्रगट भये ब्रह्मा सु आदि ।
वाराहकल्प यह कहि अनादि ॥
बहु काल ब्रह्म चिंता सु कीन ।
मैं कौन करों का कर्म कीन[3] ॥१७॥
अध उद्ध भ्रम्यों बहु कमल नाल ।
नहिं पार लह्यौ तद्दपि भुआल[4] ॥
करि ध्यान स्वयंभू लख्यौ आय ।
तप करो सृष्टि उपजै अमाय ॥ १८ ॥
तप कर्‍यौ स्वयंभू अति प्रचंड ।
तब भयउ प्रजापति बिधि अखंड ॥
मानसी सृष्टि कीनी उदार ।
सब वृच्छ बीज किन्ने अपार ॥ १९ ॥
जल गगन तेज भुव वायु मानि ।
सनकादि भये सुत चारि मानि[5] ॥
तप पुंज भये नहिं सृष्टि भोग ।
तहाँ मध्य भये तब रुद्र जोग ॥ २० ॥
मन तैं मरीचि भय तब सु आय ।
उपजे पुलस्त ऋषि श्रवण पाय ॥
इमि भये नाभि तें पुलह और ।
कृत भये ब्रह्म कर तैं जु मौर ॥ २१ ॥

---

१ धरांचित्त । २ बढ़यो पंकज अपार असार। ३ कर्मचीन, कर्महीन ।
४ भुआय । ५ आनि ।

भृगु भये स्वयंभू त्वचा थान ।
	भय प्राण नात वाशिष्ठ मान ॥
अंगुष्ठ दच्छ उपजे सु ब्रह्म ।
	नारद जु भये उत संग अब्रह्म ॥ २२ ॥
भय छाया तें कर्दम ऋषीस ।
	अरु भये प्रष्टि अद्धर्म दीस ॥
अरु हृदय भये कामा उदार ।
	करदन तें भौ धर्मावतार ॥ २३ ॥
भय लोभ अधुर तैं अति बलिष्ट ।
	बानी जु विमल मुख तैं प्रतिष्ट ॥
पद निरत मिंडे तैं सिंधु जानि ।
	याहि विधि जु प्रजापति ब्रह्म मानि ॥ २४ ॥
अब सुनहु वंश तिनके अपार ।
	यह भइय सृष्टि चहुँ खाँ निवार ॥
शिव कै जु सती त्रिय विन प्रसूत ।
	दिय दच्छ शाप तातैं न पूत ॥ २५ ॥
इक कला नाम त्रिय धर मरीच ।
	द्वै पुत्र भये ताकै जु बीच ॥
इक भये प्रथम कश्यप सुजान ।
	फिर उपजि धर्म जहँ पूर्णमान ॥ २६ ॥
भय कस्यप के सूरज सु आय ।
	सो भयो वंश सूरज सुगाय ॥
अरु सुनो अत्रि कै पुत्र तीन ।
	इक दत्त सोम जान्यो प्रवीन ॥ २७ ॥

---

१ मींड, मिंडु ।

ऋषि भए अपर दुर्वास नाम।
सोई सुनो श्रवण तिहि वंश जाम॥
सुत भयो सोम के बुद्ध आय।
पुरूरवा पुत्र ताकै सुभाय॥ २८॥
षट पुत्र भए ताके प्रसिद्ध।
भये सोम वंश तिन के जु सिद्ध॥
भृगु वंश सुनो अतिशय उदार।
चहुवान भये तिनतें अपार॥ २९॥
इक ख्यात नाम तिय अति अनूप।
भए उभै पुत्र ताके जु भूप॥
इक कह्यो प्रथम धाता जु नाम।
फिरि भये विधाता धर्मधाम॥ ३०॥
इकं अपर प्रिया भृगु कै कनिष्ठ।
ए पुत्र भए ताके प्रतिष्ठ॥
भय शुक्र जेष्ठ गुरु असुर जानि।
तिहिँ अनुज चिमन तप पुंज मानि॥ ३१।
भृगु के जु भये जग अति विख्यात।
जिहिँ शुक्र नाम बल तेज तात॥
तिनके रिचीक भय पुत्र आय।
जमदग्नि भये तिनके सुभाय॥ ३२॥
ऋषि जामदग्नि सुत परशुराम।
हनि चत्रि सकल छिन तेजधाम॥ ३३॥

दोहरा छंद।

ब्रह्मा के सुत भृगु भए, भार्गव भृगु के गेह॥

---

१ एक। २ च्यवन।

ऋषि रिचिक ताके भये, तेज पुंज तप देह ॥ ३४ ॥
जामदग्नि तिनके भए, परसराम सुत जाहि ॥
क्षत्रि मेंटि विप्रन दई, भुम्मि किती बर ताहि ॥३५॥
कमलासन कुलमैं प्रकट, परसराम रणधीर ॥
सहस्त्राऽर्जुन बैर तें, हने जु क्षत्री वीर ॥ ३६ ॥
बार इकीस जुद्धि जिन, दीनो[1] उर्वी राज ॥
बच्यो न क्षत्री जगत तब, आए तप के काज[2] ॥३७॥

छन्दमुक्तादाम।

हने छिति के सब बीर अपार।
भरे बहु कुंड जु श्रोणित धार ॥
करे तिहिँ पितृन तर्पन नीर।
भए सब हर्षित पित्र सधीर ॥ ३८ ॥
दए तब आसिष प्रेम समेत।
चले ऋषिराज तपःकृत हेत ॥
रह्यो नहिँ क्षत्रिय जाति विशेष।
भए निर्मूल जु क्षत्रि अशेष[3] ॥ ३९ ॥
बचे कछु दीन मलीन सुवेस।
कहूं तिनके अब रूप असेस ॥
धरैं तृणदंत कि दीन बयन्न।
किए तियरूप लखे जु नयन्न[4] ॥ ४० ॥
नपुंसक बालक वृद्ध सु दीन।
धरै मुख नष्ष सुबैन सहीन ॥
तजे तिन आयुध पिट्ठि दिखाय।
गहे तिन आय सुभाग्य सुपाय ॥ ४१ ॥

१ दिन्नों। २ अप्प (आप) गए तप काज। ३ विशेष। ४ नयन।

मिले सब पित्र सु[1] दीन असीस।
भए सुभ्र निर्भय[2] पित्र जगीस॥
तजो अब उग्र[3] असेस स्वभाव।
करो सब उप्पर छोभ सु चाव॥ ४२॥
तजे तब क्रोध भए सु दयाल।
चले पद बंदि पिता पवु हाल॥
भई कछु काल क्षत्री विन भुम्मि।
नहीं जग रच्च रह्यौ सोइ पुम्मिं[4]॥ ४३॥
बढ़े[5] रजनीचार बृंद अनेक।
मिटे जप तप्प सुवेद बिवेक॥
करे उतपात सुघात अपार।
तजे कुल धर्म्म सु आश्रम चार[6]॥ ४४॥
मिटी मरजाद रहैं सब भीत।
तबै ऋषिराज न बाढ़ँन[7] चीत॥
जुरे ऋषिवृंद सु अर्बुद आय।
जहां ऋषि चाय बसै सत भाय॥ ४५॥
सुर नर नाग मिले सह आय।
रचे रजनीचर मेटि उपाय[8]॥
मिले कमलासन और वसिष्ट।
कियो[9] सुचि कुंड अनिल्लं[10] सुइष्ट॥ ४६॥

दोहाछन्द।

चाय आय अर्बुद सुनंग[11]। मिलिय सकल ऋषिराय।

१ जु। २ अनिरिय। ३ उग्ग। ४ नहीं जग रच्छिक यो जग पूमि।
५ बचे। ६ च्यार। ७ बाढ़त, बढ़ढत। ८ मेंटन पाय।
९ किए। १० अनलु। ११ गन।

तब आराधिय शंभु तिन। दिन्नो दरसन आय ॥४७॥
जटा मुकुट बिभूत अंग। सीस गंग अहि अंग।
भूत संग अनभंग मन। हर्षित अधिक उमङ्ग ॥४८॥
ऋषिसमूह अस्तुति करत। करब अचल नेग आय॥
बास करो तिहिं पर अचल। यज्ञ करैं तब पाय ॥४९॥

छप्पय छन्द।

तब भव भैयउ प्रसन्न वास अर्बुद सिर किन्निव।
कियव यज्ञ आरंभ विप्र सम्मूह सुलिन्निव॥
द्वैपायन, वासिष्ठ, लोम, दाँलिभ, सब आये।
जैमिनि हर्षन, धौम्य, भृग्गु, घटयोनि, सुभाये॥
कौसिक, वत्स, मुद्गल, मिलिउ, उदालीक, मातङ्ग, भनि।
स्वर मिलिय स्वयंभुव शंभुयुत लगे करन मख मुदित मन
पुलह, अत्रि, गौतम्म, गर्ग, सांडिल्य, महामुनि।
भरद्वाज जावालि, मारकण्डेय, इष्ट्र गुनि॥
जेरतकार, जाजुल्लिय, पराशर परम पुनीतव॥
चिमंन चाइ सुर आइ, पिप्पलायनहिं, सुरचि सब।
बोटा अनेक वरनूं किते, पंचसिखा पिक्खिय प्रगट॥
तप तेज पुंज झलहलत तहँ, दर्शन तैं पातक सुघट ॥५१॥
सिद्धि औषधिय सकल *, सकल तीरथ जल आनिव।
जिते यज्ञ के योग्य तिते, द्रव सब मन मानिव॥

---

१ धाय। २ संग। ३ करिव, करयत्र। ४ करत। ५ मन। ६ भेय। ७ दालिम्भ सु। ८ जोनि। ९ जरदकालु। १० च्यवन। ११ सुरच्चिय। * सकल तीर्थनु जल आन्यौ, तित्यो- दिक आन्यौ, द्रव्य तितने मत मानिव।

अंजन जानि अध्याय होम ध्वनि होम सु उट्ठे ।
सकल वेद के मंत्र विप्र मुख सुर जुत जुट्ठे ॥
ध्वनि सुनत असुर आए तुरत करन यज्ञ उच्छिष्ट थल ।
उत्पात अमित किंन्ने तबै तहाँ दृष्टि किंन्निय सबल ॥५२॥
पवन चलत परचंड घोर घन बारि सु बुट्ठे ।
रुधिर माँस तृण पत्र अग्गि रज देखत उट्ठे ॥
गए तहाँ वाशिष्ट यज्ञ बहु विघ्न सुनायो ।
करै प्रथम बध असुर होय तब यज्ञ सुभायो ॥
वाशिष्ट कुंड किन्नो सुरूचि करन असुर निम्मूल तब ।
धरि ध्यान होम देवी विमल वेदमंत्र आहूति जब ॥५३॥

दोहरा छंद ।

ऋषि वशिष्ट वेदिय विमल । सामवेद स्वर साधि ॥
प्रगट कियउ छत्रिय पहुमि । वेदमंत्र आराधि ॥ ५४ ॥
तीन पुरुष उपजे तहाँ । चालुक प्रथम पंवार ॥
दूजै तीजै ऊपजै । क्षत्रि जाति पँड़िहार॥५५॥
किंयउ युद्ध अतुलित तिनहिं । नहिँ खल जीते भूरि ॥
तब चतुरानन यज्ञ थल । कियो तुरत वह दूरि॥५६॥
आबू गिरि अग्नेव दिसि । चायस्थल सब आय ॥
आराधे तिहिँ फरस धरि । आए शीघ्र सुभाय॥५७॥
कमलासन ब्रह्मा भये । होता भृगु मुनि कीन ॥
आचारज वाशिष्ट भौ । ऋत्वज वत्स प्रवीन॥५८॥
परसराम जजमान करि । होम करन मुनि लाग ॥
महाशक्ति आराधि करि । अनलकुंड पंटि जाग॥५९॥

---

१ यजन । २ बुट्ठे । ३ कीने । ४ कीनिय । ५ अग्नि ।
६ करो । ७ पाठीहार । ८ कियो । ९ पाढ़ि ।

छन्द पद्धरी।

बिधि करी परसु धर, बोलि ठौर ।
यजमान कियौ भृगुकुल सुमौर ॥
बरदेव शक्ति आराधि ताम ।
चहुँ वेद बदन उच्चार जाम ॥६०॥

निज बारि कमंडल अग्नि सींचँ ।
रज संख पानि होमें स बीच ॥
चहुँ वेद मंत्र बल शक्ति पाय ।
तब अग्नि रूप प्रगटे सु भाय ॥६१॥

उत्तङ्ग अङ्ग सुचि तेज धाम ।
झल हलत क्रान्ति तन प्रभा काम ॥
झल हलत मुकुट भृकुटी करूर ।
पल हलत नेत्र आरक्त मूर ॥६२॥

हल हलत दनुज बहु त्रास मानि ।
भुज चारि दीर्घ आयुध सँजानि ॥
यम यज्ञ पुरुष प्रगटे अजोनि ।
कर खँङ्ग धनुष कटि लसै तोनि ॥६३॥

कर जोरि ब्रह्म सों कह्यो धाय ।
मैं करूँ कहा लोकेस आय ॥
जब कह्यो कमलभू सुनहु तात ।
भृगुनाथ कहै सोइ करो बात ॥६४॥

भृगुनाथ कही खल हनू धाय ।
संग सक्ति दइय नृपकै सहाय ॥

---

१ करे फरस धर। २ चउ। ३ मानि जानि। ४ खग।

दसबाहु उग्र आयुध बिसाल ।
आरूढ़ सिंह उर कमल माल ॥ ६५ ॥
सुनि देव मिले अभिशेष कीन ।
नृप अनल नाम कह तासु दीन ॥
नृप कियो युद्ध तिनतै अखंड ।
हनि जंत्रकेत करि खंड खंड ॥
हनि धूम्रकेत जो सक्ति आय ।
नृप हर्ष सहित परसे सु पाय ॥
बहु दैत्य नृपति मारे अपार ।
उठि चली खेत तैं रुधिर धार ॥ ६६ ॥
उबरे सु गये पातालओक ।
भय दनुजहीन सब मृत्युलोक[1] ॥ ६७ ॥

दोहरा छन्द ।

आसा पूरण सबन की । करी शक्ति तिहिँ बार ॥
याही तैँ आशा पुरा । धर्यो नाम निर्धार ॥ ६८ ॥
[2]चहुवानन के वंश मैं । परम इष्ट कुल देवि ॥
सकल मनोरथ सिधि तहाँ । पूजत पावैं सेवि[3] ॥ ६९ ॥
परसराम अवतार भो । हरन सकल भुव भार ॥
जैत राव तिहि वंश मैं । जन्म्यो परम उदार ॥ ७० ॥

छप्पय छन्द ।

जैत राव चहुवान सकल विद्या युत सोहै ।
दान कृपान विधान अखिल भूपति मन मोहै ॥

---

१ मृत्युलोक । २ चाहुआंन । ३ देव, देवि ।

अमित थाट रजपूत बंश छत्तीस प्रमानौ ।
सूर बीर उद्दार बिरद बंदी जु बखानौ ॥
दिन प्रति तेज बढ़तो नृपति शत्रु शंक निसि दिन रहैं ।
बीसंलह भूप अवतंस भुव, आर्थिन् मिलि दारिद दहैं॥७१॥
इक समय आखेट, राव खेलन बन आए ।
सकल सुभट थट संग, बीर बानै जु बनाए ॥
लँखिव इक बाराह, बाजि पिच्छै नृप दिन्निव ।
रँहे संगतै दूरि, सथ्थ बिन राव सु किन्निव ॥
बन विषम बङ्क भूधर बिरह, शुथल पदम भव तप करत।
मृग त्यागि भागि मिल्ले सुऋषि, बंदि चरण सेवा धरत७२

छन्द लघुनाराच।

करे प्रणाम रावयं । शुदिन्न पदूम पावयं ।
उभै सुपाणि जोरि कै । विनै सु कीन कोरि कै ॥७३॥
खुले शुभाग्य मोरयं । लह्यो दरस्स तोरयं ।
अखंड जोग भूपयं । नमः सजीव मोषयं ॥७४॥
त्रिकाल ज्ञान धामयं । रटंत नाम रामयं ।
समस्त योग धामयं । त्रिलोक पूर कामयं ॥७५॥
समीप स्वामि शङ्करं । गणेशयं शुधं करं ।
धरौ सुशीस रथ्थयं । प्रभू सदा समथ्थयं ॥७६॥

दोहा।

प्रसन भए ऋषि पद्म तब । अस्तुति शुनत प्रमान ॥
जैत राज यहिँ थल करौ । राव राखि शिव ध्यान॥७७॥

---

१ बड्ढिय, बड्ढिग। २ बिस्सलह। ३ आयउ, बनायउ।
४ लख्यव। ५ रहयउ। ६ प्रभु सदा सर्थयं। ७ अमान।

हर प्रसन्न भय राव पहँ। मुनिवर पद्मप्रसाद ॥
मिले भीलकुल सकल तहँ। हर्षित मिटे विषाद ॥७८॥

छन्द पद्धरी।

ऋषिराज पद्म आज्ञा सुपाय ।
नृप जैत मित्र मंत्रिय बुलाय ॥
बड़ बणिक गणक कोविद सुजान ।
तिन पुच्छि मंत्र वास्तव प्रमान ॥७६॥
सुभ दिये मुहूरत नीव हेत ।
रणथम्भ नाम औ गढ़ समेत ॥
सब ग्यारह सै दस बरष और ।
सुइ संवत विक्रम कहत मौर ॥ ८० ॥
इषु अर्द्ध अरंगा को प्रसिद्ध ।
रवि अयन सोम्य जान्यो प्रसिद्ध ॥
सब कला पाँच जानो सुइष्ट ।
त्रिय पुरुष लग्न गढ़ कीन इष्ट ॥ ८१ ॥
गत इक्क अंश वृषभानु जानि ।
शशि वेद सार्द्ध मिथुनेस मानि ॥
तृन अंश वृश्चिक के इलानन्द ।
शशि बी सनन्द अजअंश मंद ॥ ८२ ॥
जष राशि जानि नव अंश शुद्ध ।
तम तीन अंश सूरति सु सुद्ध ॥
त्रिय धूमकेतु गुण अंश जानि ।
भृगु सप्त गुरू सत्रा सु मानि ॥ ८३ ॥

तन लग्न उभै जानो सु जानि ।
फल कह्यो वर्ष सत आयु मानि ॥
षष भाव भान तिहिं भवनहीन ।
कछु घटे वर्ष तिन में प्रवीन ॥ ८४ ॥

तिहिं समय अटल थूणी सु थप्प ।
गणनाथ पूजि शुभ मंत्र जप्प ॥
करि होम देव पुज्जे अपार ।
गो भुम्मि रत्न हाटक सुढार ॥ ८५ ॥

दिय दान द्विजन बहु बिधि अनेक ।
नृप जैत सकल पुज्जे बिबेक ॥
तिय करत गान मङ्गल सरूप ।
धुनि दुंदुभि बज्जत अति अनूप ॥ ८६ ॥

सब करहिं हर्ष नर नारि वृन्द ।
यहि भांति नीम रचना सुछंद ॥ ८७ ॥

दोहरा छन्द ।

ग्यारा सै दस अग्गरो । सम्बत माधव मास ॥
शुक्ल तीज शनिवार कै । चंद्र रच्च अनयास ॥८८॥
थूणीगढ़ रणथंभ की । रोपी पदमप्रताप ॥
सुमिरि गणेश गिरीश को । नगर बसायो आप ॥८९॥

वार्ता (वचनिका)।

राव जैत पदम ऋषि की आज्ञा तें गढ़ रणथंभ की नीव दिवाई । ताही समय शहर बसावन की मन मैं

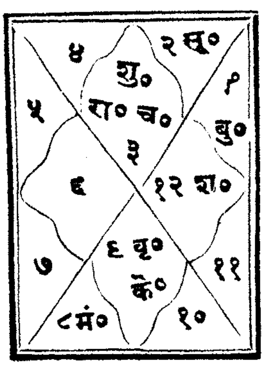
---

१ आय ।

आई । ग्यारा सै दसोत्तरा को संवत् बैशाख की आखै¹ तीज मैं शनीश्चर मैं घड़ी पांच दिन चढ़े मिथुन लग्न मैं नीव दीनी । गणेश पूज कर शिवजी की और पद्म ऋषि की आज्ञा पाय अनेक उछाह करि धन दीनो ।

चौपाई ।

जैत राव थिर थूणी रुथ्थिय ।
भूसुर हंद बंदि पद उथ्थिय ॥
ध्वजा पताक कलस अरु तोरन ।
मङ्गलरूप सुरूप निचोरन ॥ ९० ॥



इष्ट लग्न सू० ५ ॥ २ । ८ ॥
१ । ०० चं० ३ । ४ । मं० ७ । ३०० ।
२० । वृ० ८ । १७ । शु० २७ श०
११ । ९ । रा० २ । ६ के ८ । ३

छन्द भुजङ्गप्रयात् ।

पुरं मन्दिरं चौहटं औ गवाष्यं ।
भुजङ्गप्रयातं प्रबंधं सुभाष्यं ॥
पुरी इन्द्र की शीस वै शुभ्र देखी ।
सबै मंदिरं सुन्दरं उच्च लेखी ॥ ९१ ॥
पैरदा³ जरी बाफतं के बनाए ।
ध्वजा तोरणं सर्ब के गेह छाए ॥
कपाटं सिरी खण्ड हाटक्क सोहैं ।
सबै चित्र सा चित्र सूचित्त मोहैं ॥ ९२ ॥

---

१ रणथंभ की नीव का लग्न । २ अक्षय तृतिया । ३ पड़दा ।

बितानं छये झल्लरी शोभ सानी ।
सबै ठौर सोहै मनौ काम रानी ॥
गृहं द्वार गोखा झरोखा सुहाये ।
चोवा सुगंध इत्र महकंत भाये ॥ ९३ ॥
पसो नग्र रम्यं रचो भूप केरो ।
किते चारु चौकंत भावंत हेरो ॥
बसैं बर्ण च्यारयो यथा संखि बासं ।
चहूं आश्रमं औ तजं लोभ आसं ॥ ९४ ॥
सबै आय आर्य रहै धर्म माहीं ।
चमा शील दानं वृतं नीति आही ॥ ९५ ॥

छप्पय छन्द ।

महा बङ्क गढ़ दृढ़ बुरजि कङ्गुर बर सोहैं ।
चहूं कोध अग अगम चारु दरवाजे मोहैं ॥
घाटी चतुरा सीति[3] विषम अति पच्छिन पावैं ।
बनचर बङ्कट बेस पाय लगि यों गुन गावैं ॥
तुम नाथ हमारे कृपा करि गढ़ लज्जा यह धारिये ।
परबेस[4] मनहुं रवि को प्रगट यह गढ़ हम प्रति पारिये ॥९६॥

दोहरा छन्द ।

च्यारि दरा चहुं ग्राम बसि । घाटी किती जु और ॥
चहूं ओर पर्वत अगम । विचरण थंभ सु जोर॥९७॥

---

१ नित्य । २ क्रोध । ३ घाटी चोइस साटि । ४ और ।
५ तुम नाथ हमार कृपा करी । ६ वेष ।

———:o:———

अथ पद्मऋषि तनपात प्रसंग।

छप्पय।

रषात भँवर ऋषिपद्म।
उग्र तप तेज कराये[1]॥
इन्द्रासन डिगमिगियं[2]।
देवपति शङ्का खाये॥
तब कामादिक बोलि।
शक्र ऋषि पास पठाये॥ ९८॥
करो बिघ्र तब जाय।
भंग पर काज नैसाये[3]॥
तब चल्यव मार निज सेन युत[4]।
ऋतु बसंत प्रगटिय तुरित॥
बह त्रिबिध पवन अद्भुत महा।
कराहिं गान रम्भा सुरति॥ ९९॥

बसन्त ऋतु वर्णन।

छन्द पद्धरी।

तिहि समय काम प्रेर्यौ सुरिन्द्र।
जुहहारि[5] इन्द्र उठि पाव बंदि॥
सब परिकर बोले[6] चढ़ि सुमार।
ऋतु छहूँ संग धनु सुमन हार॥ १००॥
रति परम प्रिया ऋतुराज जानि।
नित रहत निरंतर रूप मानि॥

१ करायो। २ इन्द्र मन माहिं (माझि) डरायो। ३ नठाये। ४ जुरि। ५ जुग। ६ बुल्ले।

बहु किन्नर गावत देव नारि ।
गंधर्व संग अति बल उदार ॥ १०१ ॥
संगीत भाव गावैं अनन्त ।
सुर नर सुनंत बसि होत मंत ॥
बन उपवन फुल्लहि अति कठोर ।
रहे जोरँ भौंरँ रस अंब मौर ॥ १०२ ॥
कल कूंजत कोकिल ऋतु बसंत ।
सुनि मोहत जहँ तहँ सकल जंत ॥
नर नारि भये कामंध अंध ।
तजि लाज काज परिकाम फंद ॥ १०३ ॥
पहुँच्यौ सुमारि ऋषि निकट आय ।
प्रेर्‍यौ सु परम भट अग्ग जाय ॥
ऋषि लखे सुभट सेना सुकाम ।
ऋषि कह्यौ कहा करिहै सुबाम ॥ १०४ ॥
करि कठिन आप लाई समाधि ।
तिहिँ रहत काम क्रोधारि व्याधि ॥
ऋतु ग्रीषम को आज्ञा सु दिन्न ।
तिहि अति प्रताप जाज्वल्लि किन्न ॥ १०५ ॥
रवि तपै विषम अति किरन धूप ।
रवि नैन खुल्लि दिक्खिय अनूप ॥
बट इक महा गह्वर सुजानि ।
तिहिँ निकट सरोवर सुर समानि ॥ १०६ ॥
इक आश्रम सुन्दर अति अनूप ।
तिय गान करत सुन्दर सरूप ॥

सौरभ अपार मिलि मंद पौन ।
　　मृग मद कपूर मिल करत गौन ॥ १०७ ॥
श्रीखंड मेरू केसर उशीर ।
　　तिहिँ परसि ताप मिट्टत सरीर ॥
गंधर्ब और किन्नर सुबाल ।
　　मिलि अंग रंग पहरें सुमाल ॥ १०८ ॥
चित चल्यो नाहिँ ऋषि बज्रमान ।
　　रहि ग्रीष्वं ऋतू हिय हारि मान ॥ १०९ ॥

दोहरा छन्द ।

लग्यौ न ग्रीषम कौ कछू । ऋषि प्रताप तप धीर ॥
तब पावस परनाम करि । आयस काम गहीर ॥ ११० ॥

छंद भूजंगमयात ।

उठे बद्दलं घोर आकाश भारी ।
　　भई एक बारं अपारं अँध्यारी ॥
बहै पौन चारयों महासीत कारी ।
　　चहूँ ओर कोधंत दामिनि अँध्यारी ॥ १११ ॥
घने घोर गज्जंत बर्षत पानी ।
　　कलापी पपीहा रहैं भूरि बानी ॥
तहाँ बाल झूलंत गावंत झीनी ।
　　रही जाग आश्रम भई काम भीनी ॥ ११२ ।
उड़ै चीर सम्मीर लग्गन्त अङ्गं ।
　　लसै गात देखंत जग्गै अनङ्गं ॥

---

१ मेद । २ ग्रीष्म ।

करैं सोर झिल्ली घने दद्दुरंगे ।
तहाँ बाल लीला करैं काम संगे ॥ ११३ ॥
निकट्टं उघट्टंत संगीत बाला ।
बरं अंग अंगं रची फूल माला ॥
कटाक्षं करैं मन्द हासं प्रहारैं[1] ।
तहां पद्म अंगं लगैं ना निहारैं ॥ ११४ ॥

दोहरा छन्द ।

पावस हारि विचारि जिय। ऋषि न तज्यो तप आप ॥
तब सु मैन मन मैं कहिय। उपजे शरद सुताप ॥११५॥

छंद त्रोटक ।

तजिये तप पावस बित्ति सबं ।
ऋतु शारद बादर दीस अबं ॥
सरिता सर निम्मल नीर[2] बहैं ।
रस रंग सरोज सु फुल्लि रहैं ॥११६॥
बहु खंजन रंजन भृंग भ्रमैं ।
कल हंस कला निधि बेद भ्रमैं ॥
बसुधा सब उज्जल रूप कियं ।
सित बासन जानि बिछाय दियं ॥ ११७ ॥
बहु भाँति चमेलिय फूलि रही ।
लषि मार सुमार सुदेह दही ॥
बन रास बिलास सुबास भरैं ।
तिय काम[3] कमान सुतानि धरैं ॥ ११८ ॥

---

१ प्रसारैं । २ वारि । ३ बान ।

भ्रमणें पर तैं नर काम जगै ।
विरही सुनि कै उर घाव लगै ।
धर अंबर दीपक जोति जगी ।
नर नारि लखैं उर प्रीति पगी ॥ ११९ ॥

ऋषि पास त्रिया सर न्हान रच्यो ।
जल केलि अनेक[2] प्रकार मच्यो ॥
खिन चीर अधीर लखै नर बै ।
कुच पीन नितंब सुकाम तबै ॥ १२० ॥

कवरी छुटि नागिनि सी दरसै ।
सुर संग भ्रमै रस सों सरसै ॥
ऋषिराज महा उर धीर अयं ।
रितु सारद हारि सुजात रयं ॥ १२१ ॥

दोहरा छन्द ।

हारि मानि सारद गइय । उठि हेमंत सकोपि ॥
महासीत प्रगटिय जगत । सबै लाज तजि लोप ॥ १२२ ॥

हेमन्त ऋतु वर्णन ।

छप्पय छंद ।

तब सु हेम करि कोप ।
सीत अति जगत प्रकास्यौ ॥

---

१ घ्याव । २ अपुब्ब ।

बिषम तुखार अपार ।
मार उपचार सुभास्यौ ॥
कंपत चैतन रूप ।
कहा जर जरत संमूरे ॥
तिय हिय लागि लगि बचन ।
चरत मुख सैन सरूरे ॥
तिहि समय जीव सब जगत के ।
भये इक्क नर नारि सब ॥
उरबसी आय ऋषि निकट तक ।
हिये लाय मोहि सरन अब ॥ १२३ ॥

दोहरा छंद।

खुली न कठिन समाधि ऋषि। चली हिमन्त सुहारि ॥
सिसिर परस मन बरनि करि। उठी सुकाम जुहारि॥१२४

सिसिर ऋतु वर्णन।

छंद मोतीदाम।

कियो तब मार हुकम सु हेरि .
उठी ससियो[2] तब आयसु फेरि ॥
किये नव पल्लव जे तरु वृंद ।
प्रफुल्लित अम्ब कदम्ब स्वछंद ॥ १२५ ॥
बहै बहु भांति त्रिविद्धि समीर ।
रहै नहिं धीरज होत अधीर ॥

---

१ नचै। २ ससिसिरौ।

लता तरु भेंटत संकुल भूरि ।
भये त्रण गुल्म हरे जड़ मूरि ॥ १२६ ॥
मिटै जग सीत न ताप न तोय ।
सबै सुखदायक जीवन सोय ॥
झुके फल फूल लतावर भार ।
भ्रमैं बहु भृङ्ग जगावत मार ॥ १२७ ॥
लगी लखि वायु सबै तिहिँ बार ।
सुनै डफ ताज तजैं नर नार ॥
बजावत गावत नाचत संग ।
अबीर गुलालरु केसरि रंग ॥ १२८ ॥
भये मतवार सु खेलत[1] फाग ।
महा सुख संग संजोगनि[2] भाग ॥
वियोगनि जारत मारत मार ।
अनेक सुगंध अनेक विहार ॥ १२९ ॥

———:o:———

बसंत ऋतु वर्णन ।

छंद लघुनाराच ।

असंत संत मोहियं । बसंत खोलि जोहियं ॥
बजंत[3] बीन बांसुरी । मृदङ्ग सङ्ग आसुरी ॥ १३०॥
लियं सुबाल वृंदयं । जगत्त काम छंदयं ॥
अनेक रूप सुन्दरी । मनोज राव की छरी ॥ १३१ ॥
स्वबेस केस पासयं । मनो कि मैन फासयं ॥
गुही त्रिबिद्धि बैनियं । कि मोह किन्न सैनियं ॥१३२॥

---

१ खिलुत । २ जुगानि । ३ सुदंग ताल खजरी । उपंग संग अंसुरी ।

महा सुघट्ट पट्टियं । सिंगार भूमि फट्टियं ॥
खिचै सुमंद[1] रेखयं । महा विशुद्ध देखयं ॥ १३३ ॥
विशाल भाल सोभियं । छपा सु नाथ लोभियं[2] ॥
सु मध्य सीस फूलयं । दिनेश तेज तूलयं ॥ १३४ ॥
भरी सु मुक्त मंगयं । मनो नछत्र संगयं ॥
विशाल लाल बिन्दयं । मिले सु भोम चंदयं ॥ १३५ ॥
जराव आड भाइयं[4] । मनो मिलन्न आइयं ॥
दिनेस भौम बुद्धयं । शशि गृहे सु शुद्धयं ॥ १३६ ॥
कपोल गोल आदसं । कि भौंह भौंर सादसं ॥
प्रफुल्लि कंज लोचनं । मृगाक्षि गर्व्व मोचनं ॥ १३७ ॥
त्रिविद्धि रंग गातयं । सु स्याम स्वेत राजयं ॥
बनी कि कीर नासिका । सु गथ्थ नथ्थ भासिका ॥ १३८ ॥
मनो सु काम ओपयं[6] । दयो सुचक्र[7] कोपयं ॥
करन्न फूल राजयं । उभै कि भांन साजयं ॥ १३९ ॥
सुहंत स्याम अल्लकं । भ्रमत्त भौंर वल्लकं ॥
अरुन्न रेख बेसयं । पियूष कोस देखयं ॥ १४० ॥
अनार दन्त कुंदयं । लसंत वज्र दंतयं[8] ॥
बुलंत बाँणि कोकिला । विपंचकी सुरंमिला ॥ १४१ ॥
कपोति पोति कंठयं । सुढार हार गंठयं[9] ॥

छप्पय छंद ।

कुच कंचन घट प्रगट ।
नाभि सरवर बर सोहै ॥

---

१ सुमंग, माङ्ग। २ लोपियं। ३ तुछयं। ४ भालयं। ५ रातयं। ६ वोपयं। ७ चक्र। ८ द्वन्दयं। ९ तठयं।

त्रिबली तापहँ ललित ।
रोम राजी मन मोहै ॥
पंचानन माधि देस ।
रहत सोभा हिय हारी ॥
मनहुँ काम के चक्र ।
उलटि दुंदुभि दोउ डारी[1] ॥ १४२ ॥
दोउ जंघ रंभ कंचन[2] दिपत ।
धरी कमल हाटक[3] तनै ॥
गति हंस लखत मोहत जगत ।
सुर नर मुनि धीरज हनै ॥
जिती उब्बसी संग ।
सकल सम्मूह मिलिय बर ॥
बिचि सु मैन सह सैन गये ।
ऋषि निकट मरूकर ॥ १४३ ॥
गावत विविधि प्रकार ।
करत लीला मन भाइय ॥
हाव भाव परभाव ।
करत आश्रम मैं आइय ॥
ऋषि निकट आय होरिय रची ।
बर्षत रंग अनंग गति ॥
नैन[4] चलौ चित ज्यौँ भौ अचल ।
करत कृपा त्यों त्यों अमित ॥ १४४ ॥

---

१ निसान सुधारी। २ उलटि। ३ हारक। ४ चन।

दोहरा छन्द।

करि बिचार त्रिय कृत कृपा। कुसुम कुन्द गहि लीन ॥
लीलाललित सु बिथ्थरिय[1] ।चंचल बय सु नबीन॥१४५॥
शशि मुख वृंद स्वछंद मिलि। रति सम रूप अनूप ॥
ऋषि समीप क्रीड़ा करति । हरति धीर मुनि भूप॥१४६॥

चौपाई छंद।

बर्षत रंग अनंग सु बाला ।
मनहुँ अनेक कमल की माला ॥
चंचल नैन चलैं चहुं आसा ।
रूप सिंधु मनु मीन सु पासा ॥ १४७ ॥
घूंघट ओट दुरत प्रगटत यों ।
मनो ससि घटा दब्बि[2] उघटत ज्यों ॥
बिलुलित बसन अङ्ग दुति सोहै ।
निरखत सुर नर मुनि मन मोहै ॥ १४८ ॥
अलक सलक[3] अतिसै चटकारी ।
अमी पियत शशि नाग निकारी ॥
छूटै गुलाल मुठी मृदु मसकै ।
चूवै अधर[4] बिंब रस चमकै ॥ १४९ ॥
करैं गान पशु पच्छी मोहै ।
कहो जगत इन पटतर को है ॥
लै लै गेदँ परसपर मेलैं ।
बाल वृंद मिलि मिलि सुख झेलैं ॥ १५० ॥

१ बिस्तरि। २ वोइ। ३ चिलक। ४ अधर बिंब रसकै चसकै।

अध ऊरध चहुँ ओर सुमारैं ।
लजति खिजति लगि[2] प्रेम प्रहारैं ॥
मंद पवन लगि चीर पर्‍यो धर ।
कुच अंकुर डर मनहुँ उभै हर ॥ १५१ ॥

दमकति दिपति सलोनी दीपति ।
काम लता विहरैं मनु गज गति[4] ॥
लगत गैंद कम्पित उर भागी ।
मंद मुसकि ऋषि निकट सुपागी ॥ १५२ ॥

सुमन वृंद सौरभ उठि भारी ।
भ्रमर पुनीति गुँजार उचारी ॥
शरद उन्माद सँधान सु किन्नौं ।
अति रिसि तानि श्रवन उर दिशौं ॥ १५३ ॥

छुटि समाधि ऋषि नैन उघारे ।
अति सकोप सम्मर उर मारे ॥
चहुं दिसि चितै चकित ऋषि भयऊ ।
लखि तिय वृंद अनन्द सु भयऊ ॥ १५४ ॥

लीला गैंद फागु मिसि दौरी ।
ही हो करत उठी बेर जोरी ॥

---

१ अद्ध, उद्ध । २ मिलि । ३ अंबर । ४ झींन लंक अंग झलकत बर । नाभि गँभीर त्रिबलि अति सुंदर । ५ सुनि बादित्र गान कल कीला । काम कोपि सर धनुष सुमीला । ६ पुनिच । ७ त्रिविधि समीर सुहावन जानी । प्रफुलित नूत बैठि धनु पानी । ८ मिलि । ९ कंदुक केलि और मिसि होरी । भोरी निपट लेत चित चोरी । डारि मोहिनिय मोहिब बाला । माया बसि भो ऋषि तिहिं काला ।

बन अकेलि तिय पुरुष न कोऊ ।
लीला अमित देखि दृग दोऊ ॥ १५५ ॥
रंग अपार डारि ऋषि ऊपर ।
कल कल हंस बजत पद नूपर ॥
करैं कटाच्छ अनेक सु बाला ।
नैन सैन सर लगि चित चाला ॥ १५६ ॥
अंग अंग गहि [1]फाग सु मग्गै ।
परसि गात तब काम सु जग्गै ॥
मुख [2]मींडत अञ्जन गहि दिन्नौं ।
जग्यो काम ऋषि काम सु भिन्नौं ॥ १५७ ॥
लखि मुसकानि भई मति भोरी ।
जीति सरस ऋषि कामनि हेरी ॥ १५८ ॥

दोहरा छन्द ।

का नहिं पावक जरि सकै। का नहिं सिंधु समाय ॥
का न करै अबला प्रबल। किहिं जग काल नखाय॥१५९॥
कवि लाखन अबला कहत। सबला जोध कहंत ॥
दुबला तन मैं प्रगट जिहिं । मोहत संत [3]असंत ॥१६०॥
जीति सशिर [4]विन्तिय तबै। फिरि आयव ऋतुराज ॥
मिले उर्बसी पद्म ऋषि । सरे शक्र के काज ॥१६१॥
बिबस भये मुनि [5]अप्सरा। भुल्लिय तप ब्रत नेम ॥

---

१ फाग सुमागै, जागै । २ माड़त । ३ अनंत । ४ बीती ।
५ अच्छरिय ।

निसि बासर क्रीड़ा करत । बढ्यो जु तन मन प्रेम ॥१६२॥
सुरति बढ़ी चित में चढ़ी । मढ़ी मोह मति भूरि ॥
छिन[१] तिय ऋषि रंजत दोउ । भेयउ[२] प्रेम परि पूरि ॥१६३॥
हृदय पुरंदर त्रास गनि । गइय उर्बसी त्यागि ॥
बिन माया ऋषिराज तब । मन सुत्तो[३] सो लागि[४] ॥१६४॥
जाय जुहारे इन्द्र को । काम उर्बसी संग ॥
काज[५] सँवार्‍यौ रावरौ । कर्‍यो कठिन तप भंग॥१६५॥

(वचनिका) वार्तिक ।

तब इन्द्र कामादिक को सत्कार कियो । यहाँ ऋषि पद्म सूतो सौ जाग्यौ । मन महँ विचार करन लाग्यौ । मैं तो माया में पाग्यौ तप खोयो औ कलङ्क लाग्यौ । और अब दोनौं गईं तपस्या तो खण्डित भई, अरू उर्वसी हू जात रही अब यातैं यह शरीर राखनो योग्य नहीं, और मन की बासना भौत ठौर भई तातैं एक शरीर सूँ कछू बनि आवै नहीं । जब ऋषि होम करि शरीर त्यागो । जहाँ जहाँ बासना रही तहाँ ही पाग्यौ ॥ १६६ ॥

दोहरा छन्द ।

तिय बियोग ऋषि तन तज्यौ। ग्यारा सै चालीस ॥
माघ शुक्र द्वादशि सु तिथि । बार बरनि रजनीस॥१६७॥

---

१ राज । २ भेरे । ३ सोवत सो । ४ जागि ।
५ कज्ज ।

छन्द पद्धरी ।

तन पात किन्न ऋषि पद्म आप ।
उर्वसी बिरह तन मन सु ताप ॥
ग्यारा सौ चालीस जानि ।
नृप विक्रम संवत ताहि मानि ॥१६८॥
तप[1] सिद्धि मास अरू बहुत पच्छि ।
ऋतु शिशिर द्वादशी तिथि सु रच्छि ॥
शिववार सोम जान्यौं प्रसिद्ध ।
जित प्रीति योग बिव करन अद्ध ॥१६९॥
रवि अ[2]यन अंश अट बीस मानि ।
शशि जन्म त्रियोदश अंश जानि ॥
सुध मीन लग्न बिगृह सु त्यागि ।
करि हवन जवन सुख हृदय पागि ॥१७०॥
निज प्रथम अंग पंचाङ्ग होम ।
जित रही बासना सरस धोम ॥
ऋषि मुद्गल गोती शिखाहीन ।
वहि तिलक हृदय आयो नवीन ॥१७१॥
शिर भयो पृथ्वीपति जमन ईस ।
जिहिँ राज्य करउ पूरण दिल्लीस ॥
वह रह्यो तिलक दिय परि अनूप ।
तहाँ भै हमीर चहुवान भूप ॥ १७२ ॥
दोउ बाद कर्म्म किन्नो सु चाहि ।
दोउ भए भीर महिमा सु साहि ॥
अरु लग्न उर्वसी चरन सङ्ग ।

---

१ तपसि । २ एण ।

यह भये पञ्च ऋषि पदम अङ्ग ॥ १७३ ॥

(वचनिका) वार्तिक ।

ऋषि पद्म उर्वसी को विरह तन त्यागयौ। माह शुक्ल १२ द्वादशी सोमवार आर्द्रा नक्षत्र प्रीति योग ववकर्ण, सूर्य्य २८ अट्ठाईस, चन्द्रमा मिथुन को तेरा १३ अंश, मीन लग्न मैं देह होमी। पंच अङ्ग होम्यां जितनी वासना जितनी जायग्ग हुई। ताही सों पाँच स्वरूप एक शरीर का हुआ ॥ १७४ ॥

अथ राव हम्मीर को जन्म वर्णन ।

दोहरा छन्द ।

ससि वेद रुद्र संवत गिनो । अङ्क षभू षित साक ॥
दक्षण अयन सु सरद ऋतु । उपजे गये न नाक ॥१७५॥
गजनी गौरी शाह सुत । भय अलावदी साय ॥
ताही दिन रणथंभ गढ़ । जन्म हमीर सु आय १७६॥
यह हमीर नृप जैत कै । अमर करण आचार ॥
मीणा भारू बंधु दोउ । भई नारि तिहिँ बार १७७

छन्द पद्धरी ।

शशि रुद्र वेद संवत सुजान ।
षट सहस इक साको प्रमान ॥
रवि जाम अयन दक्षिण सुगोल ।
ऋतु शरद शुभ्र सुन्दर अमोल ॥ १७८ ॥

तिथि भान उज्जै बल पच्छि जानि ।
रवि घटी तीस अरु दोय मानि ॥
हिर बुध्न वेद घटि घटिय साठ ।
व्याघात योग मुनि घटी आठ ॥ १७९ ॥
बालव्व नाम सोइ कहत कर्ण ।
यहि भांति कह्यउ पञ्चाङ्ग वर्ण ॥
रवि उदय इष्ट घटिका छतीस ।
पल शून्य पंच जान्यूँ सदीस ॥ १८० ॥
पल षोड़श अष्टाबीस दण्ड ।
दिन मान जान तिहिँ दिन सुमण्ड॥
इकतीस चवाली रात्रि मानि ।
सब घटिय साठि दिन राति मानि॥ १८१ ॥
औ जन्म लग्न मिथुनेस आय ।
द्वादसह अंश गत भय बताय ॥
तुलभाँन सप्तदस अंश मानि ।
सरि रुद्र अंश झख रासि मानि ॥ १८२ ॥
मंगल सुबाल धरि एक अंश ।
बुध बारह वृश्चिक मैं प्रशंस ॥
घटि जीव एक अंसह सुशुद्ध ।
भृगु कन्या विद्या शुभग उद्ध ॥ १८३ ॥
शशि मीन तीस कहि एक अंस ।
तिय रासि कह्यौ सुर भानु तंस ॥
सोइ कहे अंश चौबीस पूर ।
यह जन्म लग्न हम्मीर सूर ॥ १८४ ॥

---

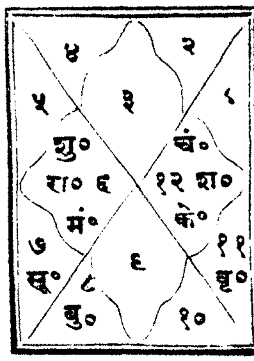
१ आनि ।

सुनि राव जैत मन हर्ष किन्न
भण्डार अमित सब खोलि दिन्न ॥
गुरु विप्र मंत्र मंत्री सु बोलि ।
बहु भीर भइय नृप आय पौलि ॥ १८५ ॥
किय श्राद्ध नन्दि मुख बेद वृद्धि ।
सब जाति कर्म किन्नो सु सिद्धि ॥
गो भुम्मि अन्न कंचन सु दिन्न ।
द्विजराज सकल संतुष्ट किन्न ॥ १८६ ॥
लिय बोलि सकल जाचक सु वृन्द ।
हय हेम सुखासन दीन बन्द ॥
बहु भूषन बाहन बिबिध रङ्ग ।
जिहिँ चाह लही सो दियो सङ्ग ॥ १८७ ॥
दधि दूब हरद भरि कनक थाल ।
बहु गान करत प्रविसंत बाल ॥
दुन्दुभि बजंत घर घर न बार ।
ध्वज कनक पताका द्वार द्वार ॥ १८८ ॥
औछाँह राजमन्दिर अनूप ।
आनन्दमग्न नर नारि भूप ॥
सब दान देत घर घर उछाह ।
सब भय अजाचि जाचत सुताह ॥ १८६ ॥
बहु मङ्गल गावत अति अनूप ।
जय जयति कहत चहुवान भूप ॥ १९० ॥

बचनिका ।

राव जैत कै गढ़ रणथंभवर तहां जैत घर हम्मीर जन्यौ सम्वत ११४१ शाकौ १००६ दक्षिणायन शरद,

ऋतु कार्तिक शुक्ला १२ द्वादशी रविवार घटी ३२ उत्तरा भाद्रपद घटी ६ पल ५६। कछु घर को धन्यौ पायौ। एक सेवक लोह पत्र पाथर सौं धस्यो तहां लोह सोनो (सुवर्ण) भयौ राव जैत को आणि दयो व्याघात योग घटी १६ प० बालवे कर्ण घटी २८ इष्टघटी २६ पल ९ दिनमान घटी २८ पल १६ रात्रिमान घटी ३१ पल ४४ तुल शंक्रान्ति गतांश १७ भोगांऽश १३ चंद्रमा मीन को ११ अंश मङ्गल कन्या को १ अंश बुद्ध बृश्चिक को १२ अंश बृहस्पति कुम्भ को १ अंश शुक्र कन्या को १४ अंश शनि मीन को २९ अंश राहु कन्या को २४ अंश राव हम्मीर असी घड़ी जन्म लियो। सब को मनोर्थ पूर्ण कियो। सर्व्व वंश में हर्ष हुओ और अजमेर चित्तौर जु बोलि विप्र पोष्या जाचक संतोख्या मङ्गल गाए बधावा बजाया ॥ १९१ ॥



हम्मीरराव और अलाउद्दीनपातशाह का बैर वर्णन।

दोहा।

एक समय पातशाह बन, मृगया कहि मन कीन॥
सबै खाँन उमराव चढ़ि, हय गय वृंद सु लीन ॥१९२॥

---

१ सरबस मैं (सर्वस्व में) दान दीन्हों जग यश लीन्हों।

२ भय मन भाये। ३ किन।

हसम सबै पतशाह को, जो सिकार के जोग ॥
साज बाज बनि बनि सकल, अरु अन्दर के लोग ॥१९३॥
सुन्दरता सुकुमार निधि, बहै अपछरा अङ्ग ॥
ताके गुन गनतैं बँध्यौ, निमिष न छाड़त सङ्ग ॥१९४॥

छन्द भुजङ्गप्रयात ।

चले शाह आखेट बज्जे निशानं ।
सबै भूप सथ्थं सुपथ्थं सुजानं ॥
सजे डम्बरं अम्बरं साज बाजं ।
बनी पष्षरं बाजि साजे समाजं ॥१९५॥
किते बीर बाने अमाने अपारं ।
किते मीर धीरं सजे सार धारं ॥
नफीरी बजी भेरि बज्जे रबद्दं ।
बहै उर्बसी संग लीनी समद्दं ॥१९६॥
जके रूप सौं साह बंध्यौ सुजानं ।
यथा चन्द्र की कान्ति चक्कोर मानं ॥
यथा पंकजं वै दुरैफैं लुभाए ।
तथा शाह बंध्यौ सनेहं सुभाए ॥१९७॥
चले हयदलं पयदलं सथ्थ रथ्थं ।
किते स्वान चीता मृगं संग जुथ्थं ॥
चले शाह गोसं सरोसं शुभानं ।
बजे नद्द नीसान नव्वीन चावं ॥१९८॥

---

१ अच्छरी अंग । २ आलादि । ३ समथ्थ । ४ पंकजं
प दुरेफे लुभाए । ५ हत्थम् । ६ बाने सुचानं ।

उठी रेणु आकाश छायौ सुहद्दं ।
मनो पावसं मेघ गज्जे सबद्दं ॥
चले तेज ताजी सुबाजी अपारं ।
सबै खान सुलतान सर्जं जुझारं ॥ १९९ ॥
करैं बीर लीला सुकीली बिधानं ।
धरैं बाँन कम्मान संधान पानं ॥
लखे जीव जेते सु केते जिहानं ।
भ्रमै जंत्र तंत्रं सु पावै न जानं ॥ २०० ॥
बनै बेहरंगोत्र गंभीर नारी ।
बहै नीर नद्दं सुभद्दं उन्हारी ॥
झरै निर्झरं नाद भारी असारं ।
रहे फूलि संकूल वृक्षं अपारं ॥
जहाँ अंब नींबू भए और केलं ।
सबै वृच्छ फुल्ले फले भार मेलं ॥
भरी भार साखा रहीं भुम्मि लग्गी ।
लता संकुलं पाद पंतै उमग्गी ॥
भ्रमै भृंग पुंजं सुगुंजं अपारं ।
मिली बेलि केती महीरुह डारं ॥
मनों मार अप्पार तानै बितानं ।
तिहूं काल हेरै लखै नाहिं भानं ॥२०१॥
रमै कोकिला कीर नच्चै मयूरं ।
कहै बैन मानों बजै कामतूरं ॥
बहै सीत मन्दं सुगन्धं पवन्नं ।
करै काम उद्दीपने देखि बन्नं ॥२०२॥

---

१ सुभद्दं। २ सकोली। ३ भारी। ४ पहारं। ५ वृच्छ फूले।

सुरं[1] सुन्दरं पंकजं बन्न फुल्ले ।
करै कुंज भारी भ्रमै मोर भुल्ले ॥
चहूँ ओर कुम्मोदिनी चारु फुल्ली[2] ।
महा मोद सों भार आनंद झुल्ली ॥
किते जीव सम्मूह देखंत भज्जैं ।
मृगं व्याघ्र चीते रिच्छं यत्र गज्जैं[3] ॥
कहूँ कौलपुंजं कहूँ लील गाहं ।
कहूँ चीतलं पौडुलं[4] व्याघ्र नाहं ॥ २०३ ॥
कहूं भिल्ल भीलबांके[5] बसै ताऽस्थानं[6] ।
भगे सिंह स्यारं समाश्रोन पानं ॥
करै सिंह गुंजार भारी भयानं ।
सुनै प्रानधारी डरै जीव हानं ॥ २०४ ॥
तहाँ शाह की सेन किन्हों प्रवेसं ।
तजे खान पानं लये जो असेसं ॥
करैं बीर जेते सु केते उपावं ।
हनैं जीव जे शाहि को बाँज पावं ॥ २०५ ॥
तहाँ शाह के यो भये जाय डेरा ।
चहुं ओर कौ खांन केते अनेरा ॥
कहूँ बीन वादित्र बाजंत ऐसी ।
सुनै राग मोहं मृगं माल वैसी ॥ २०६ ॥
करै गान तानं पशु पच्छी मोहैं ।
सुनै जीव ओवंत जानै न को हैं ॥

---

१ सरम सुन्दरं पंकजं पुंज । २ फूली झूली । ३ मृगं भार चीते वृकछत्र गज्जै । ४ पाडलं । ५ वङ्क । ६. तास स्थानं । ७ वाच । ८ उपायं, जपायं । ९ बहू । १० मोहै । ११ आनन्द ।

सुनै बीन पैन्बीन सुर नाय रागैँ ।
रहै मोहि कै माल डारै न भागैँ ॥ २०७ ॥
कहूँ राग ऐसो करै मेघ आवैँ ।
तबै साह ताको बड़ी मौज धावैँ ॥
असी भांति आखेट कै रंग भीनों ।
निसा घौस जातंन काहून चीनोँ ॥ २०८ ॥
तिहीं ठौर बित्यौ सुसारौ वसंतं ।
रमै पातसाहं मनो रत्ति कंतं ॥
तिहीं ठौर ग्रीषम्म किन्नो प्रवेसं ।
महा संकुलं वृच्छ राजं सुदेसं ॥ २०९ ॥
तहां[2] तेज भानं न जानं न जानं ।
तिहीँ हेत साहं रहे तास थानं ॥
समो एक ऐसो तहाँ सोइ आयौ ।
महा पौँन परचण्ड आमेघ छायौ ॥ २१० ॥
कहूँ ओर पतसाह खेलैँ सिकारं ।
करैँ केलि जेती जलं वाल लारं ॥
भयो अंधकारं महाघोर ऐनं ।
गई सुद्धि सुज्झै नहीं अप्प[3] नैनं ॥ २११ ॥
फुर्‍यौ[4] साह को सथ्थ भोजथ्थ तथ्थं ।
भयो घोर अंधार सुज्झै न हथ्थं ॥
तजी बालक्रीडा जलं त्यागि भग्गी ।
जंहीँ ओर दौरी भयो मुक्ख अग्गी ॥ २१२ ॥

---

१ पवींन. २ तिहीं तेज भाननं जाने नै जातं । तिहीं देश साहं हे संकवातं । ३ आप । ४ फुर्‍यो ।

किहूं ओर दासी किहूं ओर खोजा ।
किहूं ओर हुरमैं कहूं ओर फोजा ॥
जसो होनहारं बन्यो आय जैसो ।
करो लाख काऊ टरै नांहि तैसो ॥ २१३ ॥

लिखे लेख जो नाहि मिट्टै मुकोही ।
यही बात निश्चै सुनो सव्र्व सोही॥
सरं त्यागि चल्ली सुहुरमैं सुभीतं ।
कँपैं गात ताको रह्यो व्यापि सीतं ॥ २१४ ॥

तहीँ ठौर महिमाँ मिलै सेख आई ।
महा साहसी सूर उद्दारताई ॥
निजं धर्म साधै तजै नाहि राचं ।
कहै जो कछू तो नियाहंत वाचं ॥ २१५ ॥

मिली बाल ताको कही दीन बाँनी ।
उभै[2] वाम सेखं मनो आप जानी ॥
डरो ना कहो आप हौ कौन कोही ।
कहूँ[1] जो उढावो यहां बैठि मोहि ॥ २१६ ॥

तबै बाजि तै ँ सेख भूपैँ जु आयौ ।
कछू बस्त्र हो अंग ताको उढ़ायो ॥ २१७ ॥

दोहराछंद ।

महिमा उत्तर बाजि तै ँ । दियो बस्त्र तिहिँ हत्थ ॥
सीत भीतता ना मिटी । कही हुरम यह गत्थ॥२१८॥
पुच्छिय महिमा साहि तब। को तू आप बताय ॥
मै घरनी पतिसाह की । रूप बिचित्रा नाम ॥२१९॥

---

१ कहूं। २ समै।

जल क्रीड़ा हम करत सब। आयो पोन प्रचण्ड ॥
तब डेरन को भजि चलीं। तामै मेघ सुमंड ॥२२०॥

भयो भयानक तिमिर बन। सबै सथ्थ गय भूल ॥
मैं इकली बन महँ यहाँ। डरति फिरति दुख मूल॥२२१॥

छप्पय छन्द।

तब महिमौ कर जोरि ।
हुरम को सीस नवायो ॥
चढ़यो अस्व की पिट्ठि ।
दैव पहुँचाव सुभायो ॥
कहै हुरम सुन सेख ।
देह कंपत है मोरी ॥
छिनक बैठि यहि ठौर ।
सरन मैं लीनी तोरी ॥
कहै सेख यह बात नहिँ ।
तुम साहिब मैं दास तुव ॥
यह धरम नाहिं उलटी कहो ।
सरन सदा सेवक सुभुव ॥ २२२ ॥

सेख समो पहिचानि ।
स्वामि सेवगन विचारो ॥
काम रूप तुम पुरुष ।
बीर बानैत उदारौ ॥
बहुत काल अभिलाष ।
रही जिय मैं यह भारी ॥

---

१ हुरम कहि कहि सन ओयो।

कोन समो वह होय ।
मिलै महिमा गुन वारिय ॥
सुई करिय आज साहिब सहल ।
सकल मनोरथ सिद्ध हुव ॥
दै योग भोग संयोग यह ।
कोन दोस जग देहु तुव ॥ २२३ ॥

चौपाई छन्द ।

कहै सेख तुम वेगम सचिय
ऐसी बात कहो मति कचिय ॥
मैं अवलो तिय जग मैं जानत ।
भगनी मात सुता सम मानत ॥ २२४ ॥
ता महि तुम हजरति की बाला ।
सब कै एक वहै हकताला ॥
तातैं कहा धर्म मैं हारूँ ।
यह तो कबहूँ जिय न विचारूँ ॥ २२५ ॥
सुनहु सेख वेगम तिय सबही ।
तुम हूँ धर्म्म सुन्यो है कबहीं ॥
तिय तजि लाज कहत रति जाचन ।
कोनहिँ धर्म जो पुरुष अराचन ॥ २२६ ॥
तन मन धन जाचे ते [1]दीजे ।
कह कुरान पूरन सोइ कीजै ॥
पुरुष धर्म्म यह मूर न होई ।
तिय जाचत कों नाटत कोई ॥ २२७ ॥

---

१ दिज्जिय, किज्जिय ।

सोरठा छंद ।

तब जिय सोचि विचारि। मनहीँ मन महिमा समुझि ॥
साँची है यह नारि । धर्म उभै जग महँ प्रगट॥२२८॥

तब महिमा मुसुकाय । कर गहि आलिङ्गन दियौ ॥
इक तरु कै तर जाय । दियो तुरङ्गम बाँधि तब॥२२९॥

जीन पोसतर डारि । सस्त्र खुल्लि रक्खिय निकट ॥
करी सुमार सुमार । उत्कंठा तिय मिलन की॥२३०॥

छप्पय छन्द ।

महा मोद मन बढ्यौ ।
परस्पर तन मन फुल्लिव ॥
मिटिव बङ्क मन सङ्क ।
निसँक है आसन भुल्लिव ॥
मानोँ कोक चकोर ।
चंद लब्भव रविलंबे ॥
घन दामिनि मनु मिलिय ।
कामरतिपति सुख फंबे ॥
दुहुं ओर शोर स्वातिक सुभो ।
गाढ़ो अति आलिंगन हिय ॥
नख खंड नाहि परसे सरहि ।
सकल कोक की केलि किय ॥ २३१ ॥

अंग अंग बिन अंग ।
रंग बढ्ढिव दुहुं ओरन ॥

कढिव बिरह तन ताप ।
परस्पर वर सत मोरन ॥
हाव भाव रति अंग ।
मुदित वर्षत अभिलाषै ॥
करत कटाच्छ प्रकाश ।
बैन मधुरै मुख भाषै ॥
गहि अंग संग आसनहियव ।
कोक कला रस विस्तरिय ॥
आनन्द छंद उन्माद जुत ।
काम बिवस दोउन भइय ॥ २३२ ॥
तिहिं छिन इक मृगराज ।
आनि तत्काल सुगज्जिय ॥
प्रफुलित नयन प्रचंड ।
चँवर सिर उप्पर सज्जिय ॥
विकट दंत मुख विकट ।
बाहु नख विकट सुरज्जै ॥
तिहिं भय वन के जीव ।
सबै गजराज सुभज्जै ॥
आवत देखि तेहिं सिंह को ।
है सभीत इम तिय कहै ॥
बिधि कौन समै यह का भई ।
दैव वारि मैं वपु दहै ॥ २३३ ॥
तब तिय कंपि सभीति ।
उछरि महिमा गरि लग्गिय ॥

....

....

तजहु भजहु अब वेगि ।
बचहु अब प्राण उबारौं ॥
मैं अब पलटै प्राण तजो ।
तुम पर तन वारौं ॥
मुसकाय मीर तब यों कहै ।
न डरि न डरि अबला सुभुव ॥
तुहै जु आब रक्खों भुजन ।
कहा स्याल डरडरत तुव ॥ २३४ ॥

छन्द अर्द्धनाराच ।

गहै कमान बानयं । धरन्त ताहि पानयं ॥
तज्यो न बाल आसनं । गह्यो सरं सरासनं ॥२३५॥
सु सिद्धि राग बागयं । ढए स धीर पागयं ॥
कह्यो हँकारि बाचयं । सम्हारि स्वान साचयं॥२३६॥
करी सुगुञ्ज पुंजयं । उठ्यो सु क्रोध गुंजयं ॥
घर्यौ सु चौर सीसयं । भुजा उठाय रीसयं ॥२३७॥
यथा सुक्रोध कालयं । उठ्यो सु सिंह बालयं ॥
करं कमान लिन्नयं । कसीस तानि दिन्नयं॥२३८॥
लग्यो सुवाण मथ्थयं । लखी अकथ्थ गथ्थयं ॥
लग्यो सुबाँण पार भो । गिर्‍यो सुसिंह स्यार भो२३९॥

दोहरा छन्द ।

सिंह मारि इक बाँण तैं । भूमैं दिन्नौ डारि ॥
फिरि कमाँन तिहिं हथ्थ तैं । धरी जु भूपर धारि २४०

---

१ नान । २ हाथ ।

यह साहस किन्नो प्रगट । सम स्वभाव सम बुद्धि॥
गर्व हर्ष हिय नहिं कछू । प्रगटिय प्रेम प्रसिद्धि२४१
मिलत मिलत मुसुकात मृदु । कंपत हर्षत गात ॥
उचकनि लचकनि मसकिबो । सीकर छूकर बात २४२॥

कवित्त छन्द ।

कंचन लता सी थहरात अंग अंग मिलि, सीकर समूह अंग अंगनि मैं दरसै । चुंबन कपोल नैन खंडन अरध नख, गहत पयोधर प्रचंड पानि परसै ॥ आनद उमंगन मैं मुसकात बाल तुतरात बतरात सतरात रस बरसै । लपटनि झपटनि मसकनि अनेक अंग रति रंग जंग तैं अनंग रंग सरसै ॥ २४३ ॥

छप्पय छंद ।

मिटी पवन परचंड ।
मिटि बमन मथ मद भारिय ॥
हटेउ तिमिर तिहिँ समय ।
प्रगट परकास सुधारिय ॥
सकल सथ्थ जथ तथ्थ ।
मिले [1]अप्पन थल आइव ॥
साहि हुरम को सोध ।
करिव तिहिँ समय सुहाइव ॥
[2]दीनी जु सीख तब सेख को ।
आय आय डेरन गयव ॥
पहुँची सुजाय पतिसाह पै ।
हुरम साह आदर दियव ॥ २४४ ॥

---

१ आपन । २ दिनी जु सिक्ख तब सेख को अप्प अप्प सिवरन गयव ।

तब सु साहि करि क्रुच[1] ।
सकल दिल्लिय दिसि आयब ॥
चढ़िव सेन सम्मूह ।
धूरि उड़ि अंबर छाइब ॥
घुमरि घुमरि निस्सान ।
घोर दुंदभि घन बज्जिय ॥
सकल खान उमराव ।
हरष संजुत मग रज्जिय ॥
[2]कीन्हो प्रवेस निज निज घरन ।
साह महल दाखिल भयव ॥
सुख खान पान सौगन्ध जुत ।
अप आंप[3] रस बसि[4] छइयव ॥२४५॥

ऐक समय पतिसाह ।
हुरम सँग सेज विराजे ॥
दंपति अति रस लीन ।
कोक की कला[6] सु साजे ॥
रमत करत परकार ।
ऐंक[7] आसन रस[8] भीने[9] ॥
सरस परस्पर मुदित ।
उदित कंद्रप तन चीने ॥
तिहिं समय दैव संजोग तैं ।
इक आखू आवत भयव ॥

---

१ कूँच। २ किन्नो। ३ अप्प। ४ बस भयव।
५ अघ। ६ काल। ७ इक्का। ८ रति। ९ भिने।

देखत ताहि पतिसाहि को ।
मदन दंद उत्तरि गयव ॥ २४६ ॥

दोहरा छन्द ।

मूषक हजरति देखिकै । आसन तजि ततकाल ॥
लै कमान संधानि कै । हन्यों तीर लखि चाल॥२४७

चौपाई छंद ।

हजरति हरषि तीर तिहि दीनो ।
चूंहो प्राण हीन तब किन्नो ॥
तबहीं साहि हरषि मुसकाये ।
तिय को ऐसे बचन सुनाये ॥ २४८ ॥

कायर जाति तिया हम जानी ।
तातैं यह हम प्रथमहि ठानी ॥
यह करनी अद्भुत तुम देखी ।
निज कर करी सु तुम अवरेखी॥ २४९ ॥

हंसी हुरम सुनि हजरत बानी ।
पुरुषन की तो अकथ कहानी ॥
मारैं सिंह न तौ मुष भाषै ।
जाचै नाहिं प्राँण वै राखैं ॥ २५० ॥

मैं जग में ऐसा सुनि पाऊँ ।
कहै साहि मैं बहुत बधाऊ ॥
बकसौ गुनह तो अबै बताऊँ ।
तुरत साहि कै पाइ लगाऊँ ॥ २५१ ॥

---

१ चही प्राण हीन निहिं चीनो ।

सोरठा छन्द ।

ऐसा मोहि बताय । सिंह मारि सिफतन करै ॥
बकसौ औगुन आप । जो उन तातज मारियो ॥२५२॥

हुरम तबै कर जोरि । बार बार सिर नाय कै ॥
सुनहु गुनह अब मोर । हजरति बीत्यो आपनो ॥२५३॥

छप्पय छन्द ।

मृगया महँ जिहि समय ।
सकल भूले बन माहीं ॥
महा घोर तम भयो ।
तहां बरनी नहिं जाहीं ॥
तदिन सेख संयोग ।
आनि हमसै तब मिल्लिब ॥
नहिन सेख तकसीर ।
देखि मन मोरहि छल्लिब ॥
संयोग भोग बिछुरन मिलन ।
लिख्यो बिधाता जदिन जहँ ॥
नहि टरै लाख कोऊ करो ।
सुतो होय बहँ तदिन तहँ ॥२५४॥

दोहरा छन्द ।

मैं सेखहिं जानत नहीं । सेख न जानत मोहिं ॥
होनहार संयोग जो । मिटै न उतनी होय ॥२५५॥

सुरति करत सिंह जु उठ्यौ । लख्यौ सेख सति भाय ॥
ले कमान मार्यौ तुरत । तज्यौ न आसन आय २५६॥

सुनू स्वभावज सेख के । लच्छिन कहे जु आप ॥
मैं सभीति भइ सिंह तें । कहे मोहि बिन पाप ॥२५७॥

त्रोटक छन्द ।

सुनिये पन टेक करै निज ये ।
घर बैठत बाँजल सों रजिये ॥
नहिं भोजन सोहि गरम्म करैं ।
उकरु नहिं बैठत भुम्मि भरैं ॥ २५८ ॥

सरणागत आवत नाहिं तजैं ।
पर बाम लखे मन माहि लजैं ॥
जहाँ जावत प्राण न राख तहाँ ।
नहिं झूठ अकारन भाष तहाँ ॥ २५९ ॥

रण मैं नहिं पीठ दई कबहूँ ।
लखि आरतिवन्तन सों अबहूँ ॥
तहाँ मेटत आरति वारतिहीं ।
बिन आसन बैठत है कबही ॥ २६० ॥

मुख से उचरै न टरै कबही ।
सब तें मधुरे मुख बैन सही ॥
द्रग लाज भरे रिझवार घनैं ।
रहनी करनी कविराज भनै ॥ २६१ ॥

महिमा महिमा नहिँ जात कही ।
जस चाहक गाहक गाहक ही॥

वरवीर महारथ धीर अरैं ।
खग खेत गहै अरि खण्ड करै ॥ २६२ ॥
सुनि साहि मनै अचिरज्ज भयो ।
ततकाल जु सेख बुलाय लयो ॥
छिरकाय धरा जल सोँ जुभरे ।
बहु भोजन आनि गरम्म धरे ॥ २६३ ॥
तरगेरि पटंबर अंबरयं ।
करि पालथि छोरिय कम्मरयं ॥
बहु भाँति सिराहि सुभाय मनं ।
करिये तब भोजन आप[1] अनं ॥ २६४ ॥
मिलिये सब जो कछु बाल कहे ।
महिमा तिय जानि सनेह लहे[2] ॥
प्रजुरे पतिसाह सु कोप कियं ।
मनु ज्वाल विशाल सुघृत्त दियं ॥ २६५ ॥
द्रग लाल विशाल सुवक्क भुवं ।
रद दावत[3] ओठ सु ओठ हुवं ॥
करि क्रोध तबै पतिसाह कहै ।
उर मैँ अति क्रोध प्रचंड दहै ॥ २६६ ॥
सुनि जामहि जो तकसीर परै ।
तिहि कोन कहो अब दण्ड धरै ॥
कर जोरि उठ्यो महिमा तब ही ।
हम तो तकसीर भरे सबही ॥ २६७ ॥
तुव गर्दन बेग कबूल करो ।
है तकसीर जु सेख भरो ॥

---

१ अप्प। २ लए। ३ दब्बत।

तब सेख कहै कर जोरि तबै ।
करिबे मन भावतु है जु अबै ॥ २६८ ॥
तब बोलि हुरम्म कहै मुख तैं ।
पहलैं तकसीर परी हम तैं ॥
गरदन कबूल करी अबही ।
पहलैं हमतै तकसीर भई ॥ २६९ ॥
समझे पतिसाह तबै मन मैं ।
अबला हठ नाहिं मिटै मन मैं ॥
इनको सब बेगम लोग कहैं ।
मन चाहत सो हठता जु गहै ॥ २७० ॥

दोहरा छन्द ।

हुरम बचन सुनि साह तब । मन विचार तहँ [2]कीन ॥
बेगम जाति जु तीय की । इनमरबे मन [3]दीन॥२७१॥
जाहु सेख इत मति रहो । जहँ लगि मेरो राज ॥
जो [4]राखै ताको हनूँ । प्रगट सुसाज समाज ॥
कट्टन गरदन जोग तू । [5]कीनो [6]कुविध खराब ॥
को रक्खै या भूमि पर । राखि करै को ज्वाब॥२७२॥

छप्पय छन्द ।

यह महि मण्डल जितो ।
आन मेरी सब मानै ॥
खूनी रक्खै कौन ।
कोउ ऐसा तू जानै ॥

---

१ तन । २ किन । ३ दिन । ४ रक्खै । ५ किन्नो । ६ कुवदि ।

हम ते बली बताय ।
ओट जाकी तू तकै ॥
बचै न काहू ठौर ।
एक बिन गये न मकै ॥
कर जोरि सेख इम उच्चरै ।
बली एक साहिब गिनूं ॥
निर्बीज धरा कबहूं न है ।
मैं हमीर अवनन सुनूं ॥२७३॥

तब सुसेख सिर नाय ।
रजा हजरति जो पाऊँ ॥
जौ न गिने पतिसाह ।
सर्न मैं ताकी जाऊँ ॥
तुमहि न नाऊं सीस ।
नहिँन फिरि दिल्लिय आऊं ॥
जुद्ध जुरैँ नहिँ टरौँ ।
हत्थ तुम कोँ जु दिखाऊँ ॥
यह कहत सेख सल्लाम किय ।
तबहि चला चल चित्त हुव ॥
निज धाम आय अप अनुज सों ।
बिबर बिबर बातैं जुहुव ॥२७४॥

छन्द पद्धरी।

आए जु सेख घर तब सरोष ।
जिय जान्यो अपनो सकल दोष ॥

[1]मिलिये मारि गबरू सुभाय ।
चल चित देखि तिहिँ पूछि जाय॥ २७५ ॥

किहिँ हेतु आज चिन्तत सुभाय ।
किहिँ कियव बैर सो [2]मुहिँ बताय ॥

तिहिँ मारि करूँ ततकाल [3]टूक ।
हिय क्रोध अग्नि [4]सोँ उठत [5]हूक ॥ २७६ ॥

[6]को करै बैर बिन कर्म्म बीर ।
[7]मिटि गये अन्न जल को सु सीर ॥

[8]तिहि कोन रहै रक्खै सु कौन ।
यह जानि मर्म तुम रहो मौन ॥ २७७ ॥

यह सुनत मीर गबरू सुभाय ।
[9]सो पर्‍यो धरनि मुर्च्छा सु खाय ॥

तदि कर्‍यो बोध बहु बिधि सु ताहि ।
नहिँ करो सोच रहु निकट साहि॥ २७८ ॥

तब कहै मीर गबरू सु ताहि ।
सब तजो देश मक्के सु जाहि ॥

कै रहो राव हम्मीर पास ।
तन रहै खुशी नासै जु त्रास ॥ २७९ ॥

तब चलिव सेख तजि साहि देश ।
[10]सब सुभट संग [11]लिन्ने सुवेश ॥

---

१ मिल्लिजु। २ मो। ३ टुक। ४ यों यों। ५ ऊक इक। ६ महिना साह ने कहा। ७ मिटि अन्न जहां जाके समीर। ८ तव। ९ सुइ परयों मुर्छा सुखाइ। १० निज। ११ लीन्हे।

सत पंच सैन गजराज पंच ।
रथ सथ्थ लिये निज नारि संच ॥ २८० ॥
सब रणात साज निज संग लीन ।
[1]दासी जु दास सुंदर नवीन ॥
सजि साज बाज डेरे अनूप ।
लदि ऊँट किते सँग [2]चलिय जूप ॥ २८१ ॥
[3]चढ़ि सेन सज्यो निज संग बाम ।
बज्जिय निशान गज्जिय सु ताम ॥
मग चलत करत मृगया अनेक ।
मिलि [4]चलिय सकल बर बीर [5]ऐक ॥ २८२ ॥
जिहिँ मिलै राव राजा सु जाय ।
पतिसाह बैर सुनि रहै चाय ॥
चहु चक्क फिर्यौ महिमा सुधीर ।
[6]नंहि कह्यो रहन काहू सुपीर ॥ २८३ ॥
[7]है दीन सेख देखो सुझारि ।
बिन राव दसोँ दिसि फिरिय हारि ॥
तब [8]तंकि सेख हम्मीर राव ।
सोइ आइ सरन पर सेखु पाव ॥ २८४ ॥

दोहरा छन्द ।

गढ़ [9]बंक्का बक्को सुधर । बक्का राव हमीर ॥
लखि प्रतीति [10]मंन महँ भइय। हर्षे महिमा मीर ॥२८५॥

---

१ सब दासि दास । २ चले । ३ सजि सेख चढ़यो । ४ चले ।
५ केक । ६ नन कह्यो । ७ द्वै, दोउ दीन दोय । ८ तके ।
९ बक्को । १० जिय में ।

देखि जलाशय विटप बहु। उतरि सु डेरा [1]कीन ॥
हय गय बन्धे तरुन तर । खान पान बिधि [2]लीन २८६
डेरा ड्योढ़ी कर खरे । करी बिछायति वेस ॥
[3]कँरि मिसलति कौंसिल जुरी।सब भर सरस सुदेस२८७॥
मंत्री मंत्र [4]सुपूछि तब । इक चर लीन सु बोलि ॥
जाहु राव के पास तुम । कहो बात सब [5]खोलि२८८॥
प्रथम सलाम कहो जु तुम। [6]विरस कहो सु विसेष ॥
हुकम होय जो मिलन को। तो हाजिर है सेख २८९
इतने मैं जानी परै । पन ध्रम प्रीति प्रतीति ॥
हर्ष सोक यहिँ गति लख्यो। तुम जानत सबरीति२९०॥
तब सु दूत गय राव पहँ । करी खबर दरबान ॥
बोलि हजूरि सु दूत को । पूछत कुसल सुजान॥२९१॥
सकल बात सुनि दूत मुख। हर्ष राव बहु [7]कीन ॥
तबहि उलटि पठयो सुबह। सेख बुलाय [8]सुलीन॥२९२॥

नाराच छन्द।

चल्यो जु सेख राव पहँ बनाय साज [9]कीनयं ।
तुरङ्ग पंच नाग एक साज साजि [10]लीनयं ॥
कमान दोय टङ्कनो सु देस मुल्लतान की ।
कृपान एक बेस देस पालकी सुजान की ॥ २९३ ॥

---

१ किन्न। २ क्लिन। ३ करी कचहरी आय तब। ४ पुच्छि।
५ घुल्हि, खुल्हि। ६ विरत, वृत्त वृत्तान्त। ७ किन्नयं। ८ लिण्णय।
९ किन्नंय। १० तुरङ्ग पंच नाग इक सजिज लिन्नयं।

लिये सु दोय बज्र लाल एक मुक्त मालयं ।
कही जु एक दोय बाज स्वान दोय पालयं ॥
सवार एक आपही सबै पयाद चल्लियं ।
रहे तनक्क पौरि जाय फेरि अग्ग हल्लियं ॥ २९४ ॥

सुषेत हार अग्ग जाय राव को सुनाइयं ।
हमीर राव वेगि आय रावतं खँदाइयं ॥
चले लिवाय सेख को जहाँ जु राव बट्टियं ।
सभा समेत राव देखि सेख को सु उट्टियं ॥ २९५ ॥

मिले उभै समाज सों कुसल्ल छेम पुच्छियं ।
परस्सि पानि पाव सेख हाथ जोरि सुच्छियं ॥
करी जु अग्ग सेख भेट बुल्लियो सु वाचयं ।
सरन्नि राव राखि राखि मैं सरन्नि साचयं॥२९६॥
फिर्‍यो सु मैं जु दीन दोय खान जाति सब्बयं ।
जितेक राज रावताय चत्रि जाति सब्बयं ॥
दिशा दसों जितेक भूप और बीर बङ्क जे ।
रहो कह्यो सु कौन हू रहूँ तहाँ सुधीर जे ॥ २९७ ॥
हँसे हमीर राव बात सेख की सुने तँही ।
कहा अलावदीन, पातसाह, सोभनन्तही ॥
रहो यहाँ अभै सदा हमीर राव यों कहै ।
तजूँ जु तोहि प्राण साथि और बात यों कहै ॥ २९८ ॥

चौपाई छन्द ।

राव हमीर नजर सब रक्खिय ।
बचन सेख को यहि विधि भक्खिय ॥

---

१ इक्क । २ अग्र । ३ आप । ४ हथ्य । ५ रक्खि रक्खि । ६ सुनंके ।

तन धन गढ़ घर ए सब जावैँ ।
पै महिमा पतिसाह न पावैँ ॥ २९९ ॥
कहै सेख प्रण समुझि सु किज्जिय[1] ।
मेरी प्रथम अर्ज सुनि लिज्जिय[2] ॥
दसो दिशा मोँ मैँ फिरि आयव ।
जिते खान सुलतान सु गायव ॥ ३०० ॥
राजा रान राव जितने जग ।
दीन दोय देखे[3] सु अगम मग ॥
बाँध तेग साहस करि कोई[4] ।
तजै लोभ जीवन को सोई ॥ ३०१ ॥
यह जिय जानि वास मुहि दीजै[5] ।
सेख राखि[6] सरनै जस लीजै ॥
इतनी धरा सेस सिर होई ।
कहै साहि रक्खै नहिँ कोई ॥ ३०२ ॥

छप्पय छन्द ।

बार बार क्योँ कहै ।
सेख उत्कर्ष बढ़ावै ॥
एक बार जो कही ।
बहुरि कछु और कढ़ावै[7] ॥
प्रथम वंश चहुवान ।
टेक गहि कबहु छँड़ै ॥
बहुरि राव हम्मीर ।
हठ न छुटै तन छांड़ै ॥

---

१ किज्जे । २ लिज्जे । ३ दिक्खे । ४ कोइय । ५ दिज्जिय ।
६ रक्खि । ७ कहावै ।

थिर रहहु[1] राव इम उच्चरै ।
न डरि न डरि अब सेख तुव ॥
उग्गै न सूर जों तजहुँ[2] तोहि ।
चलहिँ[3] मेरु अरु भुम्मि ध्रुव ॥ ३०३ ॥
बकसि सेख को बाँजि ।
साज कञ्चन के साजे ॥
मुक्त माल, शिर पेंच ।
जटित हीरा[5] छवि छाजे ॥
सकल सथ्थ सिरपाव ।
शाल दिव्व[6] अति भारिय ॥
पंच लक्ख को पट दियो ।
आदर सुवकारिय ॥
दिली सुठौर सुन्दर इकै ।
तेहि देखत हिय हर्षयउ ॥
उछाह सहित उठि शेष तब ।
आनँद मंगल वर्षयउ ॥ ३०४ ॥

दोहरा छन्द ।

महिमानी पठई नृपति । सबै सथ्थ के हेत ॥
खान पान लायक जिते । मधु आमिष सु समेत ॥ ३०५ ॥
जदिन शेख दिल्ली तजी। दत्त सथ्थ दिय ताहि ॥
को रक्खै कित जात यह । लखो जु तुम हूँ वाहि ॥ ३०६ ॥
राख्यो राव हमीर तब । महिमा साह जु पास ॥
कहै राव सोँ दूत तब । मत रक्खो तुम पास ॥ ३०७ ॥
अलादीन सू औलिया । फिरतचहूँदिशिआनि ॥
निबल सबल के बाद सोँ । किनसुखपायोजानि ॥ ३०८ ॥

---

१ होहु । २ तजौं । ३ चलैं । ४ वाच । ५ हीरन । ६ असि ।

मुक्तादाम[१] छंद।

कहै तब दूत सुनो नृप बात ।
बड़ो तुव वंश प्रतापि सुहात[२] ॥
तजो[३] रतनागर को सर हेत ।
रतन्न अमूल्य तजो रज हेत ॥ ३०९ ॥
कहौ गुन कौन रखै इहि सेख ।
जरत जु बाल गहो[४] सुविशेष ॥
अजान असी जु करै नहिँ राव ।
सुनो तुम नीति जु राज स्वभाव ॥ ३१० ॥
तजो अब इक[५] कुटुम्ब बचाय ।
तजो गृह एक सुग्राम सहाय ॥
तजो पुर इक सुदेश बचाय ।
तजो सब आतम हेत सुभाय ॥ ३११ ॥
महा यह नीच अधम्मिय सेख ।
टर्यो नहिं स्वामि तिया गुन देख॥
बढ़ै पतिशाह[६] दिल्लीपति बैर ।
लख्यो नहिं आनन प्रात सुफेर॥ ३१२ ॥
प्रलै जिहिँ रोष तजै धर देह ।
हम्मीर सु राव सुनो रस[७] भेव ॥
बढ़ै निति नेह तुमैं पतिसाह ।
अमीरस मैँ विष घोरत काह ॥ ३१३ ॥
परौ[८] फिर आप नहीं दुःख आय ।
तजो यह जानि प्रथम्म सुभाय ॥

---

१ मोतीदाम। २ सुतात। ३ तजो सरनागत। ४ गही।
५ एक। ६ पुनिसाह। ७ इह। ८ परै।

जथा वह रावन [1]जिति [2]त्रिलोक ।
सुर नर नाग रहैं तिहिँ [3]ओक ॥ ३१४ ॥
करयो तिन बैर जबै रघुनाथ ।
मिट्यो गढ़ लङ्क सुवङ्कम [4]पाथ ॥
कहौ [5]सर कोन करै पतिसाह ।
करै तब जङ्ग बचो नहिँ [6]ताहि ॥ ३१५ ॥

छप्पय छन्द ।

कह हमीर सुनि दूत ।
बचन निज असत न भाख्यौँ ॥
[7]मोँ बिन और न कोय ।
सेख को सरनै राख्यौँ ॥
गहूँ [8]खग्ग सनमुक्ख ।
दुहूँ अति गर्ब सुद्ध दढ़ ॥
लहै मुक्ति मग सत्य ।
किधौँ रणथम्म महागढ़ ॥
कहियो निशङ्क पतिसाह सों ।
सेख सरनि हम्मीर किय ॥
सामान युद्ध जेते कछू ।
सो अनन्त दुग्गह जु लिय ॥३१६॥

दातार छंद ।

सुनि हमीर के वचन ।
दूत दिल्लिय दिसि आयव ॥

---

१ जीति । २ तिलोक । ३ वोक । ४ माथ । ५ सिर । ६ आहि । ७ मुझ बिन । ८ तेग ।

करि सलाम कर जोरि ।
साह को सीस नवायव ॥
पूरब दच्छिन देश ।
और पाच्छिम दिशि आयव ॥
सबै शेख फिरि थाकि ।
कहूँ काहू न रखायव ॥
तब शेख आय रणथम्भ गढ़ ।
दीन बचन इम भक्खियो[1] ॥
सुनि हमीर करुणासहित ।
सेख बचन दै रक्खियो[2] ॥ ३१७ ॥

बहरम खां वजीर बोले।

समद पार गय शेख ।
बार हजरति वह नाहीं ॥
राव शेख क्यों रखै ।
रहत हजरत घर माहीं ॥
फिर न कहौ यह बचन ।
वृथा[3] कवहूँ[4] अनजानै ॥
दूत साह के बचन ।
सुनै सत्कार सुमानै ॥
महरम्म खान इम उच्चरै ।
खबरदार नहिं बेखबरि ॥
कहिये जु बात निज दृगन लखि ।
असी बात नहिं कहो फिरि ॥ ३१८ ॥

---

१ भाखियो। २ राखियो। ३ व्यर्थ। ४ कबहुन।

दोहरा छन्द।

महरम खाँ उज्जीर सों। कहैं बैन पतिसाहि ।
इक फरमान हमीर को। लिखि भेजहु अब ताहि॥३१९॥

छप्पय छन्द।

लिखि हजरति फरमान ।
उलटि एलची पठाये ॥
हठ मति करो हमीर ।
चोर मति रखौ पराये ॥
हम दिल्ली के ईश ।
राव तुम हूँ जु कहावो ॥
बढ़े अलसि जिय माहिं ।
बैर में कहा जु पावो ॥
माल मुलक चाहो जितो ।
कहै शाह बहु [1]लिज्जिये ॥
फरमान [2]बाँचि जिय राव तुम ।
चोर हमारो [3]दिज्जिये ॥ ३२० ॥

दोहरा छन्द।

बाँचि राव फुरमान तब । दियउ सेस तब अंग ॥
बचन दिये मैं शेख को । करों शाह सौं जङ्ग३२१॥
[4]दियउ उलटि फरमान तब। राव साहि कौं ज्वाब ॥
रक्ख्यो महिमा साहि मैं। तजूँ न तिहि मैं आब३२२॥
यह फरमान जु बाँचि कै । करिव साह तब क्रोध ॥
खिज्यो देखि पतिसाह कौं। कियो उजीर सु बोध३२३॥

---

१ लीजिये। २ वंचि। ३ दीजिये। ४ दियो।

छप्पय छंद।

कित्तो गढ़ रणथंभ ।
राव जिस पहँ गर्बाये ॥
दसो देश बसि किये ।
जीति करि पाव लगाये ॥
ईश कहौ अब कौन ।
युद्ध जो हम सों मण्डै ।॥
देत दुनी तैं कढ्ढि ।
गर्ब ताते क्यों मण्डै ॥
साहिब्ब बचन इम उच्चरै ।
अली औलिया पीर गान ॥
महिमा साह जु रक्खि तुव ।
अजहूँ समुझि हमीर मन ॥ ३२४ ॥

दोहरा छंद।

दूजा हजरति का लिखा। बाँचि राव फरमान ॥
बार बार क्यों लिखत है। तजूँ न हठ की बान ॥३२५॥
पच्छिम सूरज उग्गवै । उलटि गंग बह नीर ॥
कहो दूत पतिसाह सों । हठ न तजै [1]हम्मीर ॥३२६॥

छप्पय छन्द।

दियो पत्र ऋषिराज ।
करों जब लग मैं सोइय ॥
जो गढ़ आयो निमत ।
साह रक्खै नहिं कोइय ॥

---

१ तौ हट तजै हमीर।

अनहोनी नहिँ होय ।
होय होनी है सोइय ॥
रजक मोल हरि हथ्थ ।
डर सु मानव क्यों कोइय ॥
नहिं तजूँ शेख कौ प्रण करिव ।
सरन धरम क्षत्रिय तनों ॥
मन है विचित्र महिमा तनो ।
सत्य बचन मुख तैं भनों ॥ ३२७ ॥
चले दूत मुरझाय ।
दिल्लि दिसि कियो पयानों ॥
गढ़ रणथम्भ हमीर ।
साह कैसे कम जानों ॥
हय दल पयदल सेन ।
सूर वर बीर सवायो ॥
हठी राव चहुँवान ।
वंश यहि हठ चलि आयो ॥
यह बिधि सु तुम हूं धर लखै ।
हरे सकल तुम बार बर ॥
अब पतिसाह जु एक भुव ।
कै तुम कै जु हमीर बर ॥ ३२८ ॥
सुनत दूत के बचन ।
साहि जब मन मुसकाये ॥
कितो राज हम्मीर ।
करै हठ मोहि बुलाये ॥
कितेक गढ़ इह ठौर ।
किते उमराव महाबल ॥

किते बाजि गजराज ।
 किते भट बङ्क महाबल ॥
तुम कहो सकल समझाय मुहि ।
 किहिँ हेतु इतै गर्बहिं बढ़ै ॥
हम्मीर राव चहुवान कै ।
 कितो हसम दल सँग चढ़ै ॥ ३२९ ॥

हजरति राव हमीर ।
 बार बहुतैं समझायव ॥
सुनि महिमा को नाम ।
 रोष करि राव रिसायव ॥
करो जुद्ध तिर मुद्ध ।
 साह दल खंडि विहंडौं ॥
धरोँ शीस हर कंठ ।
 सुजस तिहिँ लोकहिँ मंडौं ॥
हम्मीर राव इम उच्चरै ।
 गही [1]टेक छाड़ौं नहीँ ॥
तन जाय रहै जिय [2]सोच नहिँ ।
 लाज धरम खंडोँ नहीँ ॥ ३३० ॥

चौपाई छन्द ।

कहै साहि सुनु दूत सु बैनं ।
 कहो राव को घन धूम एनं ॥
कितोक दल बल सूर समाजं ।
 कित इक गढ़ सामाँ धर राजं ॥ ३३१ ॥

---

१ तेग । २ लोभ ।

रहनी करनी प्रजा प्रतापं ।
बानी [2]विरद दान धन आपं ॥
नीति अनीति ग्राम गढ़ कैसा ।
[3]सहर सरोबर बाट जु जैसा ॥ ३३२ ॥
सत्तरि सहस तुरङ्गम जानों ।
दोय लक्ख पयदल भरमानों ॥
सत्तपंच गजराज [4]अमानों ।
होहि कीच मद बहत [5]सुदानों ॥ ३३३ ॥
रनथम्भौर ग्वालियर बङ्का ।
[6]नरवल औ चित्तौड़ सु तङ्का ॥
रहै जखीरा गढ़ के जेता ।
[7]अनगिन वस्तु न जानत तेता ॥ ३३४ ॥
तुरी सहस इकतीस सु सज्जै ।
अरु गजराज असी मद गज्जै ॥
सूर वीर दस सहस अमानों ।
इते राव रणधीर के जानों ॥ ३३५ ॥

दोहरा छंद ।

मेटि मसीत जु सकल तहँ। कीनै मंदिर देस ॥
बङ्ग निवाज न होय जहँ । श्रवन कथा हरि वेस॥३३६॥
नहिं कुरान कलमा नहीं । मुसलमान नहिं बीर ॥
चारि वरण आश्रम सुखी। देस हमीर सु धीर॥३३७॥
[8]अपनै अपनै धर्म्म में । रहैं सबै नर नारि ॥
राज नीति पन तेज जुत ।[9]करैं राव सुख कारि॥३३८॥

---

१ बाना । २ विर्द । ३ सहस रोष नागजु जैसा । ४ मानैं । ५ दानैं।
६ नलवर मनु चीतोड़ तंका । ७ अगणत । ८ अप्पन । ९ सज ।

कर काहू कै होय नहिँ । दुखी न कोऊ दीन ॥
आश्रम किते नवीन हैं । ऊँचे मंदिर बीन ॥ ३३९ ॥

पद्धरी छंद ।

रणथंभ दुर्ग बहु बिधि सु जानि ।
तिहिँ दरा चारि मग सुगम मानि ॥
घाटी सु चारि अस्सी सु और ।
है गै न चलै अति कठिन ठौर ॥ ३४० ॥
सर बर सु पंच जल अगम सोय ।
बहु रंग कमल फुल्ले सु जोय ॥
चहुँ ओर नीर को नहिन छेह ।
परवत अनूप जल झरैँ एह ॥ ३४१ ॥
सो इहै अगम पहुंचै न खग्ग ।
गढ़ चढ़ै कवन जहँ इक्क मग्ग ॥
अरु भरे दोय भंडार अन्न ।
दस लक्ख कोटि दस सहस मन्न ॥ ३४२ ॥
दस लक्ख सूत सन धरे सांचि ।
छिप दोय लक्ख धरि धातु खंचि ॥
घृत सहस बीस मन भरे हौद ।
दोय लक्ख पैद चहुँ गढ़न कौद ॥ ३४३ ॥
बिन तौल नोन पर्वत सु तच्छ ।
दस सहस अमल आफू समच्छ ॥
मृग मद कपूर केसरि सुगन्ध ॥
भरि रहे भौनँ सौंधे सुबंध ॥ ३४४ ॥

---

१ अनूप । २ लवण ।

नहिँ तौल तेल लोहा प्रमान ।
बारूद सुद्ध नव लच्छ जान ॥
अरुपतो जानि सीसो सु सुद्ध ।
नव लक्ख धरयो संचय समुद्ध ॥ ३४५ ॥
अरु इतौ राव कै नित्त दान ।
पच तोलि पंच मुहरै सुमानि ॥
दस दोय धेनु तरुणी सु बच्छ ।
सोवरन्न शृंग शृंगार सुच्छ ॥ ३४६ ॥
यह अधिक जानि दीजे सु विप्र ।
उग्गन्त सूर दिज्जे सु छिप्र ॥
जीमन्त विप्र सब राज द्वार ।
लंगर सु अनगिनित बटत सार ॥ ३४७ ॥
बहु अन्ध पंगु अरु बधिर कोय ।
सो [१]करै भोज नृप के सजोय ॥
दस दोय अन्न मन परै और ।
खग सकल चुगै तहँ ठौर ठौर ॥ ३४८ ॥
गणनाथ आदि सब लसैं देव ।
नृप आप करत करि नमत सेव ॥
शिव बसैं नन्दि भैरव समेत ।
भव भवा सबै परिकर समेत ॥ ३४९ ॥
दृढ़ महा बङ्क गन्नेस गड्ढ ।
बिन मग्ग सकै पच्छी न चड्ढ ॥
बड़ तोप सतरि गढ़ पै अचल्ल ।
तब छुटत शोर पर्वत सुहल्ल ॥ ३५० ॥

---

१ मुइ करि भोजन ।

छुट्टन्त गर्भ सुक्कन्त[1] नीर ।
मन वज्रपात सुक्कत समीर ॥
आसा सु नाम रानी सु एक ।
पतिव्रत्त धम्म देवी सु टेक ॥ ३५१ ॥

रणथंभ नाथ सुत इक्क पूर ।
चंड तेज मनूँ अंगत सूर[2] ॥
रतनेस नाम जग है विख्यात ।
चित्तौड़ द्रुग्ग पालै सु तात ॥ ३५२ ॥

सँग रहै सुभट थट विकट संग[3] ।
को करै तिनहिं तैं रणहिं रंग ॥
तप तेज राव वृषभान जेम ।
पर दुःख कटन विक्रम सु तेम ॥ ३५३ ॥

देखंत रूप मनु कामदेव ।
सुइ काछ बाछ निकलंक भेव ॥
अरु खेत जुरे नहिं देत पिट्ठि ।
अरि लखात देखि नहिं परत दिट्ठि ॥ ३५४ ॥

बहु बाग चहूं दिसि सघन हेरि ।
गम्भीर गहर उपवन सु भेरि ॥
बहु अम्ब[4] वृक्ष फल झुकत भार ।
दाड़िम समूह निम्बू अपार ॥ ३५५ ॥

बहु सेवराज जामुन समूह ।
नारङ्ग रङ्ग महवा समूह ॥

---

१ सूकत नीर । २ चढ़ि तेज मनहुं उग्गंत सूर । ३ विकट थट्ट रहैं सुभट सँग । ४ आम ।

खिरनी सकेलि नारेल[1] वृन्द ।
    खीरा कि चिरूंजी मधुर कन्द[2] ॥ ३५६ ॥
कटहल कदम्ब बड़हल अनेक ।
    महुवा अनन्त कदलि विशोक ॥
तहँ मोलसिरी सोहैं गँभीर ।
    माधी सफेत सोहंत धीर[3] ॥ ३५७ ॥
फुलवादि गुंज अति भ्रमर होत[4] ।
    प्रफुलित[5] गुलाब चंपा उदोत ॥
कहुँ[6] रही केतिकी वृन्द फूलि ।
    अहि भ्रमर गन्ध सहि रहे फूलि ॥ ३५८ ॥
कहूं रहे केवरा जुही जाय ।
    संदुप्प[7] ओर संभो सु आय ॥
आचीन नगर सा औ असोक ।
    पाटल[8] सच मोलिय बोलि कोक[9] ॥ ३५९ ॥
ए लाल बङ्ग अंगूर बेलि ।
    माधुज्ज लता माधुरी झेलि ॥
तरु ताल तमाल रु ताल और ।
    ता मध्य कमल अरु कुमुद भौर ॥ ३६० ॥
चहुँ ओर सघन पर्वत सुगन्ध ।
    जल जंत्र छुटै उचेस बंध ॥

---

१ नरियल्ल। २ कंज। ३ मधि किते सरयूं सोहतं कीर। ४ फुलवादि भौर गुंजार होत। ५ फुल्लित। ६ बहु। ७ संदूप। ८ पाडल। ९ सतवर्ग और श्रीखण्ड कुंद, किंसुक सुहालती सेवितिहि मन्द। मधुवन वसन्त सिंगार हार, मौलिया मदन सर फुले—र।

पिक मोर हंस चकवा विहंग ।
सुक चाक कोकिल रमत संग ॥ ३६१ ॥

चहुं ओर बाग बारी अनूप ।
तिहिं मध्य दुर्ग रणथंभ भूप ॥ ३६२ ॥

यह दूत के बचन सुनि दरबार कियो ।

छप्पय छन्द ।

क्या हमीर मगरूर ।
पलक मैं[1] पाय लगाऊँ ॥
खूनी महिमा साह ।
उसे गहि दिल्लिय लाऊँ ॥
जीति राव हम्मीर ।
तोरि गढ़ धूरि मिलाऊं ॥
इती जो न अब करूं[2] ।
तौ न पतसाह कहाऊँ ॥
केतेक राज[3] रणथंभ को ।
इतो कियो अभिमान तिहिं ॥
कोपि साह भेजे[4] जबै ।
दसों देस फर्मान जिहिँ ॥ ३६३ ॥
सुने दूत के बचन ।
शाह जिय शंका आइय ॥
चढ़ो कोपि बिन समुझि ।
वहाँ कैसी बनि जाइय ॥

---

१ हरौं । २ मैं साह । ३ राव । ४ पठए ।

हार[1] जीति रन हाथि[2] ।
        आप सम्मत जग होई ॥
तातैं मंत्री मित्र ।
        [3]मंत्र द्रढ़ किज्जिय सोई ॥
यह जानि साह दीबान किय ।
        खान बहत्तरि ईक[4] हुव ॥
यह हठ हमीर को सुन्यों तब ।
        रक्खे शेख सरन्न भुव ॥ ३६४ ॥
आम खास उमराव ।
        सबै पतिसाह बुलाये ॥
राजा राणा राव ।
        खान सुलतान सु आये ॥
हठ हमीर मुक्षि करिव ।
        सेख सरनै निज रक्ख्यो ॥
दियो दूत को ज्वाब ।
        बचन बहु अनबन भक्ख्यो ॥
सब तन्त मन्त जानों सु तुम ।
        देश काल बुधि इष्ट धुव ॥
जिहिं [5]जाहु जाहु जस बुद्धि व्है ।
        [6]कहा नीति उत्तम सु भुव ॥ ३६५ ॥
कहैं सकल उमराव ।
        ईस तुम सम नहिं कोई ॥
तेज प्रताप रु बुद्धि ।
        और दूजो नहिं [7]कोई ॥

१ हारजित्ति। २ हथ्थ। ३ पूछि। ४ एक। ५ आहि २। ६ कहो। ७ साहि तुम जानत साई।

फिरि फिरि जो फरमान ।
  राव को कहा जु लिक्खिय ॥
जो उपजै यहि बार ।
  सोइ प्रभु आपनु [1]अक्खिय ॥
चढ़िये सिकार गीदड़ तणी ।
  तऊ सिंह के [2]बाँधि सर ॥
फिरि लड़ो [3]मैरो संदेह नहिं ।
  तंत मंत यह ही सुबर ॥ ३६६ ॥

महरम खाँ उज्जीर ।
  साह सों ऐसैं [5]भाषै ॥
चहुवानन की बात ।
  सबै [4]अगली मुख भाषै ॥
पहिले हसन हुसैन ।
  [6]सैयद चहुवान [7]सुपेले ॥
सात बेर पृथिराज ।
  गहे गवरी गहि [8]मेले ॥
बीसल दे अरु पित्थ ये ।
  जउ पीर करे अजमेर [9]हनि ॥
महरम्म खां इम उच्चरै ।
  असो वंश चहुवान [10]पंन ॥ ३६७ ॥

---

१ करिय प्रभु अप्पन अक्खिय । २ बंधि । ३ मिलौ । ४ अग्गली । ५ अक्खै । ६ सैद । ७ पिल्लिय । ८ साह गोरी गह मिल्लिय । ० पाठ अधिक है । ९ बीसल दे अरु पित्थ बड़ पीर करिय अजेमर हनि । १० गनि ।

गीदड़ सिंह शिकार ।
साह एको मति जानोँ ॥
रणतभँवर दिस भला ।
आप मति करो पयानोँ ॥
वहाँ राव हम्मीर ।
और रणधीर अमानोँ ॥
अरु सामन्त अनेक ।
अधिक तैं अधिक बखानोँ ॥
बहु दुग्ग बङ्क रणथंभ गढ़ ।
यह बिचारि जिय लिज्जिये ॥
तुम अलावदी पीर अति ।
आप मुहिम्म न किज्जिये ॥ ३६८ ॥

दोहरा छन्द ।

दुग्ग बंक रणथंभ बड़, तुम अलावदी पीर ।
करामाति भै सन गनों, आप और हम्मीर ॥ ३६९ ॥

छप्पय छन्द ।

कालबूत का सेख ।
एक हजरति बनवावो ॥
ताहि मारि तजि रोष ।
कहा जिय क्रोध बढ़ावो ॥
लगै प्राण धन दोउ ।
तबै बाजी कोउ पावै ॥

---

१ सोई यह इक्क न जानों । २ भुल्लि । ३ दुर्ग ।
४ बड़ ।

तजै खेत जस जाय ।
बहुरि कछु हाथ न आवै ॥
खूनी सरन हमीर के ।
रख्यो दीन जानै दोऊ ॥
किज्जे मुहिम्म नहिँ राव पै ।
या में तो सुख है सोऊ ॥ ३७० ॥
मिश्र देश खंधार ।
खरे गज्जिनि दल आये ॥
अरु काबिल खुरसान ।
कोपि पतिसाह बुलाये ॥
रूम स्याम कसमीर ।
और मुलतान सु सज्जे ॥
ईरां तूरां कटक ।
बलख आरब धर गज्जे ॥
सब देस रुहङ्ग फिरङ्ग के ।
झप्पड़ के सज्जे सुबल ॥
अल्लावदीन पतिसाह के ।
चढ़े संग टिड्डी सु दल ॥ ३७१ ॥
चढ़े हिंद के देस ।
प्रथम सोरठ गिरनारी ॥
दक्खिण पूरब देस ।
लये दल बद्दल भारी ॥

---

१ ईरान त्विर और बलख ठठा भष्प रस गज्जे । कटक बलक आरब धर गज्जे । २ सव देस रुहेलरु फिरंगे झगड़ा के सज्जे सुबल । ३ दक्खिन । ४ बल ।

अरु पहार के भूप ।
　　और पच्छिम के जानौं ॥
दसौं दिसा के बीर ।
　　कहा कोउ नाम बखानौं ॥
ग्यारा सै [1]अठतीस थे ।
　　चैत्र मास द्वितिया प्रगट ॥
चढ़े सु साहि अल्लावदी ।
　　करि हमीर पर कटक भट ॥ ३७२ ॥

भुजंगप्रयात छंद ।

चढ़े साहि [2]कोपे सु बज्जे निसानं ।
　　चढ़े मीर [3]गम्भीर सथ्थं सु जानं ॥
उड़ी रेणु आकाश [4]सुज्झै न भानं ।
　　धरा मेरु डुल्लै सु भुल्लै दिशानं ॥ ३७३ ॥
[5]सहै सेस भारं नँ पारं न पावै ।
　　डगै कोल दिग्गज अग्गै सुध्यावै ॥
मनों [6]छाँड़ि बेला समुद्दं उमंडे ।
　　[7]किये है दलं पयदलं रथ्थ तंडे ॥ ३७४ ॥
चढ़े सत्त लक्खं सु हिन्दू सयन्नं ।
　　सबै बीस लक्खं [8]मलेच्छं अयन्नं ॥
[9]तहाँ डाक एकं सहस्सं दुपंचं ।
　　चले बेलदारे लखं च्यारि संचं ॥ ३७५ ॥

---

१ अठासिए। २ कोपं। ३ गम्हीर। ४ सूझै। ५ सम्हार न ॥वै। ६ छंडि़। ७ कियं। ८ मेच्छं। ९ तहाँ पै कड़ाकं।

चले एक[1] लक्खं सु अग्गं[2] सु सोलं ।
अलीखान हिम्मत्ति दोऊ हरोलं ॥
चले वानियाँ संग व्यापार भारी ।
सुतो दोय लक्खं गिनै संग सारी ॥ ३६३ ॥

चली लक्ख च्यारं सु संगं भिठारी ।
पकावैं सुनानं सबै काम वारी ॥
खरं गोखरं यो चले दोय लक्खं ।
फिरैं च्यारि लक्खं गैसत्ती[3] सु रक्खं ॥ ३७७ ॥

दुआ गीर इक्कं सु लक्खं सु चल्ले ।
सुतो लंगरं सो सदा खान मिल्ले ॥
अरब्बी लखं दोइ चल्ले सु संगं ।
रहै तोपखाने सदा जंग जंगं ॥ ३७८ ॥

भरे ऊंट बारूद डेरा सुभारी ।
सुतो तीन लक्खं सजो संग सारी ॥
चले सहस पंचं मतगं सु गज्जं ।
मनो पावसं मेघ माला सु रज्जं ॥ ३७९ ॥

लसै बैरखं सो मनों[4] बिज्ज भारी ।
बरै दान वर्षा मनों[5] भुम्मि कारी ॥
लसै उज्वलं दन्त वग पंक्ति मानों ।
इती साह की सेन सज्जी सुजानो ॥ ३८० ॥
गर्जत निसानं सु सज्जंत भानों[6] ।
मनूँ पावसं मेघ गज्जैं सु मानों ॥

---

१ इक। २ अग्र। ३ गसती। ४ बीज।
५ भूमि। ६ भानों।

सबै सेन सज्जी चल्यो साहि कोपं ।
सबै [1]पंच चालीस लक्खं सु ओपं ॥ ३८१ ॥
तहाँ [2]तीस हज्जार [3]निस्सान बज्जैं ।
मनो घोर सोरं सुनैं मेघ लज्जैं ॥
सताईस लक्खं महाबीर बक्के ।
टरै नाहिँ जङ्गं भये ताम हक्के ॥ ३८२ ॥
[4]परै जोजनं [5]अट्ठ औ दोय फौजं ।
कटे बङ्क बन्नं हटे नाहिँ रोजं ॥
चढ़ं उव्वटं बाट [6]थट्टे सु चल्ले ।
मनो सागरं छंडि बेला उग्गल्ले ॥ ३८३ ॥
जले [7]सुक्कियं नीर नाना सु थानं ।
बहैं औघटं घाट [8]टुट्टन्त मानं ॥
कियो कूच [9]कूचं चले मीर धीरं ।
पर्‍यो जोर हम्मीर के देस तीरं ॥ ३८४ ॥
भजे भुम्मियाँ भुम्मि चल्लं अपारं ।
गये [10]पर्वतं बंक मैवास भारं ॥
सबै राव हम्मीर के देस माहीं ।
भये बीर संधीर जुद्धं समाहीं ॥ ३८५ ॥
[11]तिहीं बिच नल हारणो इक्क गढ्ढं ।
लड़े राव के रावतं जोर दढ्ढं ॥
दिना तीन लौं सो कियो जुद्ध भारी ।
[12]फते पातसा की भई [13]बैनकारी ॥ ३८६ ॥

---

१ पांच। २ तीन। ३ नीसान। ४ परी। ५ आठ।
६ थाटे। ७ सोखियं। ८ टूटंत। ९ कुच्च कुच्चं।
१० पर्व्वतं, पर्व्वयं। ११ तही विच्चि। १२ भते। १३ बनकारि।

चले अग्ग[1] साहं सु सेना हकारी ।
सुनी राव हम्मीर कुप्पे[2] सु भारी ॥
किये रक्त नैनं सु भृकुटी करूरं ।
लख्यो रावतं जोर उट्ठे जरूरं ॥ ३८७ ॥

परी पक्खरं बाजि राजं सु सज्जे[3] ।
बजे नद्द निस्सान[4] आकाश लज्जे[5] ॥
तबै राव हम्मीर को सीस नाये ।
बिना आयुसं साह पै बीर धाये ॥ ३८८ ॥

जुरे आय जुद्धं न दीजो बनासं ।
चढ़े लक्ख चालीस औ पाँच तासं ॥
इतै राव हम्मीर के पंच[6] सूरं ।
अभयसिंह पम्मार रट्ठौर भूरं ॥ ३८९ ॥

हरीसिंह बघेल कूरम्म भीरं ।
चहूवान सद्दूल[7] अजमत्त सीमं ॥
त्रिभागै करी सेन बागै उठाई ।
मिले बीर धीरं अमीरं हटाई ॥ ३९० ॥

दोहरा छन्द ।

पंच सूर हम्मीर के । बीस सहस असवार[8] ॥
उत सब दल पतिसाह को । बज्यो परस्पर सार ३९१ ॥
नदी बना सज उप्परै । रत्ति[9] बसिय पतिसाह ॥
प्रात कुंच[10] नहिं कर सके । आय जुटे नर नाह ३९२ ॥

---

१ अग्र। २ कोपे। ३ साजे। ४ नीसान। ५ लाजे। ६ पांच। ७ सादूदूल। ८ अश्वार। ९ रात। १० कूछ।

पद्धरी छन्द।

चढ़ि चले[1] साह हर बल सधीर।
    तिहिं जुटे राव कूरम सबीर[2]॥
बघेल हरीसिंह अनिय बन्धि।
    चन्देल पयादे भिरिव सन्धि॥ ३९३॥
बिच गोल साह को जितो सुद्ध।
    त्रिन सूर राव के करि[3] न जुद्ध॥
यहि भाँति पंच रावत अभंग।
    पतिसाह सेन सों जुटे जंग॥ ३९४॥
कम्मान श्रवन लगि करिक सीस।
    मनु प्रगट पथ्थ भारथ्थ सीस॥
सर बरसत पावस मनों नीर।
    बहु बेधि कवच धर परत धीर॥ ३९५॥
लगि सेल अंग नहिं पार होत।
    ससि कोरि घटा मैं करि उदोत॥
किरवान बहैं करि करिव क्रोध।
    धर परत सीस धर पुठत[4] जोध॥ ३९६॥
लगि होत कटारिय अङ्ग पार।
    प्रासाद उच्च के खुले द्वार॥
बहु खञ्जर पञ्जर करत पार[5]।
    ऊंची जु उठी सु तो रुहिर[6] धार॥ ३९७॥
मनु पर्वत तैं गेरू पनार।
    बहि चली अंग तैं स्रोन धार॥

---

१ चलिय, चल्यव। २ लह जुट्टि राव कूरंभ बीर। ३ करे।
४ उठत। ५ फार। ६ रुधिर। ७ बहु। ८ रुधिर।

बहु घायल घुम्मत बहुत घाव ।
मनु केसिव किंसुक तरु सुहाव ॥ ३९८ ॥
चल परी साह दल मैं अपार ।
हाहंत सद्द[1] भो दल मँझार ॥ ३९९ ॥

दोहरा छन्द ।

भगिय[2] सेन पतिसाह कौ। लुटी जु रिद्धि अपार ॥
तब महरम खाँ साह सों। अर्ज करी तिहिं बार॥४००॥
हजरति देश हमीर को। निपट अटपटो जानि ॥
भिल्ल कोल तस्कर सबै। और किरात सुमानि४०१॥
सजग रहौ निसि द्यौस सब। गाफलि रहो न मूर ॥
हनिय सेन सब अप्पनिय[3]। तीस हजार सपूर ॥४०२॥
घायल को लखो नहीं। हथ्थिय[4] परे सु बीस ॥
परे बाजि सब ड्यौढ़[5] सत।सुनि जिय अचरिज दीस४०३
परे राव के बीर दस। घायल पंच पचीस ॥
अभय सिंह पम्मार कै[6]। भयो घाव दस सीस॥४०४॥
जाय जुहारे राव कों। कही चमू की बात ॥
तब हमीर सब तैं कही। बाहर लरो न तात ॥४०५॥

छप्पय छन्द ।

तब सु साह करि कुँच[7] ।
चले रणथंभहि आये ॥
सकल सु संकित हियें[9] ।
भीर उमराव सुभाये ॥

१ सब्द। २ भगी। ३ आपनी। ४ हाथी। ५ डेढ़ सौ।
६ अभय सिंह परमार इक। ७ कुंच। ८ दुग्ग। ९ हीय।

जल थल्ल पाधरि सैन ।
  [1]ऐन चहुं ओर सु दिक्खिव ॥
चढि अगार इक [2]उंच ।
  राव बहु भाँति न लक्खिव॥
चहुवान राव [3]हड़ हड़ [4]हस्यो ।
  हेरि सैन इम [5]उच्चरयो ॥
पतसाह किंधौं सो दाजुगर ।
  मानो[6] एक टाँडो पऱ्यो ॥ ४०६ ॥

दोहरा छंद।

फिरि पतिसाह हमीरको। लिखि [7]पठये फरमान ॥
अजहूँ हिंदू समुझि तुव। मिलि तजि सब अभिमान ४०७

छप्पय छन्द ।

मैं [8]मक्के को पीर ।
  दिल्ली पतिसाह कहाऊं ॥
हिंदू तुरक [9]दुराह ।
  सबै इक सार चलाऊं ॥
बीर चारि अरु पीर ।
  रहै मुझ पर चौरासी ॥
महिमा साहि न रक्खि ।
  राव मति करै जु हांसी ॥

---

१ एन । २ उंच । ३ हर, हर । ४ हसिय ।
५ उच्चरिव । ६ परिव । ७ भेजिय । ८ मक्का का ।
९ दोउ राह ।

तुम समुझि[1] सोच जिय अप्पनै[2]।
कहा तोहि फल ऊपजै ॥
परचंड लाभ उट्ठै जु सिर।
इक[3] सेख को नहिं तजै ॥ ४०८ ॥

फिर हमीर फरमान।
साहि को उलटि पठायो ॥
हजरति छत्री धर्म्म।
सुन्यो नहिं श्रवनन गायो ॥
तुम मक्के के पीर।
सूर सुरलोक कहाऊं ॥
तुम सरभर नहिं हसम।
साहि पल[4] मैं जु नसाऊं ॥
नहि तजौं टेक छंडू[5] नयन।
यह विचार[6] निहचै धंन्यो[7] ॥
छिन भंग अंग लालच कहा।
सुजस खोय जीवन[8] कन्यो ॥ ४०९ ॥

दोहरा छन्द।

जैत छाडि जोगी कहा। मत[9] छंडै रजपूत ॥
सेख न सौंपौं साह को। जब लग सिर साबूत ॥४१०॥

छप्पय छन्द।

हजरति नई न करूं।
करूं[10] जैसी चलि आई ॥

---

१ देखि। २ आपनै। ३ एक। ४ मांझ। ५ त्यागू। ६ निश्चय। ७ धरिव। ८ करिव। ९ छांडे। १० एसी।

मुसलमान चहुवान ।
    सदा [1]तैसी बनि आई ॥
ख्वाजै मीरां पीर ।
    खेत अजमेरि खिसाये ॥
असी सहस इक लक्ख ।
    बहुरि मक्का न दिखाये ॥
बीसल दे अजमेर गढ़ ।
    सो नगरा साको कियव ॥
नन बरिय सुंदरी कँवरि सो ।
    साह [2]बहुत लालच दियव ॥ ४११ ॥

प्रथीराज बर सात ।
    साहि गवरी गहि छंडयो ॥
कर चूरी [3]पहिराय ॥
    दंड करि कछुव न मंडयौ ॥
ता पिच्छै गढ़ दिली ।
    साहि गौरी [4]चढ़ि [5]आयव ॥
रेण कुमार अपार ।
    जुद्ध करि सुर पुर [6]धायव ॥
चहुवान वंश अवतंस जो ।
    [7]खग्ग त्यागि नाहिन [8]मुन्यो ॥
[9]छंडू न टेक यह विरद मम ।
    सेख [10]रंक्खि जंगहि कन्यो ॥ ४१२ ॥

---

१ तैसे। २ वहु। ३ पाहिराव। ४ चलि। ५ आए।
६ धाए। ७ खाग। ८ मुन्यव। ९ छाडू। १० राखि।

तजै सेस जो भुम्मि ।
मेरु चल्लै धर उप्पर ॥
उलटि गंग बह नीर ।
सूर उग्गैं पच्छिम भर ॥
धुव चल्लै आकास ।
समद मर्जाद सुछंडै ॥
सती संग पति कढै ।
बहुरि घर आयसु मंडै ॥
थिर रह्यो न यह संसार ।
कोइ सुनो साहि साखी सु धुव ॥
दसकन्ध धरणि अज्जुन जिसा ।
स्वैप्नहि सम दिक्खंत भुव ॥ ४१३ ॥

दोहरा छन्द ।

कलि मैं अमर जु कोइ नहीं । हँसम देखि नहिं भूल ॥
तुम से किते अलावदी । या धरती पर धूलि ४१४॥
अपने को सूर न गिनै । कायर गिनै न और ॥
अपनी कीरत आप मुख । यह कहबो नहिं जोर ४१५
लिखे लेख करतार के । हजरति मेट न कोइ ॥
को जानै रणथंभ गढ़ । अब यह कैसो होय ४१६॥

चौपाई छन्द ।

लिखे हमीर साहि सब बंचे ।
करि मन कोप जंग को नंचे ॥

---

१ उग्गहि । २ आपुस । ३ सुपन । ४ दीखंत ।
५ को । ६ धरनी । ७ धूरि । ८ अप्प । ९ मौनि ।

तीन सहस नीसान सु बज्जे ।
धर अंवर मग सोर सु गज्जे ॥ ४१७ ॥
रणतभँवर चहुँ ओर सु घेरिव ।
दलन समात पुहमि सब हेरिव ॥
[1]किन्न निरोध क्रोध करि बुल्लिव ।
देखो कुबुधि हमीर सु भुल्लिव ॥ ४१८ ॥
जब हमीर हर मंदिर आये ।
बहु बिधि पूजि सु बच्चन सुनाये ॥
धूप दीप आरती उतारी ।
शंकर की अस्तुति उच्चारी ॥ ४१९ ॥

नाराच छन्द ।

नमामि ईश शङ्करं ।
जटी पिनाकयं हरं ॥
शिवं त्रिशूलपाणियं ।
विभुं प्रभुं सुजानियं ॥ ४२० ॥
त्रिनैन [2]अग्गि भालयं ।
[3]गले सु मुंडमालयं ॥
[4]भवानि बाम भागयं ।
ललाट चन्द्र लागयं ॥ ४२१ ॥
[5]धरैं सु सीस गंगयं ।
कपूर गौर अंगयं ॥
[6]भुवंग संग फुंकरैं ।
सु नीलकंठ हूं करैं ॥ ४२२ ॥

---

१ किन । २ अग्नि । ३ गरै । ४ भवा सुभाव भागयं ।
ढरै । ६ भवंग ।

गणं गणेस साम्बुयं ।
कि बीरभद्र जाम्बुयं ॥
प्रसीद नाथ बेगयं ।
करो कृपा सु मे जयं ॥ ४२३ ॥

सहाय नाथ किज्जिये ।
अभय सुदान दिज्जिये ॥
अलावदीन आईयं ।
मलेच्छ[1] संग ल्यायथं ॥ ४२४ ॥

सुलक्ख बीस सातयं ।
चढ़े सु कुप्पि[2] गातयं ॥
प्रताप तेज आप के ।
मिटे कुकर्म्म पाप के ॥ ४२५ ॥

सरन्न शेख आयथं ।
करो सहाय पापयं ॥
उमा सु नाथ नाथयं ।
गहो सुमोर हाथयं ॥
छुटंत लाज गढ्ढयं ।
सरन्नपन्न द्रढ्ढयं ॥ ४२६ ॥

दोहरा छन्द।

शिव स्वरूप उरधारि कैं। मूंदि[3] नयन धरि ध्यान ॥
यह अस्तुति नृप की सुनी। भय प्रसन्न बरदान ॥४२७॥
कहै संभु हम्मीर सुन । कीरति जुग जुग तोर ॥
चौदह बर्ष जु साहि सौं । लरत विघ्न नहिं और॥४२८॥

---

१ मलेच्छ वंश भाइयं। २ कोपि। ३ मुद्दि।

बारै अरु द्वै बरष परि। सुदि असाढ़ सुनि सोइ ॥
एकादसी जु पुष्य कौ । साकौ पूरण होइ ॥४२९॥

यह साको अरू जस अमर । फबै तोहि कलि मांहि ॥
छत्री को जुग जुग धरम । यह समान कछु नाहिं॥४३०॥

हरष सहित[2] हम्मीर तब । ईश चरण दिय सीस ॥
तब मंदिर तैं बिकसि कै । करी जुद्ध कौं रीस ॥४३१॥

शङ्कर कह्यौ हमीर सों । सुनहु रव धुव साषि ॥
सहस सूर तेरे जहाँ । परें मलेच्छ सु लाष ॥ ४३२ ॥

चौपाई छन्द ।

राव हमीर दिवान कराये ।
मंत्री मित्र बंधु सब आये ॥
सूर वीर रावत भट[3] बंके ।
स्वामि धर्म्म तन मन तिन हंके ॥ ४३३ ॥

काछ बाछ दृढ़ बज्र सरीरं ।
माया मोह न लोभ अधीरं[4] ॥
अमृत बचन सबन तैं भष्षे[5] ।
जाचत आपुन प्रान न रष्षे[6] ॥ ४३४ ॥

नाना[7] बिरद बन्दि बिरदावैं ।
लक्ख लक्ख के पटा जु पावैं ॥
काको बीर राव रणधीरह ।
कर्‍यौ जुहारे राव हम्मीरह ॥ ४३५ ॥

---

१ से । २ सहीत, सहित्त । ३ भड़ ।
४ अभीरं । ५ भाषे । ६ राषे । ७ बाना ।

आयस होय करों मैं सोई ।
देखो राव हाथ मम जोई ॥
काकै कन्ह करी जस आगै ।
कनवज कमध्वज सों रँग पागै ॥ ४३६ ॥

कहै हमीर धीर सुनि बानी ।
तुम जु कहो सो मोहि न छानी॥
अब गढ कोट हसम पुर जेते ।
तुम रच्छक हम जानत तेते ॥ ४३७ ॥

दोहरा छंद ।

मैं पहलै पति साह सों । करी बात अब टेक॥
सो अब चौरै साहि सो । करों जंग अब एक ॥४३८॥

त्रोटक छन्द ।

चढिये करि कोप हमीर मनं ।
करि दिढ्ढ सगढ्ढ सम्हारि पनं ॥
बहु तोप सुसिद्ध सँवारि धरी ।
बुरजैं बुरजैं धर धूम परी ॥ ४३९ ॥

बहु कंगुर कंगुर बीर अरे ।
सब द्वारन द्वारन धीर परे ॥
सब ठौरन ठौरन राखि भरं ।
चढ़िये गजपै चहुवान नरं ॥ ४४० ॥

बहु बीर हमीर सु संग चढ़े ।
गजराजन उप्पर द्वंद बढ़े ॥

---

१ हथ्थ । २ सिर पागै । ३ वत्त । ४ चौरह ।
५ सम्भार । ६ बीर धरे । ७ रक्खि ।

करि डम्बर अम्बर सीस लगे ।
मनु सोवत धीर सबीर जगे[1] ॥ ४४१ ॥

बहु चंचल बाजि करन्त खुरी ।
तिन उप्पर पष्षर सोंज परी ॥
नर जान जवान लसैं दल मैं ।
रन मैं उनमत्त लसैं बल [2]मैं ॥ ४४२ ॥

बहु दुंदुभि [3]बज्जत घोरघनं ।
निकसे तब राव करन्न रनं ॥
बाहु बारन बारन बीर कढ़े ।
गज वाजि सु सिंदन जान चढ़े ॥ ४४३ ॥
लखि साह सनम्मुख कोप कियं ।
रणथंभ चहूँ दिसि घेरि लियं ॥
मिलि राव हमीर सु साहि दलं ।
बिफरे बर बीर करंत हलं ॥ ४४४ ॥
सर छुट्टत फुट्टत पार गजं ।
सु मनो अहि पच्छय मध्य रजं ॥

तरवार बहैं कर पानि बलं ।
धर मध्य धरैं धर [4]हक्क खलं ॥ ४४५ ॥
मुख [5]अग्ग बढ़े रणधीर लरैं ।
तिनसों पतिसाह के बीर अरैं ॥
अजमन्त महुम्मद इक्क अली ।
तिन संग असीसु सहस्स चली ॥ ४४६ ॥

---

१ गजे । २ नर धीर मनां दरसैं बल में । ३ बाजत ।
४ हांक । ५ अग्र ।

तिहिं द्वंद अमन्द विलन्द कियो ।
रणधीर महा रण झेलि लियो ॥
करि कोप तबै रणधीर मनं ।
बन बैन कहै पन धारि घनं ॥ ४४७ ॥

माहिमंद[1] अली मुख आय जुर्यौ ।
दुहुँ बीर तहां तब जुद्ध कर्यौ ॥
अजमन्त कमान लई कर मैं ।
रणधीर कै तीर कढ्यौ उर मैं ॥ ४४८ ॥

रणधीर सु कोपि कैं साँगि लई ।
अजमन्त कै फूटि[2] कै पार गई ॥
परियो अजमन्त सु खेत जबै ।
महमन्द अली फिरि आँय[3] तबै ॥ ४४९ ॥

रणधीर सु कोपि के बैन कहै ।
कर देखि अबै मति भुल्लि[4] रहै ॥

किरवान सु धीर के अंग दई ।
कटिटोप कछू सिर माँझ[5] भई ॥ ४५० ॥

तब कोप कियो रणधीर मनं ।
किरवान दई महमन्द तनं ॥
परियो महमंद अमंद बली ।
तब साहि कि सैन सबै जु हली ॥ ४५१ ॥

लुंथि[6] लुथ्थि परै बहु बीर अरै ।
बहु खंजर पंजर पार करै ॥

---

१ महमद । २ रु । ३ आयों । ४ भूलि । ५ माँहि । ६ जुथि ।

धर सीस परै करि रीस मनं ।
कर पाँव कटै बहु कीन पनं ॥ ४५२ ॥

यहि भाँति भिरे चहुवान बली ।
मुरि साह की सेनि सु भग्गि चली[1]॥
बलखीजु परे जु हजार असी ।
लखि[2] कालिय अट्ट सु हास हँसी ॥ ४५३ ॥

चहुवान परे इक जो सहसं ।
सुरलोक सबै वर बीर बसं ॥ ४५४ ॥

दोहरा छन्द ।

असी सहस[3] बलखी परे । महमद अजमत खान ॥
तहां राव रणधीर के । परे सहस इक ज्वान ॥४५५॥
भजी[4] फौज सब साह की । परे मीर दोइ बीर ॥
करे याद पतिसाह तब । गज्जनि गढ़ के पीर ॥४५६॥

चौपाई छन्द ।

भज्जिय[6] फौज साह की जबहीं ।
फिरो फिरो बानी कह सबही ॥
तहाँ साह करि कोप सु बुल्लिब[7] ।
समर भुम्मि अब छंडि सु चल्लिब ॥ ४५७ ॥

सरवसु[8] खाय भोग करि नाना ।
अबै परम प्रिय लागत[9] प्राना ॥

---

१ हली । २ लखि । ३ हजार । ४ भगी । ५ जब ।
भागी । ७ बुल्लिय । ८ सर्वस्व । ९ लग्गत ।

समर विमुख तैं जानव ओई ।
हनूँ आप कर तजों न सोई ॥ ४५८ ॥

सुने साह के कोपि[1] सु बैनं ।
फिरी सैन इक मत्त सु ऐनं[2] ॥
बखतर पक्खर टोप सु सज्जिय ।
जुरे जंग बहु मीर सु गज्जिय ॥ ४५९ ॥

दोहरा छन्द ।

बांदित[3] खां पतिस्याह सों । करी सलाम सु आय ॥
हजरत देखहु[4] हाथ[5] मम । कैसी करूं[6] बनाय॥४६०॥

पद्धरी छन्द ।

करि[7] कोप वादित खां जुरे[8] जंग ।
मनो प्रलै पावक उठे अंग ॥
गुंजत निसान फहरात धुज्ज ।
जुटि जिरह टोप तन नैन सज्ज॥ ४६१ ॥

किये हुक्म साह तन मैं रिसाइ ।
किन्हो सु जंग फिर बीर आइ॥
छूटंत तोप मनु बज्र पात ।
जल सुक्कि धरा छुटि[9] गर्भ जात ॥ ४६२ ॥

बहु बान चलत दोउ ओर घोर ।
अररात[10] अमित मच्यो सु सोर॥

---

१ कोप । २ फिरी सैन इम मंत्र सु अैनं । ३ बदितस्या ।
४ पिक्खहु । ५ हथ्थ । ६ करो । ७ करि कोप जुरे बादित्य जंग ।
८ जुरयो, जुरिग, जुरिव । ९ छुट्टि । १०अरराटि अमित मचि महासोर ।

भये अंन्ध धुन्ध सुज्झै न हथ्थ ।
बर चहुवान तहँ करि अकथ्थ ॥ ४६३ ॥

रणधीर उतै बाघत्ति खान ।
बजरंग अंग जुट्टे सु पान ॥
हज्जार बीस बादित्य साथ[1] ।
सब जुरे आय रणधीर हाथ[2] ॥ ४६४ ॥

बज्जन्त सार गज्जन्त अब्भ ।
रणधीर सथ्थ आयेस सब्भ[3] ॥
करि क्रोध जोध बाहंत सार ।
टूटंत अंग फूटंत[4] पार ॥ ४६५ ॥

करि खेल मेल दोउ[5] ओर बीर ।
बाहंत बीर किरवान धीर ॥
हज्जार बीस बधत्त साह ।
धर परे बीर करि अकथ गाह ॥ ४६६ ॥

रणधीर मीर दोउ भिरे आइ ।
बाधत्त गाहि तब रोम बाइ ॥
लग्गी सुढाल भ्रू टूटि[7] ताम ।
फिर दई सीस किरवान जाम ॥ ४६७ ॥

लग्गी सु सीस धर पर्यौ जाय ।
दुई टुक[8] होय भुमि अरु काय ॥ ४६८ ॥

---

१ सथ्थ । २ हथ्थ । ३ सब्ब । ४ टुट्टंत, फुट्टंत । ५ दोऊ, दुहुं ।
६ साथ । ७ तुट्टि, टुट्टि । ८ टूकि, टुकि ।

दोहरा छन्द ।

भयो सोच जिय साह कै। [1]जितिय जंग हमीर ॥
बादित खां से रन परे । बीस हजार सु बीर॥४६९॥
महरम खाँ कर जोरि कै। करै अर्ज तिहिँ बार ॥
लै कर शेख हमीर अब ।किमि मिल्यो यहिँ बार॥४७०
गही तेग तुम सोँ अबै । हठ नहिं तजै हमीर ॥
सेख देय मिलै नहीं । पन [2]सचो बर बीर ॥४७१॥

छप्पय छंद ।

कर कुरान गहि साह ।
सीस साहिब को [3]नायो॥
गढ़ [4]दिस दल चहुँ ओर ।
घेरि रज अंबर छायो ॥
देखि अलावदि साह ।
कहै दल बद्दल भारी ॥
अब हमीर की अदलि ।
आय पहुँची हमसारी ॥
महरम्म खान इम उच्चरै ।
अदलि [5]हाथ साहिब तनै॥
का होनहार है है अबै ।
को जानै कैसी बनै ॥ ४७२ ॥

दोहरा छन्द ।

हजरति अपने इष्ट पर । पावक जरत पतंग ॥
यह हमीर कबहुं न तजै । सेख टेक [6]रणथंभ ॥४७३॥

---

१ जित्यो, जित्यउ, जीत्यो । २ सांचौ । ३ नाये । ४ देसल ।
५ हथ्थ । ६ गढ़ जंग ।

साह दसों[१] दिसि जित्ति कै। अब आये रणथंभ ॥
कहै राव रणधीर[२] सों। जुरो सूर रण रंग ॥४७४॥

अप्पन धर्म्म न छंडिये। कहै बात रणधीर ॥
निसि बासर अब साह सों। किज्जिय जंग हमीर ॥४७५॥

छप्पय छन्द।

को कायर को सूर।
द्यौस[३] बिन दृष्टि न आवै ॥
बिन सूरज की साखि।
सार छत्री न समावै ॥
बीर गिद्ध[४] अरु संभु।
सकल फलहारी जेते ॥
धर पर धरैं न पांव।
रैन मैं दिनचर जेते[५] ॥
इम कहै राव रणधीर सों।
मैं अधर्म्म नाहिन[६] कहूं ॥
अब अलावदी साह सों।
रैन सार कबहुं न गहूं ॥ ४७६ ॥

दोहरा छन्द।

घाटी घाटी साह के। माटी मिलत अमीर ॥
राव जंग दिन मैं करै। राति लडै रनधीर ॥४७७॥

तारागढ़ के पीर को। करै याद पतसाह ॥
रणतभँवर की फते[७] दे। कदमूं आऊँ चाह ॥४७८॥

---

१ आइय। २ हम्मीर। ३ दिवस। ४ गृद्ध। ५ तेते।
६ नहीन। ७ विजय।

छप्पय छन्द ।

जबहीँ मीरा सयद ।
साह की मदत पठाये ॥
सिर उतारि कर लिये ।
राव परि सम्मुख धाये ॥
जब हमीर की भीर ।
च्यारि सुर सुद्ध सु आये ॥
.... ।
.... ॥
गणनाथ शंभु दिन कर अवर ।
छेत्रपाल मन रज्जिये ॥
रणथंभ खेत दुहुँ ओर सों ।
बीर पीर दुव सज्जिये ॥ ४७६ ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

लरै नो सयदं रणथ्थंभ[1] देवा ।
करै क्रोध भारी पिलै हर्ष भेवा ॥
गरज्जंत[2] घोरन्त आतन्क भारी ।
घनै घोर[3] वर्षंत वर्षा करारी ॥ ४८० ॥
कभ्भू हल्लवै भुम्मि गज्जंत वीरं ।
कभ्भू घोर अन्धार वर्षंत पीरं ॥
गणन्नाथ हथ्थं लिये तिच्छ फर्मी[4] ।
पिनाकी पिनाकं किये आप दर्सी ॥ ४८१ ॥
धरै मुद्गरं हथ्थ[5] भैरव अमानो ।
हसे दैव जुट्टे सु कट्टे अमानो ॥

---

१ रणथम्भ । २ गर्जंत, गज्जंत । ३ घाय । ४ फर्सी । ५ हाथ ।

इतें[1] पीर हजरत्त के सथ्थ पिल्ले ।
अवदल्ल एकं हुसैनं सु मिल्ले ॥ ४८२ ॥
रहीमं सयद्दं सुलत्तान जक्की ।
अहमद्द का नीर सूलं सु मक्की ॥
इतै बीर जुट्टे सु कट्टे पुरानं ।
भयो जुद्ध भारी सु भूले[2] कुरानं ॥ ४८३ ॥
परे खेत नौं[3] सैद् दट्टे धरन्नी ।
हँसे शंकरं भैरवं की करन्नी ॥
परे पीर यूं नौ रसूलं सु अल्ली ।
पर्‍यौ पीर दूजो कुतब्बं सु चल्ली ॥ ४८४ ॥
पर्‍यौ जो हुसैनं कर्‍यौ जुज्झ[4] भारी ।
परे देरि हिम्मत्ति अल्ली सुधारी ॥
सयद्दं सुलत्तान आयो जु मक्का ।
अदल्ली परे और तुक्की सु बंका ॥ ४८५ ॥
पर्‍यौ दूसरो जोर सूलं सु खेतं ।
तबै बादस्याह्न भयो सो अचेतं ॥
परे मीर नौ सैद जानंत साहं ।
लरे अट्ठ बीरं हटै बैन काहं ॥ ४८६ ॥
अजंमत्त भारी हमीरं सु जानी ।
तबै कुच किन्नो दरै छाड़ि कानी ॥
उलट्टे परे जोय किन्नो दिवानं ।
जुरे खान जेते सु तेते अमानं ॥ ४८७ ॥
वजीरं अमीरं सबै खान मुल्ले ।
सबै बात मंत्रं सु मंत्री सु खुल्ले ॥ ४८८ ॥

---

१ इकं । २ भुल्ले । ३ सयद, सद्द । ४ जुद्ध ।

दोहरा छन्द ।

महरम खाँ उज्जीर तब । अरज करी सब [1]खोलि ॥
लख बलखी उमराव तो । सद्कै भये हरोल ॥४८९॥
अरु बकसी के वचन सुनि। साह [2]कियो अति सोच ॥
निबही राव हमीर की । गिनो हमैं सब [3]पौंच॥४९०॥
महिमा साह हमीर गढ़ । ये [4]तीनों साबूत ॥
बाजी रही हमीर की । मैं कायर जु कपूत ॥४९१॥

छप्पय छन्द ।

महरम खां कर जोरि ।
[5]साह कों ऐसैं भाख्यौ ॥
इक हिकमत तुम करो ।
नीक जानो तो [6]राख्यौ ॥
[7]महल छाड़ि करि फते ।
बहुरि गढ़ सों [8]जुध किज्जिय ॥
तोरि छाड़ि रणधीर ।
मारि कैं पकरि सु [9]लिज्जिय ॥
आतंक संक गढ़ मैं परै ।
मिलै राव हठ [10]छंडि कै ॥
गहि सेख देय मिलि सुत्तवै ।
करौं कुच जब उलटि कै ॥ ४९२ ॥

---

१ खुल्लि । २ कियत्र । ३ सोच । ४ दोऊ ।
५ तबै हजरति सों भाख्यौ । ६ रक्खौ । ७ पहलै ।
८ जंग कीजि । ९ लीजे । १० छाड़ि ।

चौपाई छन्द ।

कहै साह महरम खाँ सुनियौ ।
यह मत खूब किया तुम गुनियौ ॥
छाँणि दरा को प्रथम [1]दिली जे ।
चंद रोज महँ फतह जु [2]कीजे ॥ ४९३ ॥

दोहरा छन्द ।

महरम खाँ पतसाह कोँ । हुकम पाय तिहिँ बार ॥
सकल सेन तजबीज करि । घेरी छाड़ि हकारि ॥४९४॥

छन्द वियक्खरी ।

कोप पतिसाह गढ़ छाड़ि लग्गै ।
[3]सहस सब तीन नीसान बग्गै ॥
[4]सहस दस सात आरब्ब छुट्टै ।
गरज गिरि मेरु पाषाण फुट्टै ॥ ४९५ ॥
उठत गुब्बार माहि तोप लग्गै ।
गये बन [5]छंडि मृग सिंह भग्गै ॥
[6]लक्ख पचीस दल और फेर्‌यौ ।
यह भाँति पतिसाह गढ़ छाड़ि घेर्‌यौ ॥४९६॥
कहै पतिसाह नाहिं [7]विलम किज्जे ।
चंद [8]दिन बीचि गढ़ छाड़ि लिज्जे ॥
कहै रणधीर मन धीर धरिये ।
आय [9]चहुवान [10]सफजंग करिये ॥ ४९७ ॥

---

१ दिलिज्जे, दिलिज्जिय । २ किज्जिय । ३ तीन सहस नीसान दल माहि बग्गे । ४ दो सहस आरबौ तेज छुट्टे । ५ छाड़ि । ६ लाख । ७ विलवम्ब, विलम्बं । ८ रोज । ९ चौगान । १० सफरजंग ।

[1]निस्सान सों [2]सद्द सुंदर सुबज्जै ।
राव रणधीर [3]आँयुद्ध सज्जै ॥
बीर रस राग सिंधूर बज्जै ।
सहस इकतीस दल संग [4]लिज्जै ॥ ४९८ ॥

सहस दस सूर कुल तेग [5]खेलैं ।
अप्प जिय [6]रष्षिपर माल पिल्लैं ॥
[7]यँही भाँति रणधीर चौगान आये ।
उड़ि जमीं गर्द असमान छाये ॥ ४९९ ॥

[8]अबदुल्ल [9]कीरम्म पतिसाह [10]पेलै ।
मीर रणधीर चौगान खिल्लै ॥
बहै वान [11]किरवान औ [12]चक्क चल्लैं ।
रणधीर कह सूर तुम होहु भल्लै ॥ ५०० ॥

साह सों सूर सन्मुक्ख जुरिये ।
हवस के मीर दस सहस परिये ॥
टुट्टि सिर मीर धड़ पहुमि लष्षै ।
पंच सत सूर उड़ि [13]गिद्ध भष्षै ॥ ५०१ ॥

राव रणधीर [14]अप्पन सिधारे ।
अबदुल्ल करम खाँ पहुमि पारे ॥
साहि रणधीर [15]सफजंग जुरिये ।
साह दल उलटि दो कोस परिये ॥ ५०२ ॥

---

१ नीसान सो साज सुर सद्द उज्जै । २ शब्द । ३ आयद्ध ।
४ सज्जै । ५ खिल्लै । ६ परमार । ७ इस । ८ अबदुल,अबदुल्ल ।
९ कीरम, करीम, करीम । १० पिल्लै । ११ कैयार । १२ चक्क ।
१३ गिर्ज । १४ आपन । १५ सफरजंग ।

कहै रणधीर नहिं विलंम [1]किज्जे ।
बीति चंद रोज गढ़ छाड़ि [2]लिज्जै ॥
गढ़ कोट हू भाँति नहिं [3]हथ्थ आवै ।
यूं ही पतिसाह दल क्यों खिसावै ॥ ५०३ ॥

दोहरा छन्द ।

बर्ष [4]पंच गढ़ छाणि को । नहिं संवत् पतिसाह ॥
द्वादस बरष रणथंभ सों । निधरक लरि अब साह॥५०४॥

छप्पय छन्द ।

धनि सु राव रणधीर ।
साह मुख आप सराहै ॥
मुझ दिसि सम्मुख आय ।
कोप करि सार समाहै ॥
साह बचन इम कहै ।
मीर महरम खां [5]सुनिजे ॥
[6]जीति जङ्ग रणधीर ।
धन्य वह राव सुभनिजै ॥
पतसाह राडि [7]सफजंग की ।
मनै करिय [8]आपन [9]सबै ॥
चहुँ ओर जोर उमराव सब ।
किये मोर चाइढ अबै ॥ ५०५ ॥

[10]जंबै राव रणधीर कहै ।
हम्मीर [11]सुनिज्जै ॥

---

१ कीजे । २ लीजे । ३ हाथ । ४ पांच । ५ सुनिये । ६ जित्ति ।
७ सफरजंग । ८ अप्पन । ९ सबै ।१० जवसुराव । ११ सुणीजै ।

सबै[1] हिन्द को साथ ।
बोलि रणथंभ[2] सु लिज्जै ॥
लिखि फर्मानहु[3] राव ।
वंश छत्तीस बुलाये ॥
जुरे जंग चौगान ।
उमंग दल बद्दल छाये ॥
कर जोरि सबै हाजिर भये ।
राव बचन विधि या[5] कहै[4] ॥
मैं गही नेग पतिसाह[6] सों ।
धरि जाहु जौन जीवो चहै ॥ ५०६ ॥

कह काको रणधीर ।
राव सुन बचन हमारे ॥
अबै छंडि[7] कित जाहिं ।
खाय करि निमक तिहारे ॥
अलीदीन सों जुद्ध ।
छंडि गढ़ चौरे मंडौ ॥
जिती साहि की सेन ।
मारि खग खगड विहंडो ॥
चाहूं[9] सुनीर या वंश को ।
अकथ गंथ[10] ऐसी करूं ॥
रवि लोक भेदि भेटूं सुभट ।
अप्प[11] सीस हर दिय धरूं ॥ ५०७ ॥

---

१ सभै । २ राणिरणथभं । ३ फुरमाना । ४ अहै । ५ इम ।
६ हजरत्ति । ७ छांडि । ८ जाय । ९ चाहुं । १० गाथ । ११ आप ।

दोहरा छन्द।

कहै राव रणधीर सौं । मंत्र एक रणधीर ॥
जमीति गढ चित्तौर की । अजहुं न आइय बीर॥५०८॥

लिखि फर्मान हमीर तब । पठये गढ़ चित्तौर ॥
[1]बंचि खाँन [2]बल्हन कुँवर ।हर्ष कीन नहिं थोर॥ ५०९ ॥

चौपाई छन्द।

हर्षे उभय कुँवर चहुआनं ।
चतुरँग के [3]तुरंग सजि आनं ॥
सोला सहस चमूँ सजि सारी ।
सजे खाँन [4]बाल्हन सी भारी ॥५१० ॥
सहस [5]तीस कमधज्ज सु जानो[7] ।
सहस [6]अट्ठ चहुवान बखानो ॥
सहस पंच पँम्मार अमानै ।
सोला सहस सजे [8]करिवानै ॥५११ ॥

मोतीदाम छन्द।

मिले तब आय कुमार सु दोय ।
हमीर सुचाव कियो बहु जोय॥
बढ़्यो हिय हर्ष [9]दुहूँ उर सोय ।
[10]कहै तब बैन सु राव सु होय ॥ ५१२ ॥

---

१ बांचि। २ वाल्हन।
३ चतुरंग। ४ अल्हन। ५ तीन। ६ आठ।
७ पठ्वार पै आनो। ८ किरवाना। ९ दहूं।
१० किया सु जहार मिले वर दोय।

किये सनमान सुराव अपार ।
मिलंत [1]कुँवार दयो सिर भार ॥
रख्यौ तुम सेख भये जग धन्य ।
रहै नहिं कोय सदा जग अन्य ॥ ५१३ ॥

रहै जग [2]कित्तिय नित्ति अभंग ।
सदा यह देह [3]कहै छिनभंग ॥
जिते हम सेवक ज्यों अब ठट्ठ ।
रहो निहचित्त अभै यह गट्ठ ॥ ५१४ ॥

करैं हम जंग लखो अब [4]हत्थ ।
उठे दुहुं बीर कही यह गथ्थ ॥
चढ़े चतुरंग कियो तन कोप ।
मनो अरुनोदय भान सु ओप ॥ ५१५ ॥

बजे रणतूर सु भेरि सबद्द ।
भये पद गोमुख बीर सु सद्द ॥
चढ़े कुँवरेस तबै चतुरंग ।
बढ़यो हिय हर्ष करै रण रंग ॥ ५१६ ॥

कहै तब खान सु वाल्हन सीह ।
करे सफजंग [5]अँवँदल वीह ॥
रतन्न कुमार रखो गढ़ ओर ।
[6]नैरव्वल ग्वालिर ओर चितोर ॥ ५१७ ॥

नटे तब अन्न करो सफजंग ।
तजो मति टेक [7]लैरो अनभंग ॥

---

१ कुमार । २ कीरति । ३ नहीं । ४ हाथ ।
५ अबद्दल । ६ नरवर, नरव्वर । ७ लरो जु अभंग ।

असी सुनि बैन हमीर सुभाय ।
भरे जल नैन रहे मुरझाय ॥ ५१८ ॥
कही तब कौर नहीं थिर कोय ।
चलै गिर मेरु नहीं थिर सोय ॥
मिले सुरलोक सस्रोक सकौन ।
सुनी यह राव रहे गहि मौन ॥ ५१९ ॥
गये रनबास जहाँ दोउ बीर ।
कियो परनाम जुहार सुधीर ॥
सबै रनबास भरे जल नैन ।
कही तदि आसमती यह बैन ॥ ५२० ॥
करो तुम उच्छह है यह वार ।
कहे तदि बैन हँसे जु कुमार ॥
धरो तुम सीस हमारे जु मोर ।
लरैं सिर सेहर बाँधि सजोर ॥ ५२१ ॥
बँध्यौ तब मौर कुमारन सीस ।
दई बहु भाँतिन आसु असीस ॥
कियो बहु हर्ष कुमार अपार ।
गये हर मंदिर सो तिहिं बार॥ ५२२ ॥
गनेसुर शंकर पूँजि सुभाय ।
करै बहु ध्यान गहे जब पाय ॥
चढे बरबीर बढ्यो हिय चाव ।
बजे बहु बाजि निसानन घाव ॥ ५२३ ॥

---

१ डरे। २ कहे। ३ दुब। ४ कहे। ५ वुह।
६ तब। ७ सो। ८ बांधि। ९ मोर।
१० पुजि। ११ तव। १२ वाद्य। १३ हाव।

गजे असमान धरा बहु भाय ।
गजे घन घोर घटा मनु छाय ॥
तुरङ्ग अनेक सुफेरत सूर ।
बनी तिन उप्पर पष्षर पूर ॥ ५२४ ॥
झलक्कत नूर चमक्कत सेल ।
चढ़े मुख ओप बढ़े मुख मेल ॥
उड़ै रज अंबर सुज्झ न भान ।
हँसे हर देखत छुट्टिय ध्यान ॥ ५२५ ॥
चली सँग अच्छरि जुग्गनि ताम ।
मिली बहु पंखनि गिद्धनि जाम॥
मिले बहु भूचर खेचर हूर ।
चले पल चारिय भूत सुभूर ॥ ५२६ ॥
करे सु जुहार हमीरहिं धाय ।
करी यह बात परस्सि सुपाय ॥
मिले भव आनि सुनो चहुवान ।
करै कल रीति तजै नहिँ बान ॥ ५२७ ॥
तजौ धन धामरु लोभ सु मोह ।
धरो मनु टेक सरन्न सु जोय ॥
इती कहि सीस नवाय हमीर ।
कियो रणथंभ छिबंधन धीर ॥ ५२८ ॥
चले सनम्मुख उभै कुमरेस ।
सजे चतुरंग तनय करि रेस ॥

---

१ नूर । २ उठी । ३ पेखत, पिख्खत, दिष्षत ।
४ पक्खनि । ५ धाय । ६ पास्सि, परस्सिय, परसिय ।
७ मिलै भव आनि । ८ तजै । ९ चंदन ।

जहाँ पतिसाह अलावदि और ।
चली बर [2]बीराति बाँधि सुमौर॥ ५२९ ॥

दोहरा छन्द ।

करि असवारी कुँमर दोउ । उतरे पौलि सु छाँन ॥
डेरा करे उछाह जुत । बजि नोबति [3]नीसान५३०॥
सुनि नोबति के [4]नाद तब। बहु उछाह गढ़ जान ॥
तब अलावदी हसम दिसी। चाहत [5]भयो निदान॥५३१॥
बोलि खान सुलतान [6]तब। मसलति करी [7]जु साहि ॥
गढ़ में कहा उछाह अति । कहा सबब यह आहि५३२॥
है [9] यह राव हम्मीर के । लघु [8]भय्या के पूत ॥
लरन काज [10]इनसे बरो । [11]सिर बाँध्यो मजबूत५३३
भइय संक पतिसाह उर। कीनो बहुत विचार ॥
जौ न सिंह के मुख चढ़ै । सो झिल्लै इन सार॥५३४॥

चौपाई छन्द ।

कहै वजीर साह सुनि बत्तं ।
मीर [12]अरब्बिय जानि सु तत्तं ॥
मर्कट [13]बदन सूकर सम कानं ।
द्रग मंजार [15]बेसखल जानं ॥ ५३५ ॥

---

१ चले, चढ़े। २ वीरसु। ३ अप्रमाण। ४ नद।
५ भर्या। ६ सब। ७ सु। ८ भ्राता
९ कौन। १० कज्ज। ११ सिर।
१२ बंध्यो इन। १३ आरबी। बदंत, मुख। १४ इव।
१५ बपुख, वपुक्खल।

तुम सों[1] मत प्रथिवराज सु अग्गैं
गढ़ गज्जनि आये[2] गहि खग्गैं ॥
तुमहिं दिली के तख्त बैसाये[3] ।
गोरीसा के भये सहाये ॥ ५३६ ॥
[4]वे दोउ कुमर पकरि अब लावै ।
सन्मुख होइ तो मारि गिरावै[5] ॥
सुनि वजीर के वचन सुहाये ।
मीर जमालखान बुलवाये ॥ ५३७ ॥
कहै साह सुनि मीर जमालं ।
है यह काम तुम्हारै हालं ॥
आगै तुम गहियो प्रथिराजं ।
त्यों[6] तुम गहो कुँवर दोउ आजं ॥ ५३८ ॥

छप्पय छन्द।

सुनि जमाल खाँ मीर ।
हथ्थ धरि मुच्छ सँवारिय ॥
पांव परसि कर जोरि ।
कवन बड़ काज निहारिय[7] ॥
जो आयुस अनुसरों[8] ।
सकल हिन्दू गहि लाऊँ ॥
सम्मुख गहै जु सार ।
मारि तिहिं धूरि मिलाऊँ ॥

---

१ तिहि सामत। २ लाये। ३ बैसाये, बैठाये।
४ बैहुद हुत्र कुमर पकरि गहि ल्याऊं। ५ गिराऊं।
६ तिम। ७ निकारिय। ८ गई।

[1]इम कहि सलाम [2]कीनी तुरत　।
　　सज्जि सथ्थ [3]सब अप्प बल　॥
[4]सजि कवच टोप कर खग्ग गहि　।
　　उभै ओर किन्निय [5]सुहल　॥५३९॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

[6]इतैं कुमर [7]चित्रंग के जंग जुट्टे　।
　　उतैं मीर आरब्ब के बीर छुट्टे　॥
दुहूं ओर घोरं निसानं सु बज्जं　।
　　मनो पावसं मेघ घोरं सु गज्जं　॥५४०॥

दुहूं ओर खंडं प्रचंडं सुभारी　।
　　छुटे नाल गोला बँदूकं सुभारी　॥
भयो सोर घोरं धुँवा घोर घोरं　।
　　गई सुद्धि सुज्झै [8]नहीं नैन ओरं　॥५४१॥
करैं सेल खेलं महाबीर बंके　।
　　फुटै अंग अंगं करै दोय हंके　॥
बहैं तेग अंगं करैं टुक दोई　।
　　हँसी कालिका [9]देखि कौतुक सोई ॥५४२॥
[10]बहैं जम्म दंडं करैं बाहु जोरं　।
　　[11]कढैं अंत अंतं कहूं सीस तोरं　॥

---

१ यह ।　२ किन्नी । ३ सह ।
४ सज्जे सुबीर सिन्दूर, (सिन्धुर) बदन उभै ओर किन्निय सुलह ।
५ सुल्ह ।　६ कौर ।　७ चतुरंग ।　८ मही ।
९ दिक्ख पिक्ख ।　१० चहै ।　११ गहै अंत अंतं ।

कहूं हथ्थ मथ्थं परे बीर [1]बंके ।
उठै रूंड मुंडं करैं जोर [2]हंके ॥५४३॥
उतैं मीर जामील ध्यायो हँकारं ।
इतैं खान धायो भिऱ्यौ इक्क बारं ॥
उतैं मीर तीरं चलायो हंकारी ।
लग्यो बाजि कै सो भयो बारि पारी ॥५४४॥
पऱ्यौ खाँन को बाजि फुट्टौ सु अंगं ।
चढ़े और बाजी कऱ्यौ फेरी जंगं ॥
दई खाँन [3]जम्मील कै अंग बच्छी ।
पऱ्यौ घुम्मि मीरं सुतो आय मुच्छी ॥५४५॥
दोउ सैन देखैं भिरे बीर दोई ।
भये लथ्थ बथ्थं कुमारं सु सोई ॥
पऱ्यौ जोर भारी कुमारं सु जान्यौ ।
तबै राव हम्मीर उप्पर सुठान्यौ ॥५४६॥
लियो बोलि संखोदरं सूर सोऊ ।
करो [4]ऊपरं जाय कुम्मार दोऊ ॥
[5]महाबीर अज्जान बालग्घु सूरं ।
महायुद्ध जानैं इतो बै करूरं ॥५४७॥
चले सूर संखोदरं खेत आये ।
उतै आरबीसेन [6]द्वै लक्ख धाये ॥
उड़ै बान गोला गजें बाजि फुट्टैं ।
बहै बान कम्मान ज्यों मेघ उट्टैं ॥ ५४८ ॥

---

१ वक्के । २ हक्के । ३ जम्माल ।
४ उघरं । ५ महावीर अज्जान बाइ लघु सुसूरं । ६ दोउ ।

धरैं[1] आयुधं[2] बीर सौं बीर बुल्लैं ।
परैं सीस भूमैं[3] किती सीस झल्लैं ॥
कहै खाँन कुम्मार बैनं हँकारी ।
सुनो सर्व सथ्थं[4] करो जुद्ध भारी ॥ ५४६ ॥
रहै नाम लोकं महा मुक्ति मिल्लै ।
रहै नाहिं कोई सदा आय[5] भिल्लै ॥
चलाये गजं कोपि[6] कुम्मार सोई ।
उतं आरबी मीर जम्माल[7] होई ॥ ५५० ॥
तबै बीर बालन्न सी कोप किन्नों ।
महा[8] तेग जम्माल कै मथ्थ दिन्नों ॥
कट्यौ टोप ओपं लगी जाय मथ्थं ।
तबै मीर बालन्न भय लुथ्थ वथ्थं ॥ ५५१ ॥
कटारं कुमारं चलायो[9] सु भारी ।
पऱ्यौ मीर जम्मील भूमै सु धारी[10]॥
सबै सथ्थ जम्माल की कोपि धायो ।
तहाँ बालन्न मारि धरनी[11] गिरायो ॥ ५५२ ॥
तबै खाँन कुम्मार धायो[12] रिसाई ।
घनी सेन आरब्ब धरनी[13] मिलाई ॥
तबै बीर संखोदरं जंग[14] कीनो ।
किते आरबी खेत पाऱ्यौ नवीनों ॥ ५५३ ॥

---

१ झरै । २ आवचं । ३ भुम्मी । ४ सत्थम् ।
५ आप । ६ कार्य्य । ७ जम्मीर । ८ तैव्र तेग। जम्मील के अंग दीनो । ९ लगायो । १० धारी ।
११ मिलायो । १२ धाये । १३ गिराई ।
१४ जुद्ध ।

किते सेल खेलं करै वार पारं ।
भभकैं घटैं घाव छुट्टे पंनार ॥
बहैं तेग वेगं परे सीस भारी ।
उड़ैं घोर रूंडं परैं मुंड कारी ॥ ५५४ ॥

परे दोय कुम्मार किन्नी अकथ्थं ।
बरी अच्छरी सूर लोकं सु मथ्थं ॥
परे मीर आरब्ब के पोन लक्खं ।
तहाँ हिन्द की भीर सौरा सुभक्खं॥ ५५५ ॥

परे दो कुमारं महाबीर बंके ।
परे एक संखोदरं कीन हंके ॥
तहाँ आठ हज्जार चहुवान जानं ।
परे तीन हज्जार कमधज्ज मानं ॥ ५५६ ॥

पँमारं परे पाँच हज्जार सोई ।
परे बीर सोला सहस्त्रं सुजोई ॥
परे स्वामी के कज्ज कुम्मार दोई ।
सुनी राव हम्मीर जीते सु सोई ॥
भजे आरबी ज्यों बचे जंग तेयं ।
कहै साह देखो सु हिन्दू अजेयं ॥ ५५७ ॥

दोहरा छन्द ।

परे सहस सत्तरि तहाँ । मीर अरब्बिय संग ।
हय गय पाँच हजार परि। सत जमाल से अंग५५८॥

---

१ परी । २ सुमत्थं ३ अट्ट । ४ ज्वानं । ५ काम ।
६ रहे । ७ आरबी । ८ तहां परे सोरह सहस दुहू कुंवर के संग ।

छप्पय छन्द।

तब सु राव रणधीर ।
साहि[1] पै तेग समाही ॥
समो[2] सु पहोंच्यो आय ।
सु तो मिट्टै नहिं काही ॥
चढ़े खेत रणधीर ।
साहि दोनूं[3] बतराये ॥
तजै न हठ हम्मीर ।
कहा जो तुम सत[4] आये ॥
रणधीर राव इम उच्चरै ।
समुझि साहि चित लिज्जिये ॥
गढ़ रणथंभ हमीर को[5] ।
हजरति हट्ठ न किज्जिये ॥५५९॥
कहै साहि रणधीर ।
राव को किन समझावो ॥
करो राज रणथंभ ।
सेख[6] को कदमों लावो ॥
होनहार सो भई ।
मिटे मेटी न मिटाई ॥
घटै हटै हठ राव ।
तबै हमरी पतिसाई ॥
नहिं तजै राव हठ मैं तजौं ।
कौन सहाय मो सौं कहै ॥

---

१ साहि सौं। २ संमत। ३ दोऊ। ४ बतरार।
५ का। ६ सेख गहि कदमु लाओ।

यह प्रगट [1]बत्त [2]संसार महि ।
भिरैं दोय [3]ऐकै रहै ॥५६० ॥

कहै राव पतिसाह ।
सुनों रणधीर अमानों ॥

इतो राज तुम करो ।
जितो हम सों नहिं छानों ॥

[4]ये गढ़ चार सु धीर ।
हुकुम किस्के तुम पाये ॥

[5]कबहुक फिरे रकेब ।
सीस कबहु [6]नहिं नाये ॥

गिरि सूरज पलटै पहुमि ।
कोटि बचन कह कोय किन ॥

सेख छाड़ि उलटौ फिरै ।
यह कबहुंक सु होय हिन ॥५६१ ॥

दोहरा छन्द ।

चढ़े साहि दल विपुल जब । [7]छेकिव गढ़ रणधीर ॥
तब चहुवान रिसाय के ।सम्मुख [8]जुड़े सु बीर५६२॥

छन्द त्रोटक ।

रणधीर चढ़े करि कोप मनं ।
सब सामत सूर सजे अपनं ॥

१ बत्त । २ सारी मही । ३ इकै । ४ यह ।
५ कबहुन । ६ बनत्राए । ७ छिकिव । ८ जुट्टिग, जुट्टिय ।

गजराजन उप्पर डंबरयं ।
उछले[1] लागि बीर सु अंबरयं ॥ ५६३ ॥
बहु चंचल बाजि सु बग्ग[2] लियं ।
किय अग्ग[3] सु पैदल लाग कियं ॥
गढ़ तैं बहु भाँति[4] सु तोप चली ।
पतिसाह समेत सु कोप चली ॥ ५६४ ॥
रणधीर सु बन्धन दुग्ग[5] कियं ।
करि मंगल विप्रन दान दियं ॥
रवि को परनाम सु कीन तबै ।
कर जोरि सु आयसु माँगि[6] जबै ॥ ५६५ ॥
अरु राव हमीर जुहार कियं ।
हँर्षे चहुवान सु मोद हियं[7] ॥
बहु दुँदुभि ढोल सुभेरि बजे ।
कसि आयुध सायुध बीर सजे ॥ ५६६ ॥
हलका करि बीर चढ़े दल पैं ।
मनु राघव कोपि कियो खल पैं ॥
उत साहि हुकम्म कियो रिस मैं ।
सब सेन जु आय जुर्‌यो छिन मैं ॥ ५६७ ॥
बिफरे सब बीर सुधीर मनं ।
सब स्वामि सु धर्म्म सुकीन पनं ॥
दुहुं ओर सु तोप सु कोप[9] छुटे ।
गढ़ कोटन[10] रूँधत पार फुटे ॥ ५६८ ॥

---

१ उस से । २ वाग । ३ अग्र । ४ भांतिन ।
५ दुर्ग । ६ मंगि । ७ बरषे । ८ दियं ।
९ कोपि । १० रुक्कत ।

बरषै धर आगि[1] सु धूम उठी ।
भुर अंबर भुम्मि कराल बुठी ॥
बहु गोलन गोलन गोल परे ।
गजराजन सों गजराज जुरे[2] ॥ ५६९ ॥

हय सों हय पयदल पयदल सों ।
जुरिये बहु जोध महाबल सों ॥
बहु[3] बान दुहूं दल माँझ परै ।
धर सीस कहूं कर पाय झरै ॥ ५७० ॥

बहु शोर अंधार सु घोर भयो ।
निसि बासर काहु न जानि लयो[4] ॥
कर [5]कुंडिय बीर कमाँन कसैं ।
गज बाजिन फुट्टत पार लसैं ॥ ५७१ ॥

बरषै मनु पावस बुन्द अयं ।
बहु फुट्टत पक्खर[6] कंगलयं ॥
तहाँ लागत[7] सेल सु पार हियं ।
मनु श्रोन पनारन तैं बहियं ॥ ५७२ ॥

लगि तेग करैं दुव टुक्क[8] तनं ।
[9]जिमि सीस परैं तरबूज धनं ॥
तहँ साह सु सेन मुरक्कि चली ।
चहुवान तबै करि कोप बली ॥ ५७३ ॥

---

१ अग्गि । २ भिरे । ३ चहुवांन । ४ ज्ञान ।
५ कुंगिल । ६ पाखर । ७ लगात । ८ टूक ।
९ गिन ।

तुरकी पतिसाह तनी जो अनी ।
मुख बात सबै पतसाह भनी ॥
करि कोप तबै पतिसाह कहै ।
मुहि जीवत सेन सु भज्जि चहै ॥ ५७४ ॥

बकसी तब आय सलाम कियं ।
लख स्वामिय अप्प सु संग दियं ॥

रणधीर तबै सनमुक्ख पिले ।
बकसी करि कोप सु आप मिले ॥ ५७५ ॥
गुरजैं रणधीर के सीस दई ।
तिन ढल्ल सु उप्परि ओट लई ॥

बरछी रणधीर सु अंग दियं ।
धर फुट्टि सु बाज को पार कियं ॥ ५७६ ॥
हय तैं बकसी धर माँहि पर्‍यौ ।
तेहि संग सु मीर पचास गिरयौ ॥

इक स्वामिय धीर सु आय जुर्‍यौ ।
किरवान लिये मन नाहिं मुर्‍यौ ॥ ५७७ ॥
रणधीर इतै उत खात वलं ।
लथ वत्थ हुए भय देख दलं ॥
रणधीर कटार सूँ पार कियो ।
बलखान सु तेग जु कंध दियो ॥ ५७८ ॥

---

१ मुख वाह सुवाह सु साह भनी। २ भाजी। ३ आप।
४ लिये। ५ ऊपर। ६ फुटि। ७ सवाजफै।
८ गजतैं। ९ तब साँगि सुधीर सु मीर अर्‍यौ।

शिर टुट्टत धीर उठ्यो धड़यं ।
बल खानहि आय गह्यो करयं ॥
भरि बथ्थ सु हथ्थ पछारि बलं ।
हिय पार कटार किये सु खलं ॥ ५७९॥
लख एक सरूमिय खेत परे ।
रणधीर सुरुंड भरे खपरे ॥ ५८०॥

चौपाई छन्द।

पर्यौ खेत बकसी बड़ भारी ।
और संग दल बीस हजारी ॥
मीर पचास संग तेहि सूते ।
इक लख रूमि [1]विहस्त [2]पंहूंचे ॥ ५८१ ॥
तीस सहस रणधीर [3]सु संगी ।
परे खेत वर वीर उमंगी ॥
[4]धीर रुंड द्वै पहर सु नच्च्यौ ।
एक सहस हनि गज जस संच्यौ ॥ ५८२ ॥
टूट्यौ गढ़ सु छाडि़ कौ सोई ।
सुनी श्रवण हम्मीर सु जोई ॥
तब आपन तन मन पन जान्यौ ।
छत्री मंगल मरन बखान्यौ ॥ ५८३ ॥

दोहरा छंद।

पक्ख ऊजरो चैत्र सुदि। तिथि नौमी शनि वार ॥
बीस सहस छत्री परे । अवला जरीं हजार ॥५८४॥

---

१ भिस्ते। २ पहुच्चे।
३ के। ४ धरि युद्ध कर रुंड न चंच्यौ।

जो कनवज काकै करी । करी छाड़ि रणधीर ॥
हरष सोच सम करि दोऊ । चक्रत भये[1] जु मीर॥५८५॥
गज इक सठि दो लषतुरी । छप्परि बीस अमीर ॥
जो कहता सोई करी । धन्य राव रणधीर ॥५८६॥

छप्पय छन्द ।

इते मीर रण परे ।
साहि षट मास सम्हारे ॥
तबै दूत इक आय ।
साहि सों बचन उचारे ॥
जिते देव हिंदुवान ।
डिगत को धीर बँधावै ॥
जिनको पूजन करै ।
राव निस दिन मन लावै ॥
बर दियो राव हम्मीर कों ।
आपन मुख शंकर सरिस ॥
टूटै न गढ्ढ रणथम्भ सुनि ।
अभै किये चौदह्ह बरस ॥५८७॥

दोहरा छंद ।

दल लख सत्ताइस तहाँ । धरनि समावत मीर ॥
सूखत[2] सर सरिता बिमल । कूप बावरी नीर ॥५८८॥
तिथि नौमि आसौज सुदि । कर गहि तेग रिसाइ ॥
सुरमंदिर करि कोप सब । चढ्ढि[3] अलावदि साइ५८९॥

---

१ भयउ । २ सुक्कत । ३ चढ्यो ।

हाथ जोरि गनेश कूँ । कहै राव हम्मीर ॥
करो मदति चाहत जवन । अलादीन दलभीर५६०॥

चौपाई छन्द।

सुनत बचन हम्मीर के सोई ।
कोपे जुद्ध देव को जोई ॥
जब शंकर काली हरषानी ।
निज समाज बोले मृदुबानी ॥ ५९१ ॥
चौसठि जोगनि भैरव नच्चै ।
कर धरि चक्र त्रिशूल सु रच्चै ॥
बाजे डिमरू बीर चढ़ि आए ।
तबै साहि सों जंग रचाए ॥ ५९२ ॥
चल्लै चक्र त्रिशूल सु नेजा ।
शक्ति पाश धनु बान धरेजा ॥
हल मूसल अंकुल मुद्गरवर ।
परिघ सेललै धाए परिकर ॥ ५९३ ॥
कीनों जुद्ध बीर सब सज्जे ।
शंकर सरस कतूहल सज्जे ॥
सबै साहि की सैन सुभाई ।
सबै परस्पर करैं लराई ॥ ५९४ ॥
बजि बाजंत्र अनेक स बीरं ।
डौरुव शंख भेरि पट हीरं ॥

---

१ सुन ता वत्त राव की सोई। २ कुप्पिय।
३ निज मुक्ख सुबुल्लिय मृदुबानी। ४ वाज्जिय, बजित्र।
५ जुरि। ६ कूतूहल।

मार मार चहुँ दिस सुनि बानी ।
कटे लाख[1] आल्हन पर जानी ॥ ५९५ ॥

छप्पय छन्द ।

तब सब देव गणेश ।
विघ्न बड़ दल में किन्नव ॥
कितौ म्लेच्छ कौ संग ।
शस्त्र अप अप्प सु किन्नव ॥
उठे सकल ललकारि ।
कीन्ह घमसान सुभारिय ॥
रुंड मुंड परि दंड ।
सेन दो लक्ख सँघारिय ॥
देखंत नयन पतसाह तब ।
अति अद्भुत कौतुक भयउ ॥
हिम्मत्त बहादुर अली पर ।
उभय लक्ख सेनह हयउ ॥ ५९६ ॥

यह चरित्र लखि साहि ।
कूँच[2] आल्हन[3] पुर ते करि ॥
तब फिर उलटे आय ।
घेरि रणथम्भ सरिस भरि ॥
करि देवन से दोष ।
कहो कौने सुख पाए ॥
आगे[4] लख दल किते ।
मारि हरि असुर खिपाये ॥

---

१ लक्ख अल्हन । २ कुच्च । ३ अलुनपुर । ४ अग्गैं ।

अब लरै मनुष मानुषन सों ।
देव दैत्य [1]आगे किते ॥
यह जानि साहि सिर नाय करि ।
[2]आय [3]किए डेरा उते ॥ ५९७ ॥

दोहरा छन्द ।

[4]हठ हमीर छाड़े नहीं । हजरति [5]तजै न टेक ॥
सात मीर पतसाह के । गए बिसरि करि तेक ॥ ५९८ ॥
महरम खाँ तब इम कही । अब पिछतावति साहि ॥
हम बरजत रणथंम्भ गढ़ । चढ़ि आये तुम [6]चाहि ॥ ५९९ ॥
हजरति हिमति न छाड़िये । धरिये मन में धीर ॥
गढ़ नरगह चहुं दिसि करो । कब लग लरै हमीर ॥ ६०० ॥

पद्धरी छन्द ।

महरम्म [7]आपनो तजि सुसाहि ।
ध्याये सुदेव हिंदवान जाहि ॥
बहु बोलि विप्र पूजा कराहिं ।
करि धूप दीप आरति बनाहिं ॥ ६०१ ॥
पद परसे दरसे सकल देव ।
नैवेद्य पुज्य नाना सु भेव ॥
कर जोरि साहि बंदन [8]सुकीन ।
यह भाँति गवन डेरा सु [9]लीन ॥ ६०२ ॥

---

१ अग्गैं । २ आनि । ३ किन्न, कियउ, किते । ४ हठ हम्मीर छंडही । ५ तजी । ६ साहि । ७ अप्पनों ८ किन्न । ९ दीन ।

करि आल्हण[1] पुर तैं कूच ध्याय ।
रण के पहार डेरा कराय ॥
गढ़ की निगाह कीनी[2] सु साहि ।
आसंग माहिं कीनी सनाहि ॥ ६०३ ॥
करि मंत्र एलची दिय पठाय ।
तुम को सुकहत समुझाव[3] राय ॥
दै सेख छाड़ि हठ मिलि सुराव ।
परसो सुआय पतसाह पांव ॥ ६०४ ॥
इम सुनत राव प्रजरयो सु अंग ।
वृत टरै केमि छत्री अभंग ॥
तुव कहा कहूं दूतै सुजानि ।
नन टरै बैन छत्री सुबानि ॥ ६०५ ॥
नहि देहु सेष धन[4] करै केमि ।
पशु पंछी जे तजि सरण जेमि ॥
रणधीर कुँवर दोउ अति उदार ।
वालणसी तीजो षान सार ॥ ६०६ ॥
ते परे खेत रावत अभंग ।
अब कोन मिलि[5] राख्यो प्रसंग ॥
तव दूत द्रव्य लै जाहु ओर ।
कहँ रही बांत[6] फरमान तोर ॥ ६०७ ॥
मति आव फेरि भेजे सुसाहि ।
अवार्बना जुद्ध नहिं उचित ताहि ॥

---

१ अल्हण । २ किन्नी । ३ समुभाव ।
४ प्रण । ५ मिल्छि । ६ बंचि, वत्त ।

लै चल्यौ दूत ये खबरि ऐन
 जा कहे शाहि सों[1] सकल बैन ॥ ६०८ ॥
सुनि बचन बाँचि फरमान सोइ ।
 कहि साहि राव समुझै न कोइ ॥
उज्जीर देखि तब बीज कीन ।
 रण को पहार अपनाय लीन ॥ ६०९ ॥
चढ़ाय तोप तिहि पर प्रचंड ।
 कीनी तयार गढ़ को अखंड ॥
पतसाह कहै महरम सुबत्त ।
 तुम सुनो एक हम करी चित्त ॥ ६१० ॥
हम्मीर राव की तोप देखि ।
 दग्गो सु आपनी तोप लेखि ॥
यह तोप फुटे गढ़ फते होय ।
 संदेह कौन या में न सोय ॥ ६११ ॥
गोलम्मदाज तब करि सलाम ।
 दागी[2] सुतोप लखि ताव ताम ॥
लग्गे सुतोप के गोल जाय ।
 नुकसान भये तिहिँ कछुक जाय[3] ॥ ६१२ ॥
यह सुनी श्रवण हम्मीर राय[4] ।
 ततकाल तोप पै गयो धाय ॥
देषी सुतोप साबूत जानि ।
 तब कह्यौ राव तुम सुनो कानि ॥ ६१३ ॥

---

१ घरी। २ दग्गी। ३ लाय। ४ राव।

पतसाह तोप खंडै सुकोप ।
हों करों बड़ो ताको सुसोय[1] ॥
गोलम्मदाज कीनों[2] जुहार ।
पतसाह तोप फूटी सुपार ॥ ६१४ ॥
तब कही शाह मरहम सुदेखि ।
गढ़ विषम बीर छंडै न [3]टेक ॥
अब [4]करो क्यो न तजबीज और ।
किहि भाँति हाथि आवै सु जोर ॥ ६१५ ॥
कर जोर कही मरहम्म खान ।
पुल [5]बाँधि तोरि गढ़ करो आन ॥
तब महरम्म खाँ तजबीज कीन ।
इक राह बाँधि गढ़ को जु लीन ॥ ६१६ ॥
[6]पुल बाँधि कीन गढ़ की जु राह ।
सुनि राव चित्त चिंता सु आह ॥
नहिं रह्यौ [7]मरम गढ़ को सकोइ ।
बहु फिकर राव कीनों सु जोइ ॥ ६१७ ॥
तिहिं रैन पदम सागर सुआय ।
दीनो सुसुप्न हम्मीर धाय ॥
नहिं करो कोन चिंता हमीर ।
सब नदी समुद्दन को सुसीर ॥ ६१८ ॥
तुम रहो अभै गढ़ [8]अभै आय ।
इक छिन्न माहिं पुल ग्यों बहाय ॥

---

१ सजोय। २ किलउ। ३ पेखि। ४ करै। ५ बंधि।
६ पुल बंधि किहूं गढ़ को सराहि। ७ मगज। ८ अवै।

तब प्रात राव जग्गे हम्मीर ।
फुटि गयो सकल बंध्यो सुनीर ॥ ६१९ ॥
सुनि साह [1]बात अचरिज्ज मानि ।
टूटै न गढ्ढ जिय विषम जानि ॥
[2]पुच्छिउ उजीर तबै सुबोलि ।
कीजे इलाज किम कहों खोलि ॥ ६२० ॥
[3]रैंण के पहार कहा कौन आय ।
डेरा सुकीन्ह उज्जीर थाय ।
मजबूत मोरचा तहाँ कीन्ह ।
बहु परी रारि दुहुँ ओर चीन्ह ॥ ६२१ ॥
हम्मीर राव ऊपरि प्रसाद ।
तहाँ करयो अखारो इन्द्रवादि ॥
तहाँ चन्द्रकला पातुर प्रवीन ।
सो नृत्य करै सुन्दर नवीन ॥ ६२२ ॥
बाजत मृदंग बीना सितार ।
कट तार तार सहनाइ सार ॥
महुवरी सुंख जरि तास संग ।
श्री मण्डल सुर औ जल तरंग ॥ ६२३ ॥
षट तीस राग रागिनि सुसुद्ध ।
सो सुनै नृपति चहुआन उद्ध ॥
गंधार देव भैरव सुजान ।
अरू राम कली विभ्भा समान ॥ ६२४ ॥

---

१ वत्त। २ पुच्छी सुतबै उज्जीर बोलि। ३ रण कौ पहार परि साह आय।

बजि ललित विलावल गिरी देव ।
सुर आसा टोडी सकल भेव ॥
हिंडोल और सारँग अनूप ।
नट और श्रीयुत राग भूप ॥ ६२५ ॥

करि गौरी कौ अलाप आनि ।
तब दीपग अरु सगरे कल्यान ॥
सुर गावत[1] पंचम अति प्रवीन ।
सुनि केदारो मारो सुभीन ॥ ६२६ ॥

खंभाच रु मारु परज पाइ ।
सुम सोर उड़ैसी जैत गाइ ॥
प्रध्याणी कन्हर बहु सुभेव ।
बंगाल गौड़ मालव सुदेव ॥ ६२७ ॥

सिंधुव बिहाग षट राग पेषि ।
काफी अनूप सुर मधुर लेखि ॥
सब कला जीति संगीति रीति ।
नृतंत बाल गावंत गीति ॥ ६२८ ॥

सुर सप्त ग्राम तीनूं सु भेव ।
इकीस मूर्छिना करत एव ॥
बहु लाग डाक[2] गावत प्रवन्ध ।
तिहिँ सुनै होत आनंद फंद ॥ ६२९ ॥

हम्मीर राव राजत मसंद ।
दुहुँ ओर चौर ढोरैं[3] अमंद ॥

---

१ धरत। २ डाठ। ३ ढारैं।

येहि देखि साहि गरि गयो गब्ब ।
हम्मीर इन्द्र पदवी सु सब्ब ॥ ६३० ॥
अभिमान तजत नहिं मिल्यौ मोहि ।
नहिं शेख देय संका न कोहि ॥
यह चन्द्रकला पातुर सुभेव ।
बरु हाय भाव हस्तक सुदेव ॥ ६३१ ॥
वर्षत कटाच्छ ऊपरि सुराव ।
मोहि गिनत नाहिं कछु रहत चाव ॥
तब तान गान गावंत मानि ।
एडिय सुबाल मोहिं फिरत बानि ॥ ६३२ ॥
अपमान बाल कीन्हो अनन्त ।
एड़ी दिखाय मुझ को हसंत ॥
करि कोपि कहै पतिसाह एम ।
मैं करो बड़ो जेहि को सुप्रेम ॥ ६३३ ॥
जो हनै बाल कहि तीर पाहि ।
रसभंग करै मैं गिनो ताहि ॥
सुनि बचन मीर गभरू सुशेख ।
कर जोरि कीन्ह बानी विशेख ॥ ६३४ ॥
यह धर्म्म पुरुष को कितहु नाहिं ।
तिय ऊपर ऊचो करत न्याहि ॥
तब कहत साहि इम सजो थान ।
नुकसान होय अरु बचै ज्यान ॥ ६३५ ॥

---

१ तिहिं। २ मिल्यो न मोहि। ३ सुभेद। ४ जानि।
५ करत। ६ किन्हौ। ७ महिसों। ८ बड़ा।
९ कहत। १० कर बसांहि।

सुनि बचन श्रवन कम्मान लीन ।
सो ऐंचि श्रवन तिय चरन दीन ॥
तब परी बाल है विकल भूमि ।
रसभंग भयो सब लखत घूमि ॥ ६३६ ॥
लगि तीर सभा में परी जाव ।
तब बढ्यो सोच हम्मीर राव ॥
अबलों न तीर दुग्गहि पहुँचि ।
यह कौन औलिया आय संचि ॥ ६३७ ॥

दोहरा छन्द ।

देखि तीर अचिरज हुए । गढ़ में आवत सीर ॥
चकृत चहुँदिसि चाहि कै । रह्यौ राव हम्मीर ॥६३८॥
मुरझि तिरिय धरनी परी । भए राव चित भंग ॥
राव कहै ऐसे बली । किते साह के संग ॥६३९॥
महिमा साहि हमीर सै । कही बात कर जोर ॥
सकल साह के हसम में । है लघु भैया मोर ॥६४०॥
नहिं दूजो कोउ साह कै । सँबरे दल में और ॥
मीर गभरू अनुज मम । जामैं इतनो जोर ॥६४१॥

छप्पय छन्द ।

नाहिं जती बिन जोग ।
सूर बिन तेग न होई ॥
इते साह के संग ।
मीर सरभर नहिं कोई ॥

---

१ पर्यौ । २ उंचि । ३ भये । ४ रहे ।
५ त्रियां । ६ कहह । ७ सिगरे । ८ तेज ।

करो हुकम मोहि राव ।
साह को हनौं ततच्छिन ॥
मिटै सकल उतपात ।
आज सब सेन जाय [1]बिन ॥
हँसि कही राव हम्मीर तब ।
यह खुदाय दूजो दुनी ॥
सिर बचै साह छत्र जु उड़ै ।
यह कौतुक कीजे गुनी ॥ ६४२ ॥
[2]करि साहिब को याद ।
सीस हम्मीरहिं नायो ॥
कियो हुक्म [3]तब राव ।
कोपि के [4]बान चलायो ॥
[5]अनल पंष जनु परिय ।
[6]टूटि आकास [8]धरन्निय ॥
भयो सोर बर शब्द ।
पर्यो मंहि छत्र [7]बरान्निय ॥
मुरझाय साह [9]भूमें परे ।
उड़्यो छत्र आकाश दिस ॥
तब कह उजीर पतसाह सों ।
तजी ज्यान परि हरि सुरिस ॥ ६४३ ॥

दोहरा छन्द ।

पिछल [10]निमक की दोस्ती । करी जान बकसीस ॥
जो दूजो सर छंडिहै । हनिहै बिश्वा बीस ॥६४४॥

---

१ घन । २ कर जगदीसहि याद इष्ट देव निज सुमिर ।
३ हम्मीर । ४ सुबर । ५ अनिल । ६ टुट्टि ।
७ बरन्निय । ८ धरन्निय । ९ भुम्मी गिरिउ । १० निमष ।

जा गढ मैं महिमा रहै। किम आवै वह हथ्थ ॥
अहि ज्यूँ गहि छछूँ दरी। यों हजरत की गथ्थ ॥६४५॥

छप्पय छन्द।

कह महरम पाँ बात ।
इसी[1] हजरति सुनि आवै ॥
वह महिमा बर वीर ।
राव का हुकम जु पावै ॥
गहै तुम्हैं ततकाल ।
पाँव लंगर गहि मेलै ॥
उसै दिल्ली बैठाय ।
जोर मरजाद सु पेलै ॥
हठ छाड़ि साहि रणथम्भ का ।
करो कूच चलिये दिल्ली ॥
जै रही राव हम्मीर की ।
पतिसाही सारी गिली ॥ ६४६ ॥

तब[2] सु साह हठ छाड़ि ।
उलटि दिल्ली दिस आये ॥
पिता बैर कर याद ।
साह सुरजन पछिताये ॥
रतन पंच लै संब[3] ।
साह के पांव सु लग्ग्यौ ॥
तात बैर हिय जानि ।
कोप उर मैं अति जग्ग्यौ ॥

---

१ इति। २ तब अलाबदी छांडि हद दिल्ली दिस आए। ३ भेंट।

कर जोरि साह सुरजन कहै ।
सुगम दुग्ग मो हथ्थ गनि ॥
यह जित्यो राज रणधीर को ।
मोहि दैन की बाच भनि ॥ ६४७ ॥

दोहरा छन्द ।

हँसि हजरत ऐसो कही । सुरजन आगे आव ॥
दियो राज रणधीर को । करूं बड़ा उमराव ६४८॥
करि सलाम सुरजन तबै । बीरा खायो कोपि ॥
आप भवन हिकमति रची । स्वामि धर्म्म सब लोपि॥
जौरा भौरा खास मों । भरे जु कोरे चाम ॥
फजरि आनि हाजरि भयो । सुरजन करी सलाम ६५०॥
हाथ जोरि हम्मीर सों । सुरजन कही सुजान ॥
मिलो राव पतिसाह सों । गढ़ बीत्यो सामान ६५१॥
बिनती सुनत हमीर तब । कियो कोपि रत नैन ॥
छंडि टेक छत्री तनी । रे कपूत गनि ऐन ६५२॥

चौपाई छन्द ।

कहै राव हँसि सुरजन सुनि जै ।
मिलो छाड़ि पँन यह न गुनिजै ॥
सुनि कापुरुष कपूत अयानै ।
छाड़ि टेक को छत्री जानै ॥ ६५३ ॥

---

१ राव हम्मीर कौ। २ कहे। ३ अग्गु। ४ है।
५ किन्न। ६ हथ्थ। ७ बित्यौ। ८ गति एन।
९ छंडि। १० प्रण। ११ नाहिं।

फिर हमीर सुज्जन सों [1]पूछी ।
तेरी बात लगत मोहि [2]छूछी ॥
जौं रा भौं रा खास सु दोई ।
कैसैं निबरै जानत सोई ॥६५४॥
कहै साह यह तो [3]है छानी ।
प्रगट देखि निज नैनन जानी ॥
[4]पाथर डारि खास मैं जोई ।
सुनिये श्रवन [5]सद्द सब कोई ॥६५५॥

दोहरा छन्द ।

पाथर डार्‍यो खास महँ । खुड़क्यो [6]चाम [7]अपार ॥
जिन्स [8]सब्ब नीचै रही । राव [9]यहै निरधार ॥६५६॥
[10]खुड़क्यो सुनि [11]दुब खासको। चढ़यौ सोच उर राव ॥
महिमा तब हम्मीर सों । कहै बचन गहि पांव ॥६५७॥

छप्पय छंद ।

कहै जु महिमा सेष ।
राव मुहि हुकुम सु [12]दीजै ॥
मिलो साह को जाय ।
फिकर इतनो नहिं [13]कीजै ॥
[14]अब दिल्ली को कूँच ।
साहि को तुरत कराऊँ ॥

---

१ पुच्छी । २ छुच्छी । ३ ताहिं । ४ पथ्थर । ५ शब्द ।
६ चर्म्म । ७ आधार । ८ सबै । ९ येह । १० खुड़को ।
११ दोउ । १२ दिज्जै, दिज्जिय । १३ किज्जै, किज्जिय ।
१४ अबै दिल्ली ।

तुम राजो रणथम्भ ।
जुद्ध मैँ सकल सिराऊँ ॥
हम्मीर राव हँसि [1]याँ [2]कहै ।
सदा कौन जग थिरि रहै ॥
[3]छिन भंग अंग लालच कहा ।
सुजस [4]एक जुग जुग रहै ॥ ६५८ ॥

दोहरा छन्द ।

अलादीन पतिसाह सोँ । [5]गही [6]खग्ग करि टेक ॥
दुख मैँ बिरले [7]मित्त हैँ । सुख मैँ मित्त अनेक६५९॥
हठ [8]तौ राव हमीर कौ । औ रावण की टेक ॥
सत राजा हरिचन्द को । अर्ज्जुन बाण अनेक ६६०॥
गही टेक छाड़ै नहीँ । जीभ चौँच जरि जाय ॥
[9]मीठो कहा अंगार कौ । ताहि चकोर [10]चुगाय६६१॥

छप्पय छन्द ।

[11]राव बात यह कही ।
शेख अपने घर आयो ॥
भई राति सुरजन्न ।
निकट हजरति कै [12]आयो॥
[13]हाथ जोरि सिर नाय ।
कहै छल राव भुलायो ॥

---

१ इमि । २ कह्यौ । ३ क्षण । ४ इक्क ।
५ गहिय । ६ तेग । ७ मित जुग । ८ अरु ।
९ मिठौ । १० जु खाय । ११ सबै बत्त ए कहिय शेख अप्पन घर आयो । १२ धायौ । १३ हथ्थ ।

[1]ये कहिय बात सुर्जन सकल।
रणतभँवर टूट्यौ अबै ॥
हजरति प्रताप महा बङ्क गढ़ ।
सहल भयौ सदकै सबै ॥ ६६२ ॥

दोहरा छन्द।

चन्दकला देवलि [4]कुँवरि। पारसि महिमा साह ॥
माँगत साह अलौवदी । अब लै मिलयो आय ६६३॥

छप्पय छन्द।

सुनि हजरति कै बचन ।
राव हम्मीर रिसाये ॥
कहा अलावदी साहि ।
गर्व्व के बचन सुनाये ॥
मैं हमीर चहुवान ।
साह सो[5] हम कछु चाहै[5] ॥
चिमना बेगम एक ।
और चिंतामणि साहैं ॥
पाइक च्यारि [6]पीराँ सहित ।
[7]कहै साह ये दिज्जिये ॥
छुट्टै न हठ हम्मीर कौ ।
कुच दिली को कि[illegible]ये ॥ ६६४ ॥
ये हमीर के [8]बचन ।
बाँचि पतिसाह रिसानो ॥

---

१ यह। २ वत्त। ३ टुट्यौ। ४ कुँमरि।
५ आहि। ६ पारनि। ७ कहत राव। ८ उवाव।

रे हराम कमबख्त ।
    किसो गढ़ फते [1]करानो ॥
सुरजन झूठो कहे ।
    राव हम्मीर न [2]मानै ॥
नहिं महिमा को देइ ।
    मिलै नहिं हठी अमानै ॥
यह कही साहि [3]सुरजन्न तब ।
    देखिय अब कैसी बनै ॥
रणथम्भ राव हम्मीर जुत ।
    मिटै होहि कौतुक घनै ॥ ६६५ ॥
तब करि बदन मलीन ।
    राव रण वासहिं आये ॥
उठि रानी कर जोरि ।
    राव को सीस नवाये ॥
गढ़ [4]बीत्यो सामान ।
    भयो भंडार सु रीतो ॥
टेक [5]छाड़ि करि सेख ।
    देहु अब मागुन [6]बीत्यो ॥
बिलखाय बदन रानी कहै ।
    द्वादस वर्ष जु तुम लरे ॥
बिप्रीति बुद्धि को[illegible]दई ।
    हीन [7]बचन मुख निक्करे ॥ ६६६ ॥

---

१ करिजानों । २ मन्नै । ३ सुरजन तबै ।
४ वित्यौ । ५ छंडि । ६ वीत्यौ, रीतौ, वित्यौ ।
७ वत्त ।

चौपाई छन्द।

रानी कहै सुनो महरावं ।
ऐसे बचन उचित नहि भावं ॥
या तन बचन सार श्रुति भाषै[1] ।
तन मन धन दै बचन जु राखै[2] ॥ ६६७ ॥
तन धन भ्रात पुत्र अरु नारी ।
हरि.विधु त्यागि बचन प्रतिपारी ॥
राज पाट अनित्य[3] सु जानो ।
रहैं नित्य इक सुजन बखानो ॥ ६६८ ॥
केकइ ध्वज अधविग्रह दीनों ।
विद्या भवन जीति जस लीनों ॥
भव जो कही सत्य वह जानो ।
ओर न होय कोटि बुधि ठानो ॥ ६६९ ॥

दोहरा छन्द।

कब हठ करै अलावदी। रणतभँवर गढ़ आहि ॥
कबै सेख सरनौ रहै । बहुरौ[4] महिमा साहि ॥६७०॥
सूर सोच मन में करो[5] । पदवी[6] लहो न फेरि ॥
जो हठ छंडो राव तुम । उतन लजै अजमेरि ॥६७१॥
शरन राखि सेख न तजो। तजो सीस गढ़ देश ॥
रानी राव हमीर को । यह दीन्हो उपदेश ॥६७२॥

छप्पय छन्द।

कहां पँवार जगदेव ।
सीस आपन कर कट्यौ ॥

---

१ भक्खै। २ रक्खै। ३ अन्नित। ४ बहुन्यौ।
५ करै। ६ पदई।

कहां भोज बिक्रम सु ।
राव जिन पर दुख मिट्यौ ॥
सवाभार नित करन ।
कनक विप्रन को [1]दीन्हे ॥
रह्यो न रहिये कोय ।
देव नर नाग सुचीनो ॥
यह [2]बात राव हम्मीर सूँ ।
रानी इम आसा कही ॥
जो भये चक्कवै मंडली ।
[3]सुनो राव दीखे नहीं ॥ ६७३ ॥

दोहरा छन्द ।

धन जोवन नर की दसा। सदा न एक विहाय ॥
[5]पाष पांच शशि की कला। घटत [6]घटत बढ़ि जाय ६७४॥

राखि सरन शेख न तजो। तजो सीश गढ़ बेगि ॥
हठ न तजो पतसाह सों। गहि कर तजो न तेगि६७५॥

जितो ईश तुम्ह वर दियो। अब फिर चाहत काय ॥
करो जंग पतसाह सों। सनमुख सार समाय६७६॥

[7]जीवन मरन संजोग जंग। कौन मिटावै ताहि ॥
जो जन्मै संसार में। अमर [9]रहै नहिं आहि६७७॥

---

१ दिन्नव। २ वत्त। ३ कहँ राव।
४ कही। ५ पख, पष्प, पाषि। ६ वढ़त।
७ आमन। ८ णे। ९ अमर न कोई आए

कोउ सदा नहिँ थिर रहै । नर तरु गिरवर ग्राम ॥
कन्यो राज रणथंभ को । [1]अपना तन परमान ६७८॥
कहाँ जैत कहँ सूर कहँ । कहँ सोमेश्वर राण ॥
कहाँ गये प्रथिराज जे । जीति साह दल आण ६७९
कहां जैत कहँ सूर पृथि । जिन गह गौरी शाह ॥
होतब जग में प्रबल है । चिंता किज्जिय काह ६८०॥
होतब मिटै न जगत मे । कीजे चिंता कोहि ॥
आसा कहै हमीर सोँ । अब चूको मति सोहि ६८१॥
बिछुरन मिलन संजोग जग। सब में यह विधि सोह ॥
आसा कहै हमीर सँह । हम तुम भया विछोह ६८२॥
धन्य वंश जिहि जन्म तव । राव सराहत ताहि ॥
और कौन तुम बिन त्रिया । बचन कहै समुझाय ६८३॥
धन्य पतिवृता नारि तू । राव सराहत आय ॥
अवर कौन तुझ बिन त्रिया। कहै वचन बिन पाय ६८४॥
राखि शेख शरनौं तजों । कुल लाजै चहुवाण ॥
तुम साकौ [2]गढ़ [3]कीजियो । निरखि साह नीसाँण ६८५॥
[4]लीन परिछा बहुत मैँ । तू छत्री कुलबाल ॥
तुव मत मैँ [5]देख्यौ सु दृढ़ । यही [6]बात यहि काल ६८६॥
सुने राव के बचन तब । परी धरनि मुरझाय ॥
निठुर बचन मुखतेँ जु कहि। तजि रनवासि रिसाय ६८७
हम पतिभरता पुरष बिन । कौन दिसा चित को धरैं ॥
आसा कहै हमीर सोँ । तुम पहला साको करैं ६८८॥

---

१ हम अपने तप नाम । २ गढ़ में करौ ।
३ किजियौ । ४ लिन्न । ५ दिख्यौ ।
६ वत्त ।

छप्पय छन्द।

खोलि सकल भंडार ।
  तुरत जाचिक सु बुलाये ॥
विप्र भली विधि पूजि ।
  दिये बंदी मन भाये ।
भवन त्रिया गढ़ ग्राम ।
  तजे हम्मीर मोहि बिन ॥
मन क्रम बचन सु त्यागि ।
  भये निज धर्म्म लीन खिन ॥
तत्तकाल रनवास तजि ।
  सभा आप दरवार किय ॥
आय जु मित्र मंत्री सु बुध ।
  सूर बीर आदर सुदिय ॥ ६८६ ॥

कहै राव हम्मीर ।
  सुनौं चतुरंग महा वर ॥
तुम्है रतन की लाज ।
  जुद्ध हम करैं नियम करि ॥
तुम सब बात समत्थ ।
  करौ जैसी तुम भावै ॥
रणतभँवर को लोग ।
  तहां कुछ दुःख न पावै ॥

---

१ सवै । २ बुलाए । ३ पुज्य ।
४ युद्ध । ५ समर्थ । ६ यह परि कर सब जितौ, राख आपन जु सुहावै ।

गढ़ सज्जो जाय [1]चित्तौड़ को ।
प्रजा पाखि सुख दिज्जिये ॥
सब साम दाम दण्डह सहित ।
भेद [2]नित्य सब किज्जिये ॥ ६९० ॥

कहै तबै चतुरंग [3]उँचित
यह हम कौं नाहीं ॥
[4]आप रहो हम रहैं ।
लरैं हम जस [5]के ताहीं ॥
कहे राव यह प्रजा ।
सकल [6]चितौड़ समावै ॥
यह परिकर सब जितो ।
[7]राँखि [8]आपन जु सुहावै ॥
चतुरंग रावले रतन कौं ।
गढ़ चित्तौड़ [9]सुचल्लिये ॥
प्रथम जाय अल्हणपुरह ।
करूणा जुत डेरा किये ॥ ६९१ ॥

दोहरा छन्द ।

पंच सहस चतुरंग लै । [10]चले रतन के साथ ॥
सकल मीर दर्बार किय। कही साबन यह गाथ॥६९२॥

---

१ चीतौड़ । २ नीति । ३ उदित ।
४ अप्प । ५ सब । ६ चीतौड़ ।
७ राक्खि । ८ अप्पन । ९ चल्लिय, चल्यउ ।
१० सँत्थ, गत्थ ।

जीवै सो घर भुगिवै । जुझ्झे सुरपुर बास ॥
दोऊ जस [3]कित्ती अमर। तजौ मोह जग आस ६९३॥

जीवन चाहत जो कोऊ। ते सुखैन घर जाहु ॥
कहै राव सब के सुनत । हम सँग मरन उछाह॥६९४॥

छप्पय छन्द।

सुनत बचन ये सेख ।
भवन अपने को आये ॥
कुटम सेख करि खेस ।
करद लै अदल पठाये ॥
कहै राव सों बचन ।
नैन जल सों भरि आये ॥
सुख संपत रणथंभ ।
त्यागि करिये मन भाये ॥
सुर नर कायर सूरमाँ ।
कहै सेख थिर नहिं कोई ॥
हम्मीर राव चहुवान अब ।
करै साहि सों जँग सोई ॥ ६९५ ॥

दोहरा छन्द ।

जीवन को सब कोउ कहै । मरन कहै नहिं कोय ॥
सती सूरमाँ पुरुष [6]को । मरतैंहिं मङ्गल होय ६९६॥

---

१ भोगिवे। २ जूझे। ३ करित।
४ कै धायो। ५ कातर। ६ कै।

छप्पय छन्द।

केसर सौंधे बसन ।
सकल उमरावन सज्जे ॥
अलादीन पतिस्याह ।
फेरि कहि कब कब गज्जे ॥
सहस गऊ करि दान ।
राव[1]सिर मौर सु बंध्यौ ॥
कन्यव जुद्ध को साज ।
छत्र कुल सुजस सु संध्यौ ॥
[2]निस्सान पान बज्जे सु घन ।
हर्ष बीर बानै पढ़े ॥
चहुवान राव हम्मीर तब ।
जुद्ध काज चौरे चढ़े[3] ॥ ६९७ ॥

दोहरा छन्द।

पंच सहस रतनेस सँग। गढ़ [4]चीतोड़ पठाय ॥
पंच सहस रणथंभ गढ़। द्रढ़ रावत रह आय॥६९८॥
असी सहस सेना सकल। चढ़ी राव के संग ॥
माया मोह विरक्त मन। जुरन साह सौं जंग॥ ६९९॥

छप्पय छन्द।

कमध्वज कूरम गौड़ ।
तँवर पँरिहार[5] अमानो ॥
पौरच वैस पुँडीर ।
बीर चहुवान सु जानो ॥

---

१ करिव। २ नीसान। ३ कढ़े।
४ चितौढ़। ५ पाड़िहार

जद्दव गोहिल धीर ।
चढ़े गहिलोत गरूरं ॥
सैंगर और पँवार ।
[2]भिल्ल इक भोज मरूरं ॥
छत्तीस वंश छत्री चढ़े ।
जिम पावस बद्दल बढ़े ॥
हम्मिर राव चहुवान तब ।
जङ्ग [4]कज्ज चौरै कढ़े ॥ ७०० ॥

जेठ मास बुध वार ।
सप्तमिय पक्ख अंध्यारी ॥
करि सूरज को नमन ।
राव कर खग्ग सम्हारी ॥
हर्षे सुर तेंतीस ।
और हर्षे जु कपाली ॥
नारद सारद हर्षि ।
बीर बावन जुत काली ॥
हर्षी जु हरषि अँच्छर हरषि ।
जुग्गिनि वृंद सु नच्चियव ॥
जंबुक कराल गिद्धनि हरषि ।
सूर हरषि हिय रच्चियव ॥ ७०१ ॥

---

१ जादम । २ भील । ३ दल हरषि (निरखि) राव हम्मीर के साह जीव अचरिज बढ़े। ४ काज । ५ पाख । ६ तेग । ७ अच्छरि ।

हनूफाल छन्द ।

सजि सूर राव हमीर ।
    [1]विरदाय वीर सु धीर ॥
जनु छत्र कुल की लाज ।
    रन सिंधु की मनु पाज ॥ ७०२ ॥

दातार सूर सु अंग ।
    निस[2] द्यौस जुट्टत जंग ॥
धरि स्वामि धम्म सुरंग ।
    बढ़ि रहे तिल तिल अंग ॥ ७०३ ॥

गढ़ कोट ओटत एक ।
    तोरन्त करि करि टेक ॥
सिर खौरि चन्दन सोह ।
    रवि बंदि बंदि सुलोह ॥ ७०४ ॥

गति [3]उड्ड कुद्दत भट्ट ।
    ज्यों खेलन [4]उत्तो नट्ट ॥
अँग बम्म चम्म सु कीन ।
    सिर टोप ओप सु [5]दीन ॥ ७०५ ॥

दस्तान रच्चि सु हथ्थ ।
    करि चहै [6]गथ्थ [7]अकथ्थ ॥
बहु न्हान दान सु [8]कीन ।
    गो स्वर्ण विप्रन [8]दीन ॥ ७०६ ॥

---

१ विरदार । २ रहिब । ३ उर्ध । ४ उतरेउ ।
५ किन्न, दिन्न । ६ गत्थ, अगथ्थ । ७ अगथ्थ ।
८ दिन्न, किन्न ।

रवि शंभु विष्णु सु पुज्जि[1] ।
मन साह सैं करि दुज्जि[2] ॥
आचार भार फबंत ।
दोउ पच्छ सुद्ध सुभंत ॥ ७०७ ॥

बहु बंदि विरदत जाय ।
बढ़ि छन्द हर्ष सु आय ॥
असमान लग्गि[3] सु शीश ।
झल हलैं तेज सु दीश ॥ ७०८ ॥

संग चक्ष्यव[4] वंश छतीस ।
संग्राम अचल सु दीस ॥ ७०९ ॥

दोहरा छन्द ।

स्वामि धर्म्म धरैं[5] सदा । माया मोह विरक्त ॥
हीन कपन उद्दार मति । अचल अद्रि हरभक्त ७१०॥
साखत साज सुवाजि सजि। कीन बनाव सु ऐन ॥
चंचल चपल बिचित्र गति। राग बाग लखि सैन ७११॥

छन्द हनूफाल ।

तब साहनी नृप बोलि[6] ।
हय सहस सोलह खोलि ॥
सब वंश उच्च सु वाज[7] ।
लखि[8] रूप मोहत राज[9] ॥

---

१ पूजि । २ दूजि । ३ लग्गिय । ४ चढ़े । ५ धाराहिं । ६ तब साह लिय नृप बुलि । ७ बजि । ८ लखि । ९ राजि ।

मनु उच्चश्रव के बन्धु ।
आवर्त्त चक्र सु कंधु ॥ ७१२ ॥
तुरकी हजार सु पाँच ।
मग चलत करत सु नाच ॥
ताजी हजार सु रुद्द ।
गुन सील रूप समुद्द ॥ ७१३ ॥
सब बीर ताजि कुलीन ।
नृप बंटि बाजि सु दीन ॥
बनि जीन जटित जराव ।
नग हीर पन्न सु हाव ॥ ७१४ ॥
सिर बनिय कलगिय ऐन ।
मनु सजे बाजि सु मैन ॥
गज गाह बाह अथाह ।
जो करै जल पर राह ॥ ७१५ ॥
नग मुक्त माल सुमाल ।
गुम्फी सु रुचि बहु काल ॥
मखमलिय सिगरे साज ।
मनु सबै रवि के बाजि ॥ ७१६ ॥
जिन परिय पष्षरि अंग ।
लख भ्रमतै दिट्ठि अभंग ॥
बहु सिरी सीसन सोहि ।
उड़ि चलैं भरि जो कोहि ॥ ७१७ ॥

---

१ पंच नच । २ धीर । ३ बांटि । ४ कराहि ।
५ गूंथी । ६ दिठि ।

गति चलैं चंचल एमि ।
जिनि पवन पहुँचै केमि ॥
धर धरत सुम यौं मानि ।
मनु जरत [2]अगिग सु जानि ॥ ७१८ ॥
जल चलै थल जिमि बटट ।
लखि उड़ैं औघट [4]घटट ॥
मृग गहत डार कमान ।
नहिं पच्छि पावहिं जान ॥ ७१९ ॥
गति पवन देखि लजात ।
जनु मुकुर कान्ति सगात ॥
दोउ वंश शुद्ध प्रकाश ।
बड़ि डील पील सु जास ॥ ७२० ॥
यहि बिधि सु [6]लिन्ने मौलि ।
नग हेम सर भर तौलि ॥
कोउ बने कच्छिय ऐन ।
सँब उड़ै पच्छिय गैन ॥ ७२१ ॥
ऐराक वंश सुशील ।
गुनभरे झलकत डील ॥
खंधार उपजि स सुद्ध ।
जनु लखत रूप सु उद्ध ॥ ७२२ ॥
काबलिय डील अनूप ।
तिहिँ [8]देखि मोहत भूप ॥

---

१ चलहिं । २ अग्नि । ३ वट्ट । ४ घट्ट । ५ पावै ।
६ कीने । ७ संग । ८ दिक्खि, पिक्खि ।

अरु चीन के जु नवीन ।
ताजी सगुन गन लीन ॥ ७२३ ॥

बर धीर अनक जु डील ।
जो लिये साटैं[1] पील ॥
रँग रंग अंग बनाव ।
सो लिये पंकति[2] दाव ॥ ७२४ ॥

मिरगा सुरंग समंद ।
संजाफ सुरख ॥
कुम्मैत कुमद कल्यान ।
मोती सु मगसी आन ॥ ७२५ ॥

सब्जारु सब रँग भौंर ।
चंपा सु चीनिय चौंर ॥
अवलख सु गरड़ा रंग ।
लक्खी जु उपतिहि मंग ॥ ७२६ ॥

हंसा हरेई बाजि ।
तीतुरिय ताँबी साजि ॥
भिन भिन्न दुकड़ी साजि ।
चढ़ि चलिय रावत गाजि ॥ ७२७ ॥

चहुवान राव हमीर ।
रँग रँग सु रचन धीर ॥ ७२८ ॥

छन्द त्रोटक ।

गजराज सबै सत पंच सजे ।
[3]गिरगात मनों घन भद्द गजे ॥

---

१ सट्टे। २ लगेपंकज ३ गिरगत, गिरिराज

सु महावत जंत्रन मंत्र रजे ।
करि बन्धन[1] पीर सुधीर कजे ॥ ७२९ ॥

परि पांय स जाय निकट्ट षरे ।
पग खोलि जंजीर सुबीर अरे ॥
बिरदाय भले मन हथ्थ[2] किये ।
असनान कराय सिँगार लिये ॥ ७३० ॥

तन तेल सिंदूरन चित्त किये ।
सिर चंद अमंद सुरंग दिये ॥
जनु कज्जल बद्दल पावसये ।
तड़िता घन चंद की मावसये ॥ ७३१ ॥

सजि डम्बर अम्बर सो लगिये ।
घन घोर घटा सु पटा गिनिये[4]॥
कसिये हवदा ध्वज धार वली ।
मनु पंगति पब्बय की जु चली॥ ७३२ ॥

बर्षा घन घोर सु जानि परै ।
कबि रूप स्वरूप समान करै ॥
बहु बद्दल बारन वृंद चढ़े[5] ।
ध्वज वैर षलाल निसान कढ़े ॥ ७३३ ॥

तड़िता घन मैं दमकंत मनों ।
बगपंत सुई गजदंत भनों ॥
गरजै बहु गाज सु गाज मनं ।
मिलियो शशि सूरज गोन भनं॥ ७३४ ॥

---

१ बन्दन २ हत्थ। ३ धनु। ४ गजिय। ५ चढ़े।

घर्षै हृद मद्द सुभद्द सदा ।
सु बहै बहु भाँति सुमद्द मुदा ॥
सिर ढाल ढलक्कत एमि लसै ।
शशि जीव धरासुत एक बसै ॥ ७३५ ॥

अधधुंध चलै मग उम्मगयं ।
मनु काल कराल उठे जगयं ॥
चरषी बहु बान जु नेज लियं ।
धरि सेन सु अग्र सुभाय कियं ॥ ७३६ ॥

पद लंगर और जंजीर जुटे ।
नहिं खुल्लत आद्रुव न्याय लुटे ॥
बल राशि अमान मुकोह भरे ।
नन चालत मग्ग अमग्ग अरे ॥ ७३७ ॥

बहु दुंदुभि घोर सुनै अमनं ।
विरदाय सुनन्त करै गमनं ॥
सिर चौंर ढुरंत इसे दरसैं ।
तम दाबि दिनेश मरीचि लसै ॥ ७३८ ॥

चतुरंगनि राव हमीर तनी ।
सब भाँतिन सोभ अनन्त बनी ॥
सब रावत आय जुहार कियं ।
चहुवान सबै सिर भार दियं ॥ ७३९ ॥

धरि अग्र सु पिल्लन डिल्ल पिले ।
बहु चंचल बाजिन साज षिले ॥

---

१ नद्ध । २ अग्ग । ३ लटे । ४ अमावन । ५ अंवन । ६ साज ।

बहु दुंदभि [1]बाजत घोर घनं ।
पट गोमुख भेरि मु चंग [2]मनं ॥ ७४० ॥
सहनाइय सिंधुर राग हरं ।
विरदावत विंद कविंद तरं ॥
उमगे चहुवान विगट्ट दलं ।
अप अप्प मु वीर कराय हलं ॥ ७४१ ॥
चहुँ ओर कितेक सु पुंगल, के ।
[3]करिहा सजि संग चले बलके ॥
तिन की सज मानव चित्र रचे ।
धर दूर नजीक करै सु नचै ॥ ७४२ ॥
असवारिय सज्ज बनी तिनतैँ ।
खचैँ बहु लेत घने बन तैँ ॥
बहु तोप [4]जलेबिन अग्र बनी ।
सब सिंदुर लेप करी जु घनी ॥ ७४३ ॥
तिन ऊपर बैरख वृंद सजी ।
जम की मनु जीभ अनेक गजी ॥
बलिदेत चलै अरिवृंद भषै ।
मद बक्कर [5]भष्षर कोप धषै ॥ ७४४ ॥
हथनारि जंबूर सु चद्दरयं ।
छुटिया तुबकै बहु अद्दरियं ॥
धरि अग्र सबै चहुवान चढ़े ।
बहु बंदि कविंद सुछंद पढ़े ॥ ७४५ ॥
इहि भाँति उभै दल कोप कियं ।
हरषे बर बीर सुधीर हियं ॥ ७४६ ॥

---

१ पज्जत । २ हने । ३ करहा (ऊंट) । ४ जलेबय अग्ग । ५ भष्षत ।

दोहरा छन्द ।

श्रवन सुनै बर वीर रस । सिंधव राग अपार ॥
हरषि उठे दोउ तिहिँ समै। मिलन बीर शृंगार ॥७४७॥

छन्द हनूफाल ।

मिलनै सुवीर श्रँगार ।
दुहु हरष हिये अपार ॥
बर.वीर हरषेउ अंग ।
उत अच्छरी सु उमंग ॥ ७४८ ॥

तन उभै मज्जन कीन ।
भए दान मान स लीन ॥
तहाँ कौच बीर नबीन ।
रचि बाल वसन प्रवीन ॥ ७४९ ॥

इत टोप बीरन सीस ।
कसि कंचुकी तिय रीस ॥
बहु अस्त्र बंधि सु वीर ।
अच्छरि सु भूषण हीर ॥ ७५० ॥

इत सूर खड्ग सु लीन ।
उत बाल अंजन दीन ॥
इत ढाल बीरन बंधि ।
ताटंक श्रवननि संधि ॥ ७५१ ॥

सामंत बंधि कटार ।
अच्छरी तिलक सुढार ॥
मुख पान ज्वान सुभाव ।
तिय चंप दंत जराव ॥ ७५२ ॥

इत कसी सूर कमान ।
  दृग वाम चमक निदान ॥
धरि बीर कर दस्तान ।
  अच्छरिय महदी पान ॥ ७५३ ॥

बरच्छी सु लीनिय सूर ।
  बर माल कीनिय हूर ॥
सिरपेच सूर जराव ।
  तिय सीस फूल सुहाव ॥ ७५४ ॥

इत तबल तौरा नेत ।
  तिय हाव भाव समेत ॥
रचि सूर सेलिय अंग ।
  अच्छरिय हार उमंग ॥ ७५५ ॥

कसि तून वीर स जंग ।
  अच्छरिय नैन अपंग ॥
कर केहरी नख सूर ।
  उत पानि पानि सहूर ॥ ७५६ ॥

लिय वीर तुलसिय माल ।
  वर माल लीन स वाल ॥
कसि सूर मोजा पांय ।
  नूपुर सु बाल सुहाय ॥ ७५७ ॥

कसि सूर वाजि सु तंग ।
  विम्मान बाल उमंग ॥
इहि भाँति सूर सवाल ।
  उतकंठ मिलन तिकाल ॥ ७५८ ॥

दोहरा छन्द।

उमगि उमगि हम्मीर भट। चले सकल करि चाव ॥
च्यारि अनी चतुरंग की। चढ़े सम्भरी राव॥ ७५९ ॥
उतै साह के मीर भर। खान और उमराव ॥
रणतभँवर छिक्किय हरषि।नाना करिव बनाव॥ ७६० ॥
चारि दरा घाटी जितो। कीने घाटा रोह ॥
काल रूप कोपे तुरक। बान विकट जंसोह॥ ७६१॥

भुजंगप्रयातं छन्द।

चढ़े बीर कोपे दुहूँ ओर धाए।
मनों काल के दूत अद्भुत्त आये ॥
इतै राव हम्मीर के बीर छुट्टे।
उतै भीर धीरं गहीरं सु जुट्टे ॥ ७६२ ॥
उड़ी रैन सैनं न दीखंत भानं।
दुहु ओर घोरं सु बज्जे निसानं ॥
छुटै तोप वानं दुहूं ओर जोरं।
धरा अम्मरं बीच मचे सु शोरं ॥ ७६३ ॥
उठी ज्वाल माला धरा वै उपट्टे।
धुवां धोर घोरं सु जोरं प्रगट्टे ॥
मनो दोय सिंधू तजैं आय बेला।
प्रलै काल के काल कीनो समेला ॥ ७६४ ॥
दुहूं ओर घोरं सु गोलं बरष्षै।
मनो मोघ ओला अतोलं करष्षैं ॥
उड़ै अग्रपव्वय ढहैं गड्ढ कोटं।
परै गज्ज बाजं धरा धूरि लोटं ॥ ७६५ ॥

---

१ तुटै।

प्रलै पावकं जानि उट्ठी लपट्टैं ।
बरं उभकरं सूभरं यों झपट्टैं ॥
लगै गोल में गोल गोला सु गज्जै ।
भए वार पारं उपम्मा सु रज्जै ॥ ७६६ ॥
मनो स्याम कै वास है वारपारं ।
चहुँ ओर राजंत है चारु वारं ॥
रहे गिद्ध तामें घने बैठि अद्धं[1] ।
करैं ध्यान बैठे गुफा में मुनिद्धं ॥ ७६७ ॥
उड़े साथि गोलान के बीर ऐसैं ।
मनों फाटिका तैं उड़ै नट्ट जैसैं ॥
चलै तोप जोरं करैं सोर भारी ।
परै बिज्जुरी सी घने[2] एक वारी ॥ ७६८ ॥
छुटै एक वारै[3] घनी चादरं यों ।
मनो भार भूजै बनै यों घनै यों ॥
बँदूकै हजारं चलैं एमि राजै ।
मनो मेघ गोला परै भूमि गाजै ॥ ७६९ ॥
चलै बान बेगं मचै सोर भारी ।
मनो आतसं बाज खेलंत कारी ॥
छुटैं बान कम्मान ज्यों मेघ धारा ।
लगै बाज गज्जं हुवै वार पारा ॥ ७७० ॥
मनो नाग छौना उड़ैं होड मँडी ।
डसै अंग अंगं करै सेन खंडी ॥
बहै तोमरं सेल औ सक्ति ऐनं ।
करै वार पारं बहै उच्च बैनं ॥ ७७१ ॥

---

१ अद्रं । २ घनी । ३ वारं ।

बहै खड्ग बेहद्द देखंत सूरं ।
करै दोय टूकं सडुक्कै समूरं ॥
बहै तेग कंधं परै गज्जराजं ।
लगै आयुधं यों डरं सर्ब साजं ॥ ७७२ ॥
कटै कंगलं अंग आजीन बाजी ।
तबै सूर रीझे करे मालसाजी ॥
कटारी बहै ब्बार पारं निहारै ।
मनो स्याम उर माँझ कौस्तुभ सम्हारै॥ ७७३ ॥
कहूँ पंजरं पिंजरं बेगि फारं ।
मनो हाथ वाला अहारी निकारं ॥
छुरी हत्थ जोरं करै सूर हाँकैं ।
कहूँ मल्ल युद्धं करैं वीर [1]खाँकैं ॥ ७७४ ॥
परे सीस [2]भूमैं उठै [3]रुंड घोरं ।
दुँहू सेन देखंत कौतुक्क जोरं ॥
किती अंत उरझंत [4]लटकंत [5]भूमै ।
किते घायलं घाव लग्गे सु झूमैं ॥ ७७५ ॥
भरे [6]योगनी पत्र पीवंत पूरं ।
परैं ज्यों मलेच्छं वरैं आय हूरं ॥
किलक्कै जु काली हसैं बार बारं ।
करैं भैरवं ब्बोर सोरं अपारं ॥ ७७६ ॥
भगी साह की सेन देखंत दोई ।
कहै बैन कोपं वकं सीस सोई ॥

---

१ फाँकैं। २ भुम्मी। ३ सीस। ४ करकंत।
५ घूमें। ६ जुग्गनी।

क्तिै भागि जैहो अरे मूढ़ आजं ।
[1]जिते वीर चहुवान हम्मीर गाजं ॥ ७७७ ॥
भम्यो साह संगं तज्यो जंग भारी ।
कहै साह उज्जीर सों जो हँकारी ॥ ७७८ ॥

दोहरा छन्द ।

कहा राव हम्मीर के । सूर बीर बलवान ॥
[2]सबै सुखाय हमारिये । जंग समै प्रिय प्रान ॥ ७७९ ॥

छप्पय छन्द ।

कहै साह उज्जीर ।
सुनो आपन मन लाई ॥
जिते राव के बीर ।
[3]सबै छत्री [4]प्रन पाई ॥
लरत भिरत नहिं टरत ।
करत अद्भुत रस [5]सीतो ॥
करत जंग अनभंग ।
अंग छिन भंग है [6]नीतो ॥
नहिं सहत सार [7]आपन [8]सपन ।
सबै मीर उमराव भर ॥
किज्जे सु कौन मत तंत अब ।
कहो बुद्धि आपन समर ॥ ७८० ॥
कहि [9]उंजीर कर जोरि ।
सुनो हजरत यह किज्जे ॥

---

१ जिनै चाहुआनं हमीरं सुगानं। २ सर्वस्व। ३ धर्म।
४ पन। ५ जीते। ६ नित्ते। ७ आपन।
८ सपन। ९ वजीर।

च्यारि सेन चतुरंग ।
संग नामी कर दिज्जे ॥
एक सेन दिवान्न ।
एक बकसी भड़ बंके ॥
एक गोल मोहि जानि ।
आप एकन कर हंके ॥
यह भांति सेन चतुरंग के ।
अनी च्यारि करि जुट्टिये ॥
हम्मीर राव चहुवान तें ।
फते आप लहि हट्टिये ॥ ७८१ ॥

दोहरा छन्द ।

करि करि मंत्र उजीर तब । चढ़े संग ले मीर ॥
च्यारि अनी करि साहि दल । जुरे जंग सब बीर ७८२॥

त्रिभंगी छन्द ।

करि मंत्र असेसं सूर सु देसं ।
बंके बेसं सज्जायं ॥
हय गय चढ़ि वीरं फिरे सु मीरं ।
धरि धरि धीरं लज्जायं ॥
गजराजन सज्जै अग्गों रज्जै ।
वीरं गज्जै लखि लज्जै ॥
नीसान फरक्कै धीर धुरक्कै ।
हर हर बक्कै गल गज्जै ॥ ७८३ ॥

---

१ नर। २ दीवान। ३ खुट्टिए। ४ फिर।
५ निस्सान।

दोउ ओर उमग्गै समर सु रेड्डु ।
बढ़ि बढ़ि तड्डु नख खड्डु ॥
बहु तोपन छुट्टैं वीरं अहुट्टैं ।
फिरि फिरि जुट्टैं बल चड्डैं ॥
बाजे बहु बज्जैं जनु घनु गज्जैं, ।
सूर समज्जैं बल रज्जैं ॥
पद रुध्थ पतालं अरि उर सालं ।
उद्दत भालं रण सज्जैं ॥ ७८४ ॥
छुट्टैं बहु बानं सन्धि कमानं ।
अरि उर प्रानं बहु कड्डैं ॥
लग्गैं उर सेलं अरि दल पेलं ।
विग्रह झेलं बल ठड्डै ॥
किरवान दुधारं हय गय पारं ।
सूर सहारं उर फारं ॥
करि जोर कुठारं बहुत करारं ।
भिरत जुझारं रनभारं ॥ ७८५ ॥
गिद्धय पल भष्षैं रत बल चष्षैं ।
जंबू अष्षैं हिय हर्षैं ॥
.... ।
.... ॥
बहु एत्र भरावैं मिलि मिलि गावैं ।
धरि धरि धावैं मन भावैं ॥
पल अस्ति चचोरैं बसन निचोरैं ।
लुध्थि टटोरैं गुन गावैं ॥ ७८६ ॥

---

१ उमड्डैं । २ डड्डैं ।

दोहरा छंद।

यहि विधि दुहुं दल आहुरे। [1]भिरे दोउ दल ऐन ॥
रहे अहल चहुवान ह्न। खान सकल हठि सैन॥७८७॥
अबदर्ले मीर जु साहिके। परे खेत [2]मैं धाय ॥
पकरै राव हमीर को। पकरै अस पति पाय ७८८॥
ल्याऊं गहि हम्मीर को। रीझ दिज्जिये मोहि ॥
जितनो हिन्दू को वतन्न। पाऊं अब कर जोहि ७८९॥
बीस सहँस अब दल पिले। इत[3] हमीर के बीर ॥
आप आप जय स्वामि की। चाहत मंगल धीर ॥७९०॥

छन्द रसावल।

नीर पिल्ले तवे, बीर अवदुल जबे।
कहै बैन बाहं, सुनो आप साहं ॥ ७९१ ॥
गहूं राव ल्याऊं, रणत्थंभ पाऊं ॥
कमानस्सुग्रीवं, गरे डारि जीवं ॥ ७९२ ॥
लगू साह पग्गै, उठै कोपि जग्गै।
हजूरं सु बीसं, नमाये सु सीसं ॥ ७९३ ॥
गजं साज तीसं, करै जीव रीसं।
उतै राव कोपे, पिले बीर ओपे ॥ ७९४ ॥
उठी बंक मुच्छं, लगी जाय चच्छं।
मनों बीर मग्गै, अकासं सु लग्गै ॥ ७९५ ॥
मिले बीर दोऊ, करै जोर सोऊ।
भिरे गज्जि गज्जं, बजे बीर बज्जं॥ ७९६ ॥
तुरंगं तुरंगं, मचै जोर जंगं।
पयदं पयदं, बकै कोप वदं ॥ ७९७ ॥

---

१ भिरग, भिरिऊ। २ पै। ३ पसरे। ४ सज्ज।

भभक्कंत बानं, उड़ै खग्गि ज्वानं ॥
लगै तेग सीसं, उभै फांक दीसं ॥ ७९८ ॥
लगै जम्म दड्ढं करै पान गड्ढं ।
परी लुत्थि जुत्थं करी जो अकत्थं ॥ ७९९ ॥
करी जूह लोटैं[1], पबै जानि कोटै ।
तुरंगं धरन्नी, सु लट्ठै बरन्नी ॥ ८०० ॥
नचै रुंड[2] धीरं, धरन्नी सुरीरं[3] ।
सिरं हक्क मारै धरैं अत्र धारैं ॥ ८०१ ॥
उरभ्भंत अंतं मनो ग्राह तंतं ।
गहैं अंत चिल्ली[4] अकासं समिल्ली ॥ ८०२ ॥
मनों बाल मंडी उड़ावंत गुड्डी[5] ।
उड़ैं[6] श्रोंण छिच्छं, फुँवारे[7] सु अच्छं ॥ ८०३ ॥
बहैं श्रोण नद्दं, मनो नीर भद्दं ।
झरैं पग्ग हथ्थं, तरब्बूज मथ्थं ॥ ८०४ ॥
पलक्की चमक्की उठै वीर नक्की ।
कियो अट्टहासं, सुकाली प्रकासं ॥ ८०५ ॥
जहां चेत्रपालं गुहै शंभु मालं ।
भषै गिद्ध बोटी, फटै तासु फोटी ॥ ८०६ ॥
षटं सहस सूरं, परे जाग झूरं ।
गजं तीस पारे, पहारं करारे ॥ ८०७ ॥
सतं दोय बाजी, परे खेत साजी ।
तहाँ पब्ब सैनं, रहे देखि[8] नैनं ॥ ८०८ ॥

---

१ लुट्टै, कुट्टै। २ रुद्र। ३ सुधीरं। ४ चिल्ही, मिल्ही।
५ उड्डी। ६ उठै। ७ फवारे, फुहारे। ८ दिक्खि, पिष्प।

तबै सेख सीसं, नवाये सरीसं ।
हमीरं सुरावं, कहै बैन चावं ॥ ८०९ ॥
दुहूं सेन मध्ये, महिम्मा सु वध्ये ।
कहै उच्च बाचं सुनो राव साचं ॥ ८१० ॥
लखो हथ्थ मेरे, बदे बैन टेरे ।
सुनो साहि बैन, लखो अप्प नैनं ॥ ८११ ॥
खरो मैं जुसूनी, रहे क्यों जमूनी ।
गहो क्यों न अब्बं, कहै बैन तब्बं ॥ ८१२ ॥
यहीं सेस सीसं, रख्यौ मैं जु दीसं ।
करो सत्य बाचं, ततो आप साचं ॥ ८१३ ॥
तबै पातसाहं, खुरासान नाहं ।
[1]करे कोप पिल्लं तहां सेख मिल्लं ॥ ८१४ ॥
कहै साह बैनं, सुनो सर्ब [2]सैनं ।
गहै सेख ल्यावै, इतो हुक्म पावै ॥ ८१५ ॥
जु बारा हजारं, [3]मनं सब्ब भारं ।
नोबाति निसानं, अरु तेग मानं ॥ ८१६ ॥
सुने बैन ऐसे, खुरासान रेसे ।
हजारं सतीसं, [4]निवाये सु सीसं ॥ ८१७ ॥
सदंकीज बानं, पिले सेख पानं ।
तबै सेख धाये, राव कों सीस नाये ॥ ८१८ ॥

[5]दोहरा छन्द ।

करि सल्लाम हम्मीर कों । सेख लई बड़ बग्ग ॥
दुहूं सेन [6]देखत नयन । रिस करि [7]कढ्ढे खग्ग ॥ ८१९ ॥

---

१ करी कुप्पि । २ एनं । ३ मनों । ४ नमाये ।
५ दोऊ । ६ दिष्पत, पिक्खत । ७ काढ़े, कढ्ढे ।

चौपाई छन्द।

कहे साहि सुनि सद की बैनं ।
यह कुट्टम[1] कों गहो सु ऐनं ॥
जीवत पकरि याहि अब लीजै[2] ।
मन सब द्वादस सहस करीजै[3] ॥ ८२० ॥
सद्दकि[4] संग मीर खुरसानी ।
तीस सहस चढ़ि चले अमानी॥
गहन सेख महिमा के काजै ।
कुप्पिय[5] मीर खेत चढ़ि बाजै ॥ ८२१ ॥
इतै सुसेख राव पद वंदे ।
गहै तेग मन मांहि अनंदे ॥
इतै सेख सद्की उत आए ।
आप आप जय सद्द सुनाये ॥ ८२२ ॥
कहै[6] सदाकि सुनि साह सुजानं ।
ठठा भषर वासि करिये पानं ॥
कहा सेख हम्मीर सु रावं ।
उठे युद्ध कों करि जिय चावं ॥ ८२३ ॥

छप्पय छन्द।

जुटे वीर दुहु जंग ।
अंग अनभंग महाबल ॥
चढ़े जान अम्मान ।
बढ़े[7] निरसान बरद्दल ॥

---

१ कुट्टम। २ लिज्जिय। ३ कारिज्जिय, जुकिजिय।
४ सदकी। ५ कोपे। ६ सदकी सहस। ७ नीसान।

करि क़मान करि पान ।
कान लों करिखह रष्षे ॥
धरि नराच गुन राखि ।
धाव करि बेगि बरष्षे ॥
निज संग वीर सत पंच जुत ।
सेख भेखरौ यह धरिव ॥
उत ख़ुरासान षट सहस लै ।
सदकी सद हांकी करिव ॥ ८२४ ॥

तेग बेग बहु कढ़ी ।
मनो पावक्क लपट्टी ॥
करी बाज रन जुट्ट ।
कटे सिर पाव ऊपट्टी ॥
परै धरनि धर नच्चै ।
उदर कटि अंत भभक्कै ॥
चली रक्त धर धार ।
लुत्थ परि लुत्थ धधक्कै ॥
षट़ सहस खिसे पुरसान दल ।
लिय निसान बानै सुबर ॥
किए नजर राव हम्मीर के ।
फवी फते महिमा समर ॥ ८२५ ॥

आइ सेख सिर नाय ।
राव कूं बचन सुनाए ॥
धनि छत्री चहुवान ।
सरन पन जग जस छाए ॥

तेज राज धन धाम ।
  तात तिय हठ नहिं छंडै ॥
राखि धर्म्म द्रढ़ सत्य ।
  कीर्ति जस जुग जुग मंडै ॥
भरि नीर नैन माहिमा कहै ।
  अब जननी कब जन्म दे ॥
जब मिलो राव हम्मीर तुम ।
  बहुरि समैं व्है हैं कदे ॥ ८२६ ॥
कहै राव हम्मीर ।
  धीर नहि हीन उचारो ॥
सूर न करैं सनेह ।
  देह छिन भंग विचारो ॥
विछुरन मिलन संजोग ।
  आदि ऐसी चलि आइ ॥
ज्यों जीवन ज्यों मरन ।
  सकल वेंदन यह गाई ॥
कीजे न भर्म अनभंग चित ।
  मिलैं सूर के लोक सब ॥
हम तुम जु साह बहुरों तिया ।
  व्हैहि एक तन तजि सु अब ॥ ८२७ ॥
तजिय स्वारथ लोभ ।
  मोह काहू नहिं करिये ॥
देह धरे पर वान ।
  स्वामि को कारज सरिये ॥

१ जामन। २ चऊ। ३ गवरू। ४ इक। ५ मान।

को इतसौं लै जात ।
कहा उत सौं लै आयौ ॥
रहै अमर कीरत्ति ।
पाप नरदेह सु गायो ॥
सुनि सेख देखि थिर नाहिं कछु ।
तन मिट्टी मिलि जाइये ॥
का सोच मरन जीवन तणो ।
यह लाभ सुजस सौं पाइये ॥ ८२८ ॥
सुनि हमीर के वचन ।
साह पर सनमुख धाये ॥
मीर गाभरू बीर ।
आनि [1] तिन सीस नवाये ॥
अलादीन पतिसाह ।
इते सिर ऊपरि राजै ॥
तुम सिर राव हमीर ।
स्वामि आपन कुल लाजै ॥
नन तजौ नोन की सरत दोउ ।
यह तन तिल-तिल खंडिये ॥
मिलिये जु [2] भिस्त में जाय अब ।
धर्म न अपनौ छंडिये ॥ ८२९ ॥
हँसि अलावदी साह ।
शेख कौं वचन सुनाये ॥
दिल्ली छाड़ि करि सीस ।
बहुरि मुझ को नहिं नाये ॥

१ रिस। २ विहस्त।

मिलो मुझे तजि रोस ।
हुरम मैं तुम को दीनी ॥
अर गौरखपुर देश ।
देहु तुम कौं सत [1]चीन्ही ॥
मुसकाय साहि महिमा कहै ।
बचन यादि वे किज्जिये ॥
जननी न जन्म फिर आनि भुव ।
जबै मिलन गन लिज्जिये ॥ ८३० ॥

दोहरा छन्द ।

[2]जब जननी जनमै बहुरि । धरूं देह कहुँ आनि ॥
तऊ न तजौं हमीर सँग । सत्य बचन मम जानि ८३१ ॥
तब सु राव हम्मीर सुनि । कीनी मदति सु सेख ॥
हजरति महिमा साह को । बात लगावत देखि ८३२ ॥
कह हमीर यह बचन पर । गही साह सौं [3]तेग ॥
लोभ न करिये जीव का । [4]गहौ साह सों बेग ८३३ ॥

चौपाई छन्द ।

कहै मीर गभरू ये बातैं ।
[5]गहै सार नहिं करिये घातैं ॥
हुकम धनी के कौ प्रति पालौ ।
आई अदलि सीस पर चालौ ॥ ८३४ ॥
सुनि गभरू के बचन सुभाये ।
महिमाँ फूल खेत में आये ॥

---

१ चीनी । २ अब । ३ तेक । ४ सो रहै हमारी टेक ।
५ गहो सार नर कौ रच यातैं ।

सनमुख सार सम्हाय सु बट्टै ।
माया मोह त्यागि खग कट्टै ॥ ८३५ ॥

दोहरा छन्द ।

दोऊ बंधु रिसाय कैं । लई बाग इमि संग ॥
उतरि खेत में मिलि उभै। कीनौं हरष उमंग ॥ ८३६ ॥
मीर गाभरू पांय परि । हुकुम मांगि कर जोरि ॥
स्वामि काज तन खंडिये । लग्गौ तनक न खोरि[1] ॥ ८३७ ॥

हनूफाल छन्द ।

मिले बंधु दोउ धाय ।
बहु हरष कीन[2] सुभाय ॥
अब स्वामि धर्म सु धारि ।
दोउ उठे बीर हँकारि ॥ ८३८ ॥
असमान लग्गिय सीस[3] ।
मनौं उभै काल सदीस ॥
इत कोप महिमा कीन्ह ।
हम्मीर नौन सु चीन्ह ॥ ८३९ ॥
उत मीर गभरू आय ।
मिलि सेख के परि पांय ॥
कर तेग बेग समाहि ।
रहि दुहूं सेम सचाहि ॥ ८४० ॥
कम्मान लीन सु हत्थ ।
जनु सार कार सुपत्थ[4] ॥

---

१ लपकत कबहूं षोरि । २ कियउ ।
३ असमान सीस सुलग्ग । ४ धर सार धार सुपत्थ ।

धरि स्वामि काज समत्थ ।
दोउ[2] उभै जुद्ध सपत्थ ॥ ८४१ ॥
दुहुँ छंद जुद्ध सुकीन ।
मनु जुटे मल्ल नवीन ॥
तरवारि बज्जिय ताय ।
मनु लगी ग्रीषम लाय ॥ ८४२ ॥
कटि चरण सीसरू हत्थ ।
परि लुत्थ जुत्थ सु तत्थ ॥
घमसान थान सु धीर ।
धर धरनि खेलत बीर ॥ ८४३ ॥
गजराज लुट्टत भुम्मि ।
बहु तुरँग परत सु भुम्मि ॥
बिय वीर बज्जिय सार ।
तरवारि बरसहु धार ॥ ८४४ ॥
दोऊ भ्रात्र स्वामि सकाम ।
जग में किये अति नाम ॥
दोहुं बीर देखत हूर ।
चढ़ि गये मुख अति नूर ॥
दल दोय दिष्षत बीर ।
पहुंचे विहस्त गहीर ॥ ८४५ ॥

दोहरा छन्द ।

तिल तिल भे अँग दुहुन के । हनै बाजि गजराज ॥
हजरत राव हमीर के । सबै सँवारे काज ॥८४६॥

---

१ धर्म्म । २ मनु ।

मुसलमान, [1]हिंदवान को । चले सेख सिर नाय ॥
चढ़ि विमान दोऊ तहाँ । भिस्तहि पहुँचे जाय ८४७॥

छप्पय छन्द ।

कहै साह [2]मुख-बचन ।
सुनौ हम्मीर महाबल ॥
अब न गहो तुम सार ।
फिरैं हम सकल दिली दल ॥
तुम्हैं माफ तकसीर ।
राज रणथंभ करो थिर ॥
हम तुम बीच कुरान ।
मुहिम नहिं करो दिलीसुर ॥
परगनें पांच दीनें अवर ।
रणतभँवर भुगतो सदा ॥
जब लग सुराज हमरौ रहै ।
तुम सु राज राजौ तदा ॥ ८४८ ॥

चौपाई छन्द ।

कहै राव हम्मीर सु बानी ।
सुनि दिल्लीस सत्य जिय जानी ॥
जाकी अदलि होय किमि मिट्टै ।
नर तैं होनहार किम घट्टै ॥ ८४९ ॥
तुम्हरौ दयो राज किन पायौ ।
तुम्ह को राज कहो किन घायो ॥
बेर बेर कह [3]मुखै उचारौ ।
कोटि स्यानपन क्यौं न विचारौ ॥ ८५० ॥

---

१ हिंदवान । २ वच्च, वैन । ३ मुक्ख ।

कीरति अमर अमर नहिं कोई
दुर्जोधन दसकंध सु जोई ॥
काको गढ़ काकी यह दिल्ली ।
हरि की दई हमैं तुम मिल्ली ॥ ८५१ ॥
हम तुम अंस एक उपजाये ।
आदि पदम रिषि अंग उपाये ॥
देव दोष उर धर भए न्यारे ।
हम हिन्दु तुम यवन हँकारे ॥ ८५२ ॥
तजिये भोग भूमि के सबही ।
चलिये सुरपुर बसिये अबही ॥
संग हमारो पहुच्यौ जाई ।
हम तुम रहे सबहिं पहुंचाई ॥ ८५३ ॥
गहो हथ्थ्यार राज सब छंडौ ।
राषो जस तन षंडि विहंडौ ॥
अबै चालि सुरपुर सुष मंडौ ।
मृत्यु लोक के भोग सु छंडौ ॥ ८५४ ॥

छन्द त्रोटक ।

यह बात कही चहुवान तबै ।
सुनि साह सबै भर पेलि जबै ॥
करि साज सबै रण मंडि महा ।
तिन भारथ पारथ जुद्ध सुहा ॥ ८५५ ॥
दल संग चढ़े सब सूर असी ।
सब तोप सु बान कमान कसी ॥
गजराज अनेक बनाय धनै ।
मनौ पावस बद्दल मेघ तनै ॥ ८५६ ॥

हय कंद अमंद सु पौन मनौ ।
बहु दामनि सार चमंकि भनौ ॥
घन गौर सदायन देखतयं ।
ध्वज बैरष मंडल लूरतयं ॥ ८५७ ॥

बिरदावत वृंद कविंद घनै ।
मनौ चत्रक मोर अनन्द बनै ॥
बगपंति सुदंति अनन्त रजे ।
धुरवा किर सुंड छुटे भरजे ॥ ८५८ ॥

वह[2] धार अपार जुधार वही ।
घन घोर सु नौवति नाद वही[3] ॥
कर सोर समोर नकीव चलै ।
यहि भाँति दोउ[4] दिसि [5]वीर मिलै ॥ ८५९ ॥

करिये हंकार सुवीर चलै ।
.... ॥
कहि मीर सिकंदर नेम कियं ।
सिर नाय सुभाय हुकुम्म लियं ॥ ८६० ॥

पह लैं पुर जाय सु वीर भगं ।
रणथंभ कहा हजरत्ति अगं ॥
तुम सेर कह्यो वह आप जथा ।
अब देखहु मोर सुहाथ जथा ॥ ८६१ ॥

सु जमाति षधार लई सबही ।
अरु मीर सिकंदर [6]आय सही ॥

---

१ घन घोर। २ वह सार अपार सु धार हुई। ३ जुई।
४ दल। ५ बोर। ६ पठई।

करि कोप सिकंदर मीर चढ़े ।
    तब राव हमीर के भील कढ़े ॥ ८६२ ॥
तब भोज कही अब मोहि कहौ । ।
    इतने अब हत्थ हमार लहौ ॥
तब राव कही रणथम्भ अगै ।
    दुइ जैत अगैं सिर भील तगै ॥ ८६३ ॥
अर जैत सरन्नि सुराखि तबै ।
    करि कौन करै तुम्हरी जु अबै ॥
तुम संग रतन्न चीतोर गढ़ं ।
    चढ़ि जाहु हमार जु काज बढ़ं । ८६४ ॥
सुनि भोज इसे कहि बैन तबै ।
    यह सीस तुम्हार [1]निमित्त अबै ॥
रणथंभहि हेत जु सीस दिवै ।
    अब और कहा बिन राव जिवै ॥ ८६५ ॥
यह औसर फेरि बनै कबही ।
    हजरत्ति हमीर मिले जबही ॥
कहि बत्त इती जु सलाम करी ।
    अपनी सब लीन जमीन खरी ॥ ८६६ ॥
सब भील कसे हथियार जबै ।
    निकसे कढ़ि भोज अमान तबै ॥
कमठा कर तीर सम्हार उठे ।
    उत मीर सिकंदर आय [2]जुटे ॥ ८६७ ॥
बाजि घोर निसान [3]प्रमान मिले ।
    दल कोप करे बहु तोप चले ॥

---

१ निभंत । २ उटे । ३ अमान ।

घमसान जुबान कियो तबहीं ।
दुहु सैन सुऐन बनैं जबहीं ॥ ८६८ ॥
गजराज हरौल करे बलयं ।
उत सार अपार कढ़े दलयं ॥
सजि भलि अनी सुघनी हलकौ ।
कासि गातिय कोप कियो बलको ॥ ८६९ ॥
कमठा कर धार अपार बलं ।
तब भोज मिल्यो तँह साह दलं ॥
नट कूदत जानि सु ढोल सुरं ।
बहै तीर अमीर सुजानि छुरं ॥ ८७०
करि कोप तबै गजदंत कढ़े ।
मुरि मूरिय धूरि उपारि बढ़े ॥
सब भीलन मत्त सुकोप कियं ।
जनु भाल बली मुख लंक लियं ॥ ८७१ ॥
जनु मार अपार कटार चलैं ।
बहु मीर अमीर रु भील मिलैं ॥
हज्जरत्ति सराहत भोज बलं ।
जनु मानव रिच्छ भिरत्त दलं ॥ ८७२ ॥
दोंउ भोज सिकंदर भील जुटे ।
मुख बानिय मीर अमीर रटे ॥
जब भोज कहै करिवार तुहीं ।
कहै मीर सिकंदर बूढ़ तुहीं ॥ ८७३ ॥
अब तो पर वार कहा करिये ।
सब लोक अलोक महा भरिये ॥

---

१ कागाति ।

तब भोज सकोप कियो रण में ।
करि कोप कटार दियो तन में ॥ ८७४ ॥
तन कंगल भेदि धरन्नि पऱ्यो ।
किरवान चलाय समीर हऱ्यो ॥
सिर भोज पऱ्यो धरनी[1] तल में ।
धर धावत[2] रुंड लरै बल में ॥ ८७५ ॥
उत मीर सिकंदर भूमि परे[3] ।
वर हूर[4] सुहूर सुआनि परे ॥
परि खेत सधार अपार सबै ।
बिन सीस पराक्रम भोज अबै ॥ ८७६ ॥
भजि साह अनी तजि खेत तबै ।
परि भोज समाज सबीर सबै ॥
कसमीर अमीर सहस्र पची ।
सुमिली[5] धर धार सची सु अची ॥ ८७७ ॥
तहाँ भोज ससाथि हजार भले ।
वरि बाल सबै सुर लोक चलै ॥ ८७८ ॥

दोहरा छन्द ।

परे भोज सँग भील भर । सहस दोइ इक ठौर ॥
सहस पचीस कसमीर के । अर[6] पँधार भर मौर ॥ ८७९ ॥
सहस तीस पंधार के । और सिकंदर मीर ॥
अली सयद के संग भट । परे मीर दस भीर ॥ ८८० ॥

---

१ धरनि थ्थल । २ भुम्मि लरै चल में । ३ गिरे । ४ हूरन ।
५ उलटी भरै सेन दिलीस बची । ६ और ।

भजी फौज पतसाह की। विकल सकल उमराव ॥
दोय सहस भट भोज सँग। रहे खेत करि घाव ॥८८१॥

चौपाई छन्द।

राव हमीर भोज ढिग आये।
देखि सु भोज नैन जल छाये[1] ॥
तुम सब अमर भए कलि माहीं।
स्वामि काम सब देह सराहीं ॥ ८८२ ॥
जो न सिकंदर साह जु आये।
राव हमीर के सनमुख धाये ॥
देखि साह आपन दल भज्जै।
हजरति देखि हमीरह लज्जै ॥ ८८३ ॥
राव हमीर खेत महि ठाढ़े।
हजरति अंग कोप अति बाढ़े ॥
कहै साह तब कोप सु बैनं।
फिरे सकल नीचे कर नैनं ॥ ८८४ ॥
सबसु भूमि भोग कर नीके।
जंग समय लालच कर जीके ॥
भगे जात जीवत मोहि अबहीं।
गई बात[2] बीरन की सबहीं ॥ ८८५ ॥
सुन ये बैन वीर खिसयाने।
राव हमीर युद्ध हिय ठाने ॥
जैन सिकंदर साह अमानौ।
अरु पंधार भीरु सब जानौ ॥ ८८६ ॥

---

१ देख भोज भरि दृग जल छाए। २ बूड़ि।

यह हम्मीर राव चहुआनं ।
जुरे जुद्ध मनु काल समानं ॥
तुपक तोप चद्दर सब दग्गिय ।
कर कृपान चहुवान सु जग्गिय ॥ ८८७ ॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

परे दोय हज्जार भीलं समत्थं ।
तहाँ च्यारि ओरं गिरे खेत सत्थं॥
परे कासमीरं सहस्त्रं पचीसं ।
अली सेर मीरं परे संग दीसं ॥ ८८८ ॥
तबै साह कोपं किये बैन रीसं ।
फिरे वीर लज्जा समेतं सुदीसं ॥
तबै राव हम्मीर कोपे सुजानं ।
चले[1] संग चहुवान बलवान रानं॥ ८८९ ॥
लिये सेन षंधार दो लक्ख जामी ।
जबै जैन साहं सिकंदर सु नामी ॥
इतै राव हम्मीर कम्मान लीनी ।
मनौं पत्थ भारत्थ सारत्थ कीनी ॥ ८९० ॥
लगैं तीर अंगं हुवै पार गज्जैं ।
परैं पील भुम्मि[2] सु घुम्मैं गरज्जैं ॥
कहूँ पक्खरं बाजि फूटैं सरीरं ।
छुटै प्राणवानं सु लागंत तीरं ॥ ८९१ ॥
जुरे जंग मीरं अमीरं सु चौजं ।
इतै राव हम्मीर उतसाह फौजं ॥

---

१ चढ़े । २ भूमै सु चक्कार भज्जै !

चढ़े[1] राव के रावतं जो अमानै ।
बनै कंगलं अंग जंगं सु ठानै ॥ ८९२ ॥
करैं रंग के अंग बानै अनेकं ।
घनै केसरं साज लीनैं सु तेकं ॥
किते बीर तोरा तवल्लं बनाये ।
घनै नेत बंधं गजं गाह लाये ॥ ८९३ ॥
किते मौर बंधं सजे केसरानं ।
किते वीर बांकें चढ़े चाहुवानं ॥
पढ़ैं पाहि[2] बंदी जनं वृंद भारे ।
मनौ राति जोरंत टूटंत तारे ॥ ८९४ ॥
उतै साह कीनै घनै गज्ज अग्गैं ।
मनौ पाय चल्लै पहारं सु मग्गैं ॥
तिन्हैं उप्परै साह के बीर धाये ।
गही तेग हथ्थं उरं कोप छाये ॥ ८९५ ॥
इतै राव चहुवान के बीर कोपे ।
मनो आजही साह के बीर लोपे ॥
गजै सो हमीरं लखें खेत राजैं ।
सबै सूर बीरं निस्सानं सु बाजैं ॥ ८९६ ॥
किते चाहुवानं पिले डील पीलं ।
उठावंत मारंत पारंत डीलं ॥
कहूं सुंडि पै तेग बाहंत ऐसी ।
मनो रंभ षंभं कटै तेग जैसी ॥ ८९७ ॥
कटैं दन्त मातंग भाजंत[3] जेते ।
गहैं पुच्छ सुड्डं पटक्कन्त केते ॥

---

१ वृढ़े । २ लाहि । ३ मज्जन्त ।

परैं पील पब्बय मनौ खेत भारी ।
बहैं रत्त घावं मनों घाव कारी ॥ ८९८ ॥
तिहीं काल कविराज उप्पम विचारी ।
बहैं स्याम पब्बै सु गेरू पनारी ॥
किते बाजि राजं पटक्कन्त भूमैं ।
भये अंग भंगं खरे घाव घूमैं ॥ ८९९ ॥
कढ़ी तेग बेगं लपट्टं सु जाग्गौ ।
मनौ ग्रीषमं लाय लग्गी सुमानौ॥
जुटे बीस बीरं गहीरं सु गज्जैं ।
भजे कायरं[1] खेत छंडे सु लज्जैं ॥ ९०० ॥
कटे सीस बाहू कहूं पाव ऐसे ।
बहैं तेग वेगं मनौ डार जैसैं ॥
लगे कन्ध ग्रीवा तबै सीस टूटे[2] ।
परैं सीस धरनी तबै रूंड झूटै[3] ॥ ९०१ ॥
घने सीस तर्बूज से भुम्मि डारैं ।
लरैं रूंड खेतं सिरं हक्क[4] मारैं ॥
बहैं बान किरवान[5] बज्जन्त सारैं ।
मनों काठ काटंत[6] कट्ठ कुहारैं ॥ ९०२ ॥
बहैं सील अंगं परैं पार होई ।
मनौ रूंड मैं नाग लपटंत सोई ॥
कटारी लगैं अंग दीसंत पारं ।
मनौ नारि मुग्धा कढ्यौ पानि वारं ९०३ ॥

---

१ कातरं। २ टुट्टटै। ३ झुट्टे। ४ हांक।

५ कम्मान। ६ कठ कट्टंत।

छुरी धार सूरं करैं जोर ऐसैं　।
मनौ सर्पनी पुच्छ दीखंत जैसैं ॥
लगै ज़ोर सों यों विषाणं जवानं　।
छुवै अंग पारं जुटै जोर वानं ॥ ९०४ ॥
भये लथ्थ बथ्थं दुहूँ सेन ऐसें　।
मनो यौं अषारे भिरे मल्ल जैसें ॥
पछारैं उखारैं भुजा सीस सूरं　।
उछारैं[1] हकारैं उठै धीर नूरं ॥ ९०५ ॥
मची मास मेदं धरा कीच भारी　।
चली श्रुष्टि खेतं नदी[2] मैं अकारी ॥
बनै कूल पीलं सुढीलं सु बज्जी　।
बहै[3] बीचि लोहू जलं धार गज्जी॥ ९०६ ॥
रथं चक्र आवर्त्त सौ भौंर मानौं　।
घनं षंस बेला कुलं रूप मानौं ॥
नरौ ग्राह पावं करं सर्प जैसे　।
बनी अंगुरी मीन झींगा सु तैसै॥ ९०७ ॥
बहै सीस इन्दीवरं जानि फूलै[4]　।
खुले नैन यों चंचरीकं सु भूलै॥
सिवालं सु केसं सु वेसं विराजैं　।
बनै घाट बीसों खरे सूर गाजैं ॥ ९०८ ॥
भरैं जुग्गनी खेप्परं सूर लोही　।
मनौ ग्राम बामा पनीहार सोही॥
करै केलि भैरव हरं संग काली　।
मनौं न्हात वैसाष कार्त्तिक वाली॥९०९॥

---

[1] उछलै, हकलै।　[2] वह।　[3] बिच्चि।　[4] फुलै।

इसे घाट औ घाट[1] किन्ने हमीरं ।
डरैं कायरं[2] साह के मीर पीरं ॥
भजी साह सैना सबै लाज डारी ।
भिरे खेत चहुवान गज्जन्त भारी ॥ ९१० ॥
किते गिद्ध जम्बू करालं सु चिल्ली ।
बंगं[3] हंस केते विहंगं सु मिल्ली ॥
परे खेत साहं सिकंदर सु नामी ।
सवा लक्ख खंधार के मीर बामी ॥ ९११ ॥
गिरे खेत हथ्थी सतं पौंन ऐसे ।
मनौ पर्वतं[4] अंग दीखंत जैसे ॥
कसे साठि[5] हौदा परे खेत माहीं ।
जरावं जरं कंचनं के सुमाही ॥ ९१२ ॥
परे डंबरं सौ कई गज्जराजं ।
कई प्राण हीनं कई मो समाजं[6]॥
परे सत्त पंचं निसानन्न वारे ।
किते गज्जराजं परे खेत भारे ॥ ९१३ ॥
सवा लक्ख वाजी परे जे अमानं ।
परे खेत साहो सिकंदर सुजानं॥
तिनै साह लक्खं पँधारं सवायं ।
परे एक लक्खं दिलीसं सुपायं॥ ९१४ ॥
इदं इक्क मीरं परे खेत नामी ।
कहूँ नाम ताके परे खेत वामी ॥
परे दूसरे मीर सिर खान भारी ।
रहे खेत महरम्म खान सुधारी ॥ ९१५ ॥

१ घट्ट । २ कातरं । ३ वकं । ४ पब्बयं । ५ साठ । ६ भोजमाजं ।

परे जौमजादेन से मीर नामी ।
मोहोबत मुदफ्फर परे इक ठामी॥
परे नूर मीरं अफरेस धीरं ।
बली इक निजाम दीनं सु पीरं॥ ६१६॥
परे मीर एले दुहूं खेत सूरं[1] ।
बहैं नीर ज्यों रत्त बाहंत कूरं॥
नची जुग्गनी और भैरव सु नच्चैं ।
भखैं गिद्ध आमिष्ष जंबू सु रच्चैं॥ ६१७॥
थके सूर रथ्थ सु जामं सवायं ।
महावीर घायं स घूमंत तायं[2] ॥
बरैं अच्छरी सूर बीरं सु अच्छे ।
खुले मोच्च[3] द्वारं प्रवेसंत गच्छे॥ ६१८॥
भयो मंडलं कुंडलं भान नद्दं ।
कढ़े सूर बीरं सु धीरं उपद्दं ॥
महा रौद्र भौ खेत देखंत जानौ[4] ।
कियो अद्भुतं देव सो जुद्ध मानौ॥ ६१९॥
परे खेत खंधार मीरं सु राते ।
इके लक्ख हज्जार पंचास जाते॥
इतै सूर हम्मीर के सहस चारं ।
सु तौ वीर धीरं खुले मोच्च द्वारं॥ ६२०॥

दोहरा छन्द।

तब हमीर हर ध्यान करि। हर हर हर उच्चारि॥
गज निज सनमुख पेलि कैं[5]। जुरे[6] साह सों रारि॥ ६२१॥

---

१ सूरं, पूरं। २ आय। ३ मोच्छ।
४ जानों। ५ सम्मुख पिछि कैं। ६ जुरिग जुरेउ।

त्रोटक छन्द ।

गजराज हमीर सु पेलि वरं
मुख तैं उचरंत सु भाव हरं ।
[1]किरवान कढ़ी बलवान हथं ।
सनमुक्ख सु साहि सु [2]बोलि जथं ॥ १२२ ॥
सुनिये सु अलावदि बैन अयं ।
करि द्वन्द सु उद्ध सु जुद्ध धयं ॥
सब सेन कहा करिहै सु मुधं ।
हम [3]आपन [4]इक्क करैं सु जुधं ॥ १२३ ॥
दुहु ओर उछाह अथाह सजे ।
हजरत्ति सु कोप [5]अकथ्थ रजे ॥
सनमुक्ख हमीर सु [6]आय जुटे ।
सब सथ्थ जथारथ [7]बग हटे ॥ १२४ ॥
तिहिं [8]खेत [9]खरे चहुवान नरं ।
पतिसाह सबै दल [10]भंजि भरं ॥
रहि मीर उजीर कछूक तबै ।
चहुवानन के दल देखि जबै ॥ १२५ ॥
पतिसाह कही यह कौन बनी ।
सब सैन बड़ी चहुवान तनी ॥
तब मंत्र वजीर सु एमि कह्यौ ।
तुम मित्र सदा गुन जानि लह्यौ ॥ १२६ ॥

---

१ कम्मान चढ़ी । २ बुल्लि गयं । ३ अप्पन ।
४ एक । ५ अगत्थ । ६ आनि ।
७ रेख, देख । ८ अत्त, अत्थ, अर्थ । ९ अरे । १० भाजि ।

अब विग्रह छाडि सु संधि करो ।
चहुवानन सों हित जानि डरो ॥
अपराध हमैं सब दूरि करौ ।
तुम होहु अभै हम कूच धरौ ॥ १२७ ॥

नृप सों चर जाय कही तबही ।
सुनि राव यहै मुख बत्त कही ॥
अब खेत चढ़े कछु संधि नहीं ।
यह बत्त हमारि सुजानि सही ॥ १२८ ॥

रिपु तैं विनती सुइ कातरता ।
अब वृत्त कहै छल चातुरता ॥
अब जाहु यहां हम सेन सजी ।
बिन साह को जुद्ध करंत लजी ॥ १२९ ॥

वचनिका ।

अब राव हम्मीर दूत को नीति सहित उत्तर दियो अरु युद्ध को उच्छाह कियो आपणां उमरावों सौं कही आयुध छतीस मों च्यारि आवधां सूं युद्ध कीजे अंर जग मैं अमर जस लीजै १३० ॥ तोप, बाण, चादरि, हथ्नालि, जंबूर, बंदूक, तमंचा, कमान, सेल इन नै त्यागौ । अरु आयुधं चार लीजै। तरवारि, छुरी, कटारी, विषाण, मल्ल युद्ध करि हजरति नै हाथ दिखावो तौ सायुज्य मुक्ति पावो १३१ ॥

---

१ तबही । २ आवध ।

पातसाह की जान बखसीस करो और अप्छरी बरौ यह हम्मीर की आज्ञा माथै धरि राव हम्मीर के उमराव केसरिया साज बनाय अरु सेहरा बाँधि पातसाह की फौज परि हाँकौ कियो ॥ ९३२ ॥

त्रोटक छन्द ।

कछु जंत्र न तोपन कंत नहीं ।
तजि चापन चक्रन बान जिहीं ॥
[1]किरवान लई करि बाजि चढ़े ।
चहुवान अमान सुखेत चढ़े ॥ ९३३ ॥
उतमीर वजीर रु साहि निजं ।
करि कोप तबै पतिसाह सजं ॥
तरवारि अपार दुधार बहै ।
सब साहि सु सैन समूह दहै ॥ ९३४ ॥
कटि ग्रीव भुजा धर सों [4]विफरे ।
मनु काटि करे रस कृत्त हरे ॥
उहि मथ्थ परे धर रुंड उठै ।
चहुवान धरासह धार उठै ॥ ९३५ ॥
सिर मारत हाक परे धर मैं ।
धर जुज्झत जुद्ध करै अरमैं ॥
कर जोर कटार सु अंग बहैं ।
बहु खंजर पंजर देह दहैं ॥ ९३६ ॥
बहु [5]रंचक मुष्ट कबथ्थ परैं ।
मल जुद्ध समुद्ध सुबीर करैं ॥

---

१ हुल्लौ । २ रुकंत । ३ कम्मान ।
४ बिहरे । ५ रंजक । ६ भरै ।

पचरंग अनगिय खेत बन्यौ ।
'बकसी तब साह सों बैन भन्यौ ॥ ९३७ ॥
भयभीत सु साह की फौज भगी ।
घमसान मसान सु ज्योति जगी ॥
परियो बकसी लखि नैन तबै ।
उलटो गज कीन सु साह जबै ॥ ९३८ ॥
इक संग [2]उजीर न और नरं ।
फिरि [3]रोकिय साह अनंत भरं ॥
चहुवान धरम्म सु जानि कहै ।
यह मारत साहि सु पाप अहै ॥ ९३९ ॥
अभिषेक लिलाट कियो इन कै ।
महि ईस कहावत है तिन कै ॥
धरि अग्र सु साह को पील जबै ।
जहँ राव हमीर सु लाये पगै ॥ ९४० ॥
अब साहि सु राव कही तबहीं ।
तुम जाहु दिली न डरो अबहीं ॥
लखि साह को लोग मुरक्कि चल्यौ ।
नृप आप हमीर सु खेत भिल्यौ ॥ ९४१ ॥

बचनिका।

राव हम्मीर का उमरावाँ तरवारि कटारियाँ सों जुद्ध कियो पातसाह का अमीर उमरावाँ सूं मल्ल जुद्ध कऱ्यो तदि पातसाह की फौज विकल हो कर पातस्याह तें छोड़ छोड़ भागी हम्मीर की रावताँ पात-

१ बकसी नृप साह कौ आप हन्यो। २ बजीर।
३ रुक्किय।

स्याह ने हाथी सुद्धां घेरि ल्याया ॥ ९४२ ॥ हम्मीर कै आगे ल्याय खड़ो करयो । राव हम्मीर पातस्याह ने देखि आपणाँ राँवता सों कही याने छोड़ देओ वह नै पृथ्वीस कहैं छैं या अदण्ड है ॥ ९४३ ॥ यह सुनि पातिसाह ने छोड़ [1]दियो । पातसाह ने उह की फौजं मैं पहुँचाय दियो । पतिसाह वहाँ से खेत छोड़ कूँच [2]कियो ॥ ९४४ ॥

दोहरा छन्द ।

छाड़ि खेत पतसाह तब । [3]परे कोस द्वै जाय ॥
हसम सकल चहुवान नें । [4]लीनो तबै छिनाय॥९४५॥
लिए साह नीसान तब । बाना जिते बनाय ॥
और सम्हारि सु खेत को । घायल सोधि उठाय ९४६
सब के जतन कराय कै । देस काल सम आय ॥
राव जीति गढ़ को चले । हर्ष न हृदय समाय ९४७॥
बिन जाने नृप हर्ष में । गये [5]भूलि यह बात ॥
साह निसान सु [6]अग्र करि । चले भवन हर्षात ९४८॥

पद्धरी छन्द ।

भगि साह सेन जुत उलट आय ।
तजि बिविध भाँति [7]बाना जु ताहि ॥
सब साह हसम लीनी छिनाय ।
नृप सकल खेत सोधो कराय ॥ ९४९ ॥
बजि दुंदुभि जय जय धुनि सु आय ।
सब घायल नृप लीने [8]उठाय ॥

---

१ दीधो । २ कीधो । ३ परिय । ४ लिन्नो ।
५ भुलि । ६ अग्ग । ७ नाना । ८ उचाय ।

करि[१]अग्ग साह नीसान मुल्लि ।
लखि नृप हसम हर कह्यो फुल्लि ॥ ९५० ॥
सब राज लोक तिय जिती जानि ।
सब सार परस्पर हेरी[२] आनि ॥
चहुवान दुग्ग किन्नो प्रवेस ।
यह सुनिय राव तिय मरन सेस ॥ ९५१ ॥
चहुवान आनि देख्यौ सु गेह ।
शिव वचन यादि कीनो सु येह ॥
नृप सकल संग को सीख दीन ।
रावत्त राण मंत्री प्रवीन ॥ ९५२ ॥
तुम जाहु जहाँ रतनेस आय ।
किज्जे न सोच नृपता बनाय ॥
चहुवान राय हम्मीर आय ।
हर मँदिर महँ प्रविसंत जाय ॥ ९५३ ॥
करि पूजन भ[४]व गणपति मनाय ।
बहु धूप दीप आरति बनाय ॥
हो गिरजा गणपति सु मम देव ।
तुम जानत हो मम सकल भेव ॥ ९५४ ॥
अपवर्ग देहु तुम नाथ सिद्धि ।
तन छत्र धर्म्म[५] दीजे प्रसिद्धि ॥
करि ध्यान शंभु निज सीस हथ्थ[६] ।
नृप तोरि कमल ज्यों किय अकथ्थ ॥ ९५५ ॥
यह सुनिय साह निज श्रवण बात ।
चलि हर मँदिर को साह आत ॥

अग्र । २ हर्ना । ३ पानि । ४ बहु । ५ दिग्जिय । ६ मत्थ ।

जलधार नैन लखि राव कम्मे
कहि साहि मोहि दीनो न मर्म ॥ ९५६ ॥
कछु दियो हमैं उपदेश नाहिं ।
तुम चले आप बैकुंठ माहिं ॥
तुम अभय बाँह दीनी जु शेष ।
जुग जुग नाम राख्यौ विशेष ॥ ९५७ ॥
अरू महा दानि तुम भये भूप ।
इच्छा सदान दीने अनूप ॥
जगदेव मोरध्वज तैं विशेष ।
जस लयो लोक तुम रक्खि सेख ॥ ९५८ ॥

वचनिका ।

सो राव हम्मीर व्यौरा सुन्यो और शिव के वचन यादि कर्यौ ॥ ९५९ ॥ और यह निश्चय जानि कि वर्ष चौदह पूरे भये गढ़ की अवध पूर्णाई हुई तातैं यह शरीर रक्खनो उपहास्य है:और छिन भंग शरीर को राखनो आछ्यौ नहीं ॥ ९६० ॥ यह विचारि शिव के मन्दिर गये और आप एक सेवग कनै राखि शिव को षोड़स प्रकार पूजन कर्यौ और यह वर्दान माँग्यौ कि हे शिव तुम ईश्वर हो ॥ ९६१ ॥ सेवक हृदय के जानन हारे हो और सब के प्रेरक हो तातैं हमारी यह प्रार्थना है मुक्ति दीजे तो सायुज्ज्य दीजै। जन्म २ विषैं छत्री कुलमैं जन्म पाऊँ यह कहि कैं खग्ग आप हाथ ले कै सीस उतार्यौ शिव पिंडी पै चढ़ाय दियो तब सदा शिव जी प्रसन्न होय के आशीर्वाद दियो तिहारे कुल की जय होय ॥ ९६२ ॥

दोहरा छन्द।

साह कहंत हम्मीर सों। लेहु मोहि अब संग।
धर्म रीति जानो सु तुम। सूर उदार अभंग ॥ ९६३ ॥

पद्धरी छन्द।

मुसकाय सीस बोल्यो सु बानि।
तुम करो साह मम बचन कानि ॥
हम तुम सु एक जानो न और।
तजि मोह देह त्यागो सु तौर ॥ ९६४ ॥

लीजे सुझाँफ सागर सु जाय।
तब मिलै आप अप्पै सु आय ॥
यह कहिस सीस सुख मूंदि होत।
तब साहि ग्यान हृद भो उदोत ॥ ९६५ ॥

उठि साह सीस बंदन सु कीन।
करि प्रणाम संभु को ध्यान लीन ॥
हजरत्त आय डेरै सु तब्ब।
उज्जीर मीर बोले सु सब्ब ॥ ९६६ ॥

तुम जाहु सकल दिल्ली सथान।
अलवृतहि राज दीजे सु आन ॥
नाहिं करो मोर अज्ञा सु भंग।
सेवक्क धर्म्म यह है अभंग ॥ ९६७ ॥

दोहरा छन्द।

आयसु पाय सु साह को। चढे सकल सजि सैन ॥
महरम खाँ उज्जीर तब। आये दिल्ली सु ऐन ॥ ९६८ ॥

दयो राज सिर छत्र धरि । अलावृत्त तिहि काल ॥
घर घर अति आनन्द जुत । एह विधि प्रजा सुपाल॥९६९॥
रणतभँवर कै खेत को । कीनो सकल प्रमान॥
प्रथम हने रणधीर ने । बहुरि सेन परिवार॥९७०॥
दोय लक्ख रूमीं परे । दोऊ कुँवर उदार ॥
सेभ आरबी की जिती । हनी जु असी हजार॥९७१॥
हने मीर द्वै सन सतरि । और सिकंदर साह ॥
अट्ठ लक्ख पंधार के । हने मीर निर्ज आह ॥९७२॥
सवा सहस गजराज परि । दो लष बाजि प्रसिद्ध ॥
द्वादस लख सेना प्रबल । हनी हमीर सुसिद्ध॥९७३॥
मस्तक राव हमीर को । किय सुमेर हर आप॥
मुक्ति द्वार सबई खुले । बिया बर्ष सुथाप ॥९७४॥

छप्पय छन्द ।

विदा कीन उज्जीर ।
कूँच दिल्ली को कीनो ॥
तब सुसाह ताजि संग ।
बचन हजरत को लीनो ॥
सेतबंद पर जाय ।
पूजि रामेश्वर नीकै ॥
परे सिन्धु में जाय ।
करे मन भाते जी कै ॥
उर्वसी साह हम्मीर नृप ।
सेख मीर सब नाक गय ॥
करि लोक पाल आदर अखिल ।
जय जय जय हम्मीर किय ॥ ९७५ ॥

मिले स्वर्ग में जाय ।
साह हम्मीर हरष्षे ॥
महिमा मीर ऽरुबाल ।
बिबिध मिलि सुमन बरष्षे॥
जय जय जय हम्मीर ।
सकल देवन मुख गाये ॥
लोक अमर कीरत्ति ।
मुक्ति परलोक सुपाये ॥
माणिक राव चहुवान कुल ।
दैन खङ्ग दोऊ धरत ॥
कहि जोधराज यह बंश में ।
ननकारी नाहिन करत ॥ ९७६ ॥

दोहरा छन्द ।

भनत राव हम्मीर जस। प्रीति सहित नृप चंद ॥
मनसा वाचा कर्मना। हरे जोध के द्वंद ॥ ९७७ ॥
चन्द्र नाग बसु पंच गिनि। सम्बत माधव मास ॥
शुक्ल सुत्रतिया जीव जुत। ता दिन ग्रन्थ प्रकास ॥९७८॥
नृपति नीवागढ प्रगट। चन्द्रभान चहुवान ॥
धर्म दाम्म अरु भेद जुत। दंडहि करत खलान ॥९७९॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज–राजराजेन्द्र–श्रीमदऽखिल–चाहुवान कुल-तिलक नीमराणा–अधिपति श्रीमहाराजा चन्द्रभान जी–देवाज्ञया कवि जोधराज विरचितं यवनेश अलावद्दीन प्रति हम्मीर जुद्धं समाप्तम् ॥